वागड़ के जैन श्वेताम्बर मंदिर

(डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा जिले के जैन मंदिर)

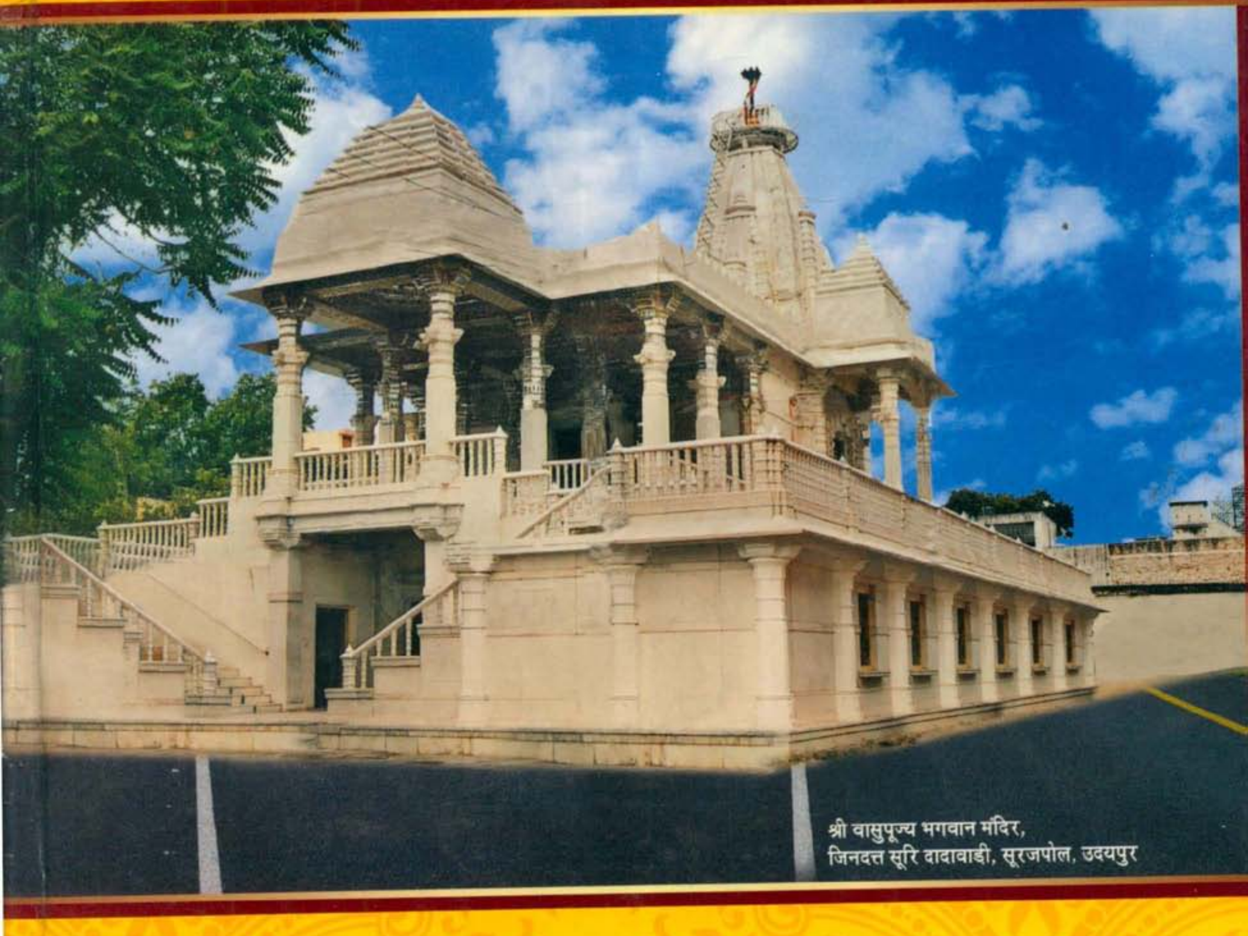

श्री वासुपूज्य भगवान मंदिर,
जिनदत्त सूरि दादावाड़ी, सूरजपोल, उदयपुर

लेखक :
मोहनलाल बोल्या

श्री आदीश्वर भगवान मंदिर, माणक चौक, डूंगरपुर

सौजन्य : श्री जैन श्वेताम्बर बीसा हुमड़ संघ, डूंगरपुर

।। ऊँ ह्रीं श्री अर्हम् श्री आदिनाथायः नमः ।।

लेखन, प्रकाशन, संकलन व संपादन

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी, बेदला–बड़गांव लिंक रोड़,
उदयपुर–313011 (राज.)
फोन : 0294–2450253, मोबाइल : 09461384906
वेबसाईट : www.mewarjaintemple.com

श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) तीर्थ
मेवाड़ (उदयपुर)

प्रकाशक

श्री जिन शासन आराधना ट्रस्ट, मुम्बई

(प.पू. आचार्य देव श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. आदि
विशाल परिवार का वि.सं. 2070 का पालीताणा
में यशस्वी चातुर्मास में प्राप्त ज्ञान निधि की राशि से)

लेखक, संकलक एवं मुख्य संपादक

मोहनलाल बोल्या

सह–सम्पादक

हरकलाल पामेचा

मु.पो. देलवाड़ा,
जिला राजसमन्द (राज.)
फोन : 02958-289067
मो. 94685 79070

सहयोग राशि :

मय कोरियर चार्ज - रुपये 250/-

सर्वाधिकार

लेखक के अधीन

संस्करण - 2014

डिजाईनिंग

वेव ग्राफिक्स, उदयपुर
उदयपुर, मो. 98292 44710

मुद्रक :
परम ग्राफीक्स - मुंबई.
98920 45229 / 92222 44223

श्री सरस्वतीदेवी (जैन परंपरा), सेवाडी

समर्पण

सभी आचार्य प्रवर के जीवन को पढ़ा, देखा,
उनकी सौम्य मूर्ति को यह ग्रंथ समर्पित...

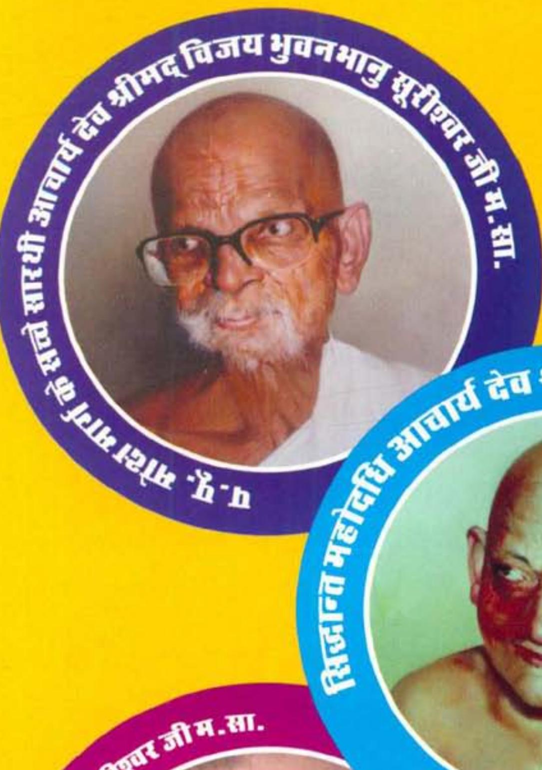

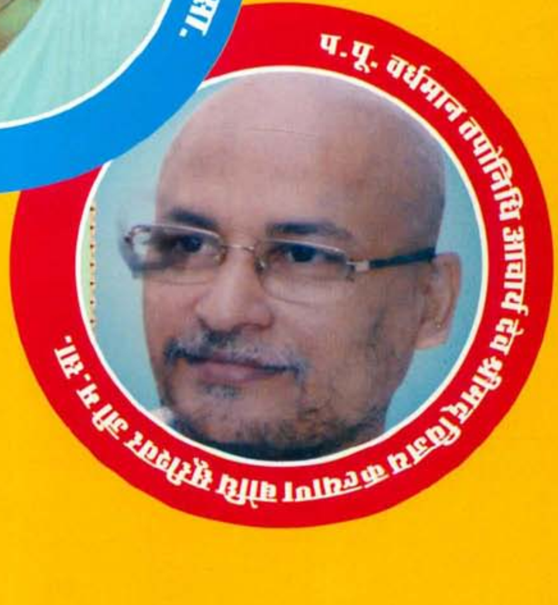

।। जिनाय नमः ।।

आशीर्वचनम्

प.पू. प्राचीन श्रुतोद्धारक गुरूदेव श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के आशीर्वचनम्

समस्त चतुर्विध श्रीसंघ रात्रिक प्रतिक्रमण में 'संकल तीर्थ' सूत्र में बोलता है -

गाम नगर पुर पाटण जेह
जिन वर चैत्य नमु गुणगेह

अर्थात् जिनेश्वर देव का जिनालय साक्षात् गुणालय स्वरूप है, वह जो भी गांव-शहर आदि में हो, मैं उसे भाव से वंदना करता हूँ।

सूत्र की इस एक ही पंक्ति का यदि विस्तार किया जाये, तो जीवन समाप्त हो जाये, किन्तु अर्थ समाप्त न हो, उतने - विराट संख्यक जिनालयों से इस मनुष्यलोक में कही वसुंधरा अलंकृत है। काश ...... हम उन सभी चैत्यों की यात्रा कर पाते...........

तथापि हमारा यह सौभाग्य है कि हमें जब भी अवकाश मिले, एक नये अपूर्व चैत्य की यात्रा हम कर सकते हैं।

सुश्रावक श्री मोहनलालजी बोल्या के इस प्रयास ने हमारे सौभाग्य को उदयावसर दिया है, सकल श्रीसंघ यथावसर इस प्रयास को सार्थक करे ऐसा शुभकामनायें एवं असीम आशीष के साथ ....धर्मलाभ...

आचार्य हेमचंद्र सूरि

आ.शु. 7, सांचोरी भवन, सिद्धाचल महातीर्थ

प्रस्तावना

शंत्रुजय तीर्थ : यह है पावन भूमि, यहां बार बार आना

वर्धमान तपोनिधी आचार्यदेव श्रीमद विजय कल्याणबोधि सूरीश्वरजी म.सा. की ओर से

आकाश कॉलेज से घर आ रहा था। पहले कैम्पस आया . ... जो अभद्रता का नमूना जेसा था। रास्ते में इधर-उधर देखते आकाश को कुछ बोर्डस्, पोस्टर्स नजर में आये, जिन में व्यवसायिक विजय हेतु अभद्रता का शस्त्र प्रयुक्त किया हुआ था। घर में आकर आकाश ने टी.वी. ऑन कर दिया। स्थिति ऐसी हो गयी कि यदि कोई सज्जन वहां विद्यमान हो, तो उसे शर्माना पड़े। थोड़ी देर बाद कंटाल कर आकाश ने न्यूज पेपर खोला .... मानो अभद्रता के डिपार्टमेन्टल स्टोर का ओपनिंग हो गया। रात को आकाश अपने रूम में चला गया। मोबाईल का नेट ऑन हुआ और ....

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य के शब्दों में कहूँ, तो आलप्यालमिदम् जाने दो, नहीं कहना इस बात को।

बात केवल आकाश की नहीं, आप की भी है। आखिर क्यों चारों ओर से अभद्रता ही प्रस्तुत हो रही है ? यदि आप यह प्रश्न किसी मिडीया वाले को पूछेंगे, तो वे कहेंगे, Because you Like it"

Well वास्तव में आप जिसे अपने जीवन का अमूल्य समय दे रहे हैं, उनका यह दायित्व बनता है कि वह आप को कुछ ऐसी चीज दे, जो आपका हित करती है। आपने स्वार्थ हेतु आपका Wealth - Point का फायदा उठाकर जो आप को अहितकारक चीज दे रहे है, वे आपके शत्रु है, शुद्ध शत्रु।

आपके मित्र वो है, जो आपके हितचिन्तक है एवं आपको हितकारक चीज देते है। ऐसे ही एक मित्र के स्वरूप में उभर आये है सुश्रावक श्री मोहनलालजी बोल्या, जो अभद्रता के इस विषमय काल में आपके लिये अमृत का उपहार लेकर उपस्थित हुए है। समझ लो कि टी.वी. आदि सभी माध्यम हलाहल जहर है, अनन्त मृत्यु का यह पथ है और आपके हाथो में जो उपहार है, वह परम अमृत है, यहाँ अमरता का वरदान है।

विश्व में परम दर्शनीय कोई है तो वे है परमात्मा तथा परमात्मा का मंदिर। विश्व में परम श्रव्य कुछ है तो वह है परमात्मा की कथा। पूर्ण ममता से इस अमृत का पान करना, पुनः पुनः इन जिनालयों की भावयात्रा करना, अवसर मिले तो धरती के इस स्वर्ग की मुलाकात लेना। परमात्म भक्ति तो सर्व सुखों की जननी है। हिताय जननी - यहां आपकी परम हितस्विना हे। चलो देखते है, आप किसे समर्थन देते है ? शत्रु को या मित्र को

भादवा सुद

सांचोरी भवन, श्री सिद्धाचल महातीर्थ

आचार्य विजय कल्याणबोधिसूरि.

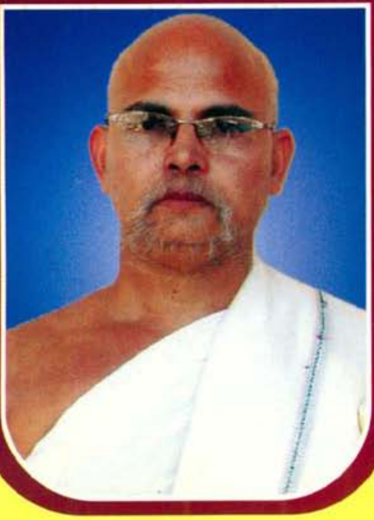

आशीर्वाद सन्देश

प्राचीन श्रुतोद्धारक आचार्य श्रीमद हेमचंद्रसूरीश्वर जी म.सा. के सुशिष्य प. पू. पं. श्री अपराजित विजय जी म.सा. की ओर से

धर्मप्रेमी देव गुरू भक्ति कारक, नमोकार मंत्र आराधक सुश्रावक मोहनलालजी बोल्या,

धर्मलाभ

आत्म उन्नति का जिन शासन में आत्म विश्वास का क्रमिक मार्ग बताया है। आत्म उन्नति का प्रारम्भ भगवान की भक्ति, पूजा व भगवान के आलम्बन में होती है। आलम्बन से असीम ऊर्जा प्राप्त होती है, धर्म की आराधना करने की शक्तियों का विकास होता है। आलम्बन की प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि जिन मंदिर व जिन प्रतिमा की द्रव्य भक्ति व भाव भक्ति विद्यमान हो, ऐसे ही सुश्रावक श्री मोहनललालजी बोल्या है जिन्होंने उदयपुर नगर, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ व भीलवाड़ा जिलें के सभी प्रगट - अप्रगट मंदिरों व प्रतिमाओं का आलंबन कर अपने आपको धन्य किया है, साथ में ही इनकी पुस्तकें प्रकाशन करा हम सभी को भावपूर्वक भक्ति व दर्शन करने का सुअवसर दिया है।

श्री बोल्या द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में मेवाड़ क्षेत्र को पूर्ण किया, अब उदयपुर संभाग (डिवीजन) के शेष वागड़ प्रदेश के सभी जैन श्वेताम्बर मंदिरों (डूंगरपुर बांसवाड़ा जिले के) का इतिहास के साथ प्रकाशित करा रहे है। इस पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात उदयपुर संभाग के सभी जैन श्वेताम्बर मंदिरों का इतिहास के साथ रचना कर प्रशसनीय कार्य किया है। ये सभी पुस्तकें एक दस्तावेज की तरह उपयोगी होगी और साधु-साध्वी भगवंतों के विहार के समय मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी होगी।

इस प्रकार आपका पुरूषार्थ सार्थक और सफल बनेगा। आशीर्वाद के साथ...धर्मलाभ

द. अपराजित विजय

(पं. अपराजित विजय)

आशीर्वाद सन्देश

मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य देवश्री जितेन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. के सुशिष्य प.पू. पं. श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. की ओर से आशीर्वाद सन्देश

श्री बोलिया जी

सादर धर्मलाभ ।

उदयपुर नगर से प्रारंभ कर आपने देलवाड़ा फिर मेवाड़ के पांचों जिलों के जिन मंदिर व उनकी प्राचीनता आदि के लेख तीन भागों में अद्वितीय संग्रह किया है। साथ ही आपकी भावना थी कि मेवाड़ से लगा हुआ श्री केसरियाजी तीर्थ धुलेवा से जुड़ा हुआ वागड़ प्रदेश डुंगरपुर - बांसवाड़ा जिले के जिन मंदिरों व प्रतिमा जी व उनके शिलालेख आदि का प्राचीनता का संग्रह किया जाए, अनुकरणीय व अनुमोदनीय कार्य आपने किया है ।

यह आपका सत्प्रयास इन जिन मंदिरों का भविष्य में इतिहास बनेगा व इन जिनालयों से जुड़ी प्रोपर्टी को सुरक्षित रखने में संबल प्रदान करेगा साथ ही मेवाड़ वागड़ की तीर्थयात्रा में संग्रह उपयोगी कार्य करेगा व तीर्थयात्रा में सुलभता रहेगी।

परमात्मा से यही प्रार्थना कि आगे भी शासन देवता आपको ऐसी ही शक्ति प्रदान करे जिससे शासन के कई कार्य सुसंपन्न हो ।

उदयपुर

दिनांक 5.9.2014

निपुणरत्नविजय

प. श्री निपुणरत्नविजय जी म.सा.

ग्रंथ के द्रव्य सहायक

पं. पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक वैराग्य
देशना दक्ष आचार्य देव
श्रीमद् विजय श्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी महाराज

एवं

वर्धमान तपोनिधि आचार्य देव श्रीमद् विजय
श्री कल्याणबोधिसूरीश्वर जी महाराज की प्रेरणा से

तथा

प.पू. आचार्यदेव श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.
आदि विशाल परिवार का वि.सं. 2070 का पालीताणा
में यशस्वी चातुर्मास हुआ जिसमें प्राप्त
ज्ञान निधि की राशि से

श्री जिन शासन आराधना ट्रस्ट

ने पूर्ण लाभ लिया है ।
सभी की हम भूरी भूरी अनुमोदना करते हैं।

खूब खूब अनुमोदना

संपादक की कलम से

धर्म, मंदिर, प्रतिमा का सार अपूर्व महिमावान है। इसका गुण अनेक है, सुर, नर, मुनि, योगी, इंद्र आदि इसका गुण गाते है और ध्याते है। तीर्थंकर की प्रतिमा की पूजा जैन धर्म में विश्व में सर्व श्रेष्ठ है, शुद्ध-श्रद्धा से पूजा करने वालों को कुछ दुष्प्राय: नहीं है। यह आत्मा को पवित्र बनाकर आत्म ज्योति का प्रकाश करता है। इसी कारण से मंदिर में स्थापित प्रतिमा की प्रमाणिकता व चमत्कारिता का स्वयं को ज्ञान हो जाएगा। मंदिर की प्राचीनता का वर्णन करते समय प्रतिष्ठा का भी वर्णन किया है। जिसका अभिप्राय यह है कि पूर्वाचार्यों द्वारा अंजनशलाका प्रतिष्ठा की श्रेष्ठता के प्रति आस्था होती है ओर आस्था ही श्रद्धा का केन्द्र बिंदु बनता है। आस्था मन से उत्पन्न होती है और इस आस्था को हम यदि अपने आचरण में लाते है तो निष्ठा बनती है। जब यही निष्ठा अपने जीवन में परमात्मा को प्राप्त करने के लक्ष्य को भक्ति के माध्यम से प्राप्त करने के प्रयास को मुक्ति द्वार कहा जा सकता है। अत: श्रद्धा-निष्ठा वह गुण है जिससे हमे सफलता की ओर अग्रसर करता है लेकिन वर्तमान युग में मनुष्य में श्रद्धा व निष्ठा का अभाव है यही कारण है कि मनुष्य शक्तिहीन हो रहे है।

इसका मुख्य कारण है कि वर्तमान में प्रतिमा का गढ़न, प्रतिष्ठा कराना, विराजमान कराने का संपूर्ण कार्य एक व्यक्ति विशेष (पूंजीपति) को प्राप्त होता है जो न श्रद्धावान और न ही निष्टावान होता है। श्रद्धावान, निष्ठावान का अवसर प्राप्त नहीं होता है जिससे वह धर्म से विमुख होता जाता है, यही कारण है कि युवा-पीढ़ी मे भक्ति भाव, पूजा भाव आदि की कमी हो जाने से मंदिर में पूजा करने वालां की संख्या निरंतर कम हो रही है। श्रद्धा व निष्ठा विहिन व्यक्ति केवल धन का उपयोग करने व नाम की लोलुपता के कारण प्रतिमा गढ़न, प्रतिष्ठा आदि कार्य से धन का उपयोग करता है। शास्त्रों के अनुसार शुद्ध भाव से स्व अर्जित धन से धर्म कार्य किये जाने से प्रभाविकता व चमत्कारिता की ऊर्जा उत्पन्न होती है जो नहीं है।

यदि दोषरहित धन का उपयोग होता है तो मनुष्य की स्वयं की भावना व भक्तों की भावना श्रद्धा-निष्ठा से जुड़ जाती है जिससे असीम पुण्यों का सृजन होता है जिससे सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है। युवा पीढ़ी धर्म की ओर अग्रसर होगी और उसके ममत्व को समझेगी और उनका जीवन विरक्तियों रहित होगा और धर्म से अनुराग बढ़ेगा।

वागड़ क्षेत्र के मंदिरों की संख्या कम अवश्य है लेकिन इस क्षेत्र के मंदिरों की व्यवस्था, नियमित पूजा करने वालों की संख्या व रूचि को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि धर्मप्रेमियों के लिए धर्म के प्रति जागृति का एक अनुकरणीय उदाहरण है।

अंत में मेरी अभिलाषा है

हे देवाधिदेव :

आप देवाधिदेव तुल्य है एवं चित्य अचिंत्य सभी पदार्थों को परम पद प्रदान करने के लिए

हे देव - आप मुझ, सभी पर अनुग्रह करे

आपकी वंदन दर्शन पूजन से सुविशुद्ध

मृत्यु- जीवन तथा समाधि शुद्ध परिणिति की आत्मानुमति तथा परम पद मुझें प्राप्त हो

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इस ग्रंथ की रचना की गई है।

इस ग्रंथ की रचना में प्रेरणादायक प.पू. प्राचीन आगम शास्त्रोंद्धारक वैराग्य देशनादक्ष आचार्यदेव श्रीमद् हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा. व पं. पू. वर्धमान तपोनिधी आचार्य देव श्रीमद् विजय कल्याण बोधि सूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा, आशीर्वाद से यह ग्रंथ पूर्ण हो सका जिनका मैं हार्दिक अभिनंदन करते हुए नतमस्तक आभारी हूँ और आपके सदुपदेश से ही यह प्रकाशन हुआ। आप सभी को धन्यवाद व आभार ज्ञापित करता हूँ।

(मोहनलाल बोल्या)

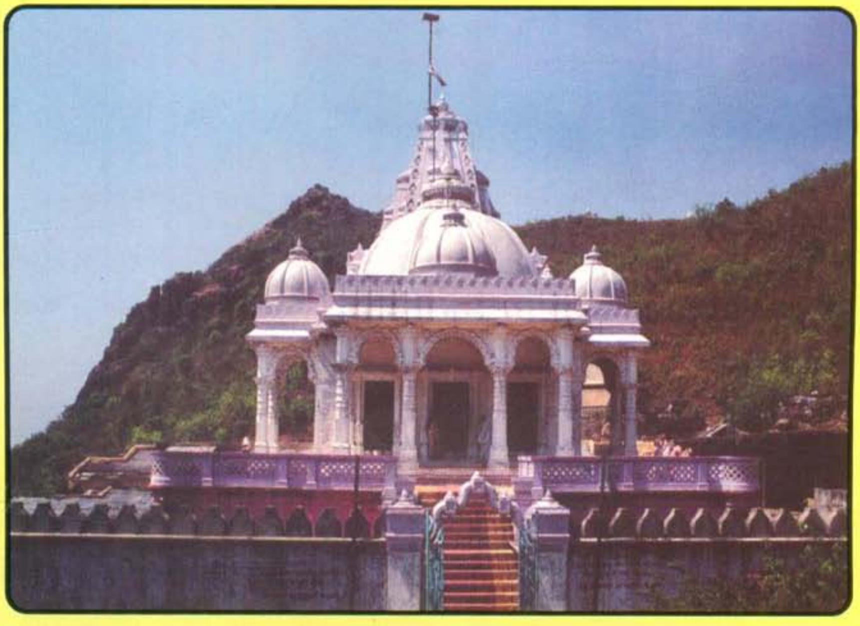

वनयुक्त पहाड़ों के बीच जल मन्दिर का एक अपूर्व दृश्य – सम्मेतशिखर

सह-संपादक के विचार

मेवाड़ राज्य का गौरवशाली इतिहास रहा है, यह धरती धर्मवीरों एवं शुरवीरों की पावन स्थली रही है। वागड़ प्रांत का भी अपना गौरवशाली इतिहास है, यहां के देवालय, जिनालय भी बहुत ही प्राचीन है एवं ऐतिहासिक है। भारतीय संस्कृति के चिर शाश्वत आधार स्तम्भ देवालयों, जिनालयों एवं मंदिरों के इतिहास लेखन एवं संकलन के पुनित कार्य में परम श्रद्धेय सुश्रावक ध्येय निष्ठ, समर्पित व्यक्तित्व के धनी, अनेक धार्मिक ग्रन्थों के सृजनकर्मी माननीय श्री मोहनलाल जी बोल्या ने मुझे सुयोग्य समझकर मेवाड़ संभाग के देलवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ जिलों के सभी मंदिरों के सर्वेक्षण कार्य एवं भीलवाड़ा जिलें के सभी मंदिरों एवं राणकपुर तीर्थ के इतिहास लेखन के देवीय कार्य में सहयोगी संपादक के रूप में चयनित किया, यह मेरा सौभाग्य। वागड़ प्रांत के जिन मंदिरों के इतिहास लेखन एवं संकलन के पुनित कार्य में भी पुनः आपने अपने सहयोगी के रूप में चयन कर जो मुझे सम्मान दिया है, इस हेतु आपका आभार प्रदर्शित कर अपने आपकों गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

मैं स्वयं इतिहास प्रेमी हूँ, इसी इच्छा शक्ति की वजह से पिछले कुछ वर्षों से इतिहास लेखन के परम पुनित कार्य में स्वयं भारतीय इतिहास संकलन योजना चित्तौड़ प्रान्त के संगठन सचिव के नाते अधिकारिक रूप से पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहा हूँ। जिन शासन के इस देविय कार्य में सहयोग करना सौभाग्य का विषय है। मेवाड़ के पश्चात् वागड़ क्षेत्र के जैन मंदिरों के संर्वेक्षण के चुनौती पूर्ण कार्य को माननीय श्री बोल्या जी के साथ करना पारिवारिक बंधुओं के सहयोग बिना संभव नहीं हो सकता था। इस कार्य हेतु प्रेरणा देने हेतु मैं आभार प्रदर्शित करता हूँ मेरी धर्म सहायिका सुधर्मा श्रीमती प्रेम पामेचा एवं परिवार के सभी बन्धुओं का। एक बार पुनः स्मरण करता हूँ अपने स्वर्गीय पौत्र श्री रिषभ पामेचा स्व. माता-पिता, दोनों भ्राताओं को स्वः रिषभ पामेचा की मंद मुस्कान व स्मरण मेरे कार्य की प्रेरणा का स्त्रोत रहा है। फोटोग्राफर श्री महेश जी दवे का योगदान भी किसी प्रकार से कम नहीं है, सुंदर एवं चित्राकर्षक फोटोग्राफी के कार्य को करने में जो सहयोग हमें प्राप्त हुआ है, उस हेतु आभार।

वागड़ प्रांत के डूँगरपुर, बांसवाड़ा जिलों के जिनालयों का सर्वेक्षण व इतिहास लेखन के जटिल कार्य का जो बीड़ा श्रीमान् बोल्या साहब ने उठाया एवं सहसंपादक के रूप में चयन कर मुझे गौरवान्वित किया है। यद्यपि इन जिलों में जैन मंदिरों की संख्या अन्य जिलों की तुलना में बहुत नगण्य है। लेकिन यहां के मंदिर बहुत ही प्राचीन एवं भव्य है। इन्हें देखने के पश्चात् जैन धर्म के गौरवशाली इतिहास का स्मरण हो जाता है। मंदिर के सर्वेक्षण कार्य में यहां के धर्म प्रेमी सुश्रावकों का जो स्नेह, प्यार एवं आतिथ्य हमें प्राप्त हुआ वह चिर स्मरणीय रहेगा। गाँव छोटे-छोटे होने के बावजुद विशाल मंदिर है। हर जगह नियमित सेवा-पूजा होती है। धर्म के प्रति जागृति का सुन्दर उदाहरण यह वागड़ क्षेत्र है। सभी सहयोग करने वाले बंधुओं का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद। श्री जीवन जी कोठारी का भी बहुत-बहुत आभार।

एक बार पुन: मैं अपने इस पुनित कार्य को समर्पित करता हूँ श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या को। आपके निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता को पुनः नमन । श्रीमान् मोहनलाल बोल्या साहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी, समाजसेवी, धर्म प्रेमी, अच्छे लेखक, विचारक, चिंतनशील, मनिषी, महासभा दर्शन को नई दिशा देने हेतु प्रयत्नशील, जैन धर्म एवं संस्कृति के रक्षक, देवालयों एवं जिनालयों की दुर्दशा को देखकर व्यथित, जैन धर्म की विभिन्न सम्प्रदायों के प्रति समभावी मंदिरों के जीर्णोद्धार के पक्षधर एवं प्राचीन मंदिरों एवं देवालयों की सुरक्षा हेतु प्रयत्नशील, गुरू भगवन्तों के प्रति निष्ठावान श्रावक, सही को सही एवं गलत को गलत कहने वाला साहसी व्यक्तित्व, आगमों के जानकार, मंदिर संस्कृति की रक्षा हेतु प्रयासरत ।

(हरकलाल पामेचा)

सह संपादक का परिचय

नाम	:	हरकलाल पामेचा
माता	:	स्व. श्रीमती भूरीबाई पामेचा
पिता	:	स्व. श्री कन्हैयालाल जी पामेचा
जन्म स्थल	:	देलवाड़ा (मेवाड़) जिला-राजसमन्द
जन्म दिनांक	:	27.08.1945
शिक्षा		एम.ए. (इंग्लिश इको.), बी.एस.सी. , एम. एड.
व्यवसाय	:	राज्य सेवा से सेवानिवृत प्राध्यापक (अंग्रेजी)
धर्म सम्प्रदाय	:	जैन धर्म स्थानकवासी
धर्मपत्नी	:	श्रीमती प्रेम पामेचा, गृहीणी
प्रकाशन कार्य	:	इतिहास के पत्र वाचन-6, प्रकाशित आकाशवाणी वार्ता (1987) देलवाड़ा मूक साक्षी इतिहास के जैन मंदिर
संस्थागत कार्य	:	नागरिक विकास मंच अध्यक्ष-शिक्षा समिति, देलवाड़ा

सम्पादक मंडल

1. हेरिटेज पुस्तक का हिन्दी अनुवाद एवं संशोधन, हेरिटेज केलेण्डर का प्रकाशन, 2. मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग-3 सह सम्पादक, 3. इतिहास संकलन का कार्य 4. पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित (जैन मंदिर नागदा देलवाड़ा, संस्कृति), राजस्थान पत्रिका, उदयपुर एक्सप्रेस, खबर सम्राट, हलकारा-मुम्बई, सिद्धार्थ फाउण्डेशन-सूरत, नाथद्वारा, 5. पत्र वाचन : राष्ट्रीय एवं राज्य संगोष्ठी पर पत्र वाचन

लेखक के अन्तः मन की बात

इतिहास में भूतकाल की घटनाओं, सूचनाओं से समाज व सांस्कृतिक सूत्रों की खोज होती है। इन सूत्रों से ही धर्म साहित्य समाज के अनेक शास्त्रों की रचना होती है इसी प्रकार से हमारे आगमों की भी रचना(लिपिबद्ध)हुई।

कई राजा-महाराजा हुए, कई समाप्त हुए, राज्य बने, नष्ट हुए, शहर बने, उजड़े लेकिन कला, साहित्य, संस्कृति, धर्म, प्रतिमा, लेख, शिलालेख जीवित रहते हैं। इन्हीं के आधार पर प्राचीनता सिद्ध होती है। इसी के आधार पर कलात्मक मंदिर उसकी प्राचीनता के आधार पर निष्प्राण खड़े रहते है। मैंने इस पुस्तक में भी लेख, शिलालेख व प्राचीनता पर बल दिया है। इन मंदिरों का वास्तुशास्त्र, शिल्पकला, दर्शन, विज्ञान, चित्रकला विज्ञान का वर्णन इतिहास से प्राप्त होता है।

इन्हीं बिंदुओं पर मंदिर संस्कृति की प्राचीनता को सिद्ध करते हुए जैन धर्म की प्राचीनता को ढूंढने का प्रयास करते हुए पूर्व में मेवाड़ के जैन तीर्थ व अन्य पुस्तको में विवरण प्रस्तुत किया।

वर्तमान में यह अनुभव किया जा रहा है कि प्राचीन मंदिरों को जीर्ण-शीर्ण के नाम पर या मंदिर में कई दोष बताकर मंदिरों का आमूल-चूल परिवर्तन कर प्राचीन मंदिरों को जमीनदोज कर नूतन मंदिरों का निर्माण किया जा रहा है जबकि साहित्य में स्पष्ट वर्णन है :

> ''नवीन चेत्य निर्माण की अपेक्षा भविष्य में जिसके विलुप्त होने की सम्भावना है उस चेत्य को यदि हम रक्षा करे तो लगेगा कि इस शिल्प को हमने बनवाया है। कारण जब दुष्काल आएगा तब मनुष्य अर्थ, लोलुपता, तत्वहीन और कलाकृत्य विचारहीन होगा। इसलिए नवीन धर्मस्थान निर्माण करवाने की अपेक्षा पुराने धर्म स्थान की रक्षा हो, अधिक उपयुक्त है।'' हाँ यह अवश्य है कि बढ़ती हुई आबादी / कॉलोनी के आधार पर जहाँ आवश्यक है वहीं मंदिर निर्माण होना चाहिए।

फिर भी इसका तथ्य प्रतिपालन नहीं होता, यह भी लिखना न्यायसंगत होगा कि केवल नाम की लोलुपता के कारण ही ऐसा किया जा रहा है। यहां तक प्राचीन लेख व शिलालेखों की पट्टी भी तोड़ कर फेंक दी जाती है। जिससे उसकी प्राचीनता का ज्ञान किसी को नहीं हो सके, आने वाली पीढ़ी यही मानेंगे कि मंदिर 20वीं या 21वीं शताब्दी के निर्मित है। जबकि मूलत: ये मंदिर आज से 500-1000, 2500 व 3000 वर्ष प्राचीन है। हाँ यह भी नकारा नहीं जा सकता कि पूर्वाचार्यों द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमाओं की ऊर्जा उनके उत्थापन से शिथिल हो जाती है। जिससे प्रतिमा की प्रभाविकता, चमत्कारिकता में कमी आ जाती है जो पूर्व में थी।

उदाहरण यह भी है कि 500 मीटर के क्षेत्र में 4 प्राचीन मंदिर 250 वर्ष से स्थापित है और पूजा करने वाला नहीं हैं उसी क्षेत्र में पांचवां मंदिर निर्माण कराया जाकर प्रतिमा स्थापित कराई जाती है। अपूजित रहने से जो असातना होती है उसका दोषी कौन ? मंदिर निर्माण करने वाला, कराने वाला, प्रतिष्ठा करने वाला, कराने वाला, सभी दोष के भागीदार है।

इस ग्रंथ को तैयार करने के लिए निम्न साथियों का सहयोग प्राप्त हुआ है जिनका में हृदय से आभारी हूँ। आपके सहयोग के कारण क्षेत्र से मूलभूत सामग्री एकत्रित कर सका हूँ और यह ग्रंथ तैयार होकर आपके हाथों में है।

1. श्रीमती सुशीला बोल्या पत्नि मोहनलाल बोल्या (लेखक) ने अपनी स्व बचत से धन उपलब्ध कराया।
2. श्रीचंद जी सिंघवी निवासी "पद्मश्री" पाल लिंक रोड़, जोधपुर। साधुवाद
3. श्री सोहनलाल जी सुराणा निवासी सेवाडी (पाली) हाल-थाणे (मुंबई) आपका अनुज की तरह स्नेह प्राप्त हुआ।
4. श्री हरकलाल जी पामेचा निवासी-देलवाड़ा, अपना अमूल्य समय देकर प्रत्येक मंदिर तक साथ में रहकर सामग्री एकत्रित करने में सहयोगी रहे ।
5. श्री महेश दवे, निवासी देलवाड़ा ने अपना अमूल्य समय देकर सभी मंदिरों के फोटो उपलब्ध कराए।
6. श्री दलपतसिंह दोशी (पूर्व पार्षद) पुत्र स्व. श्री नन्दलालजी दोशी, उदयपुर
7. श्री अजय, गिरिराज कोठारी पुत्र श्री जीवनसिंह जी कोठारी, डूँगरपुर
8. श्री चन्द्रशेखर बोल्या पुत्र स्व. श्री भगवतसिंह जी बोल्या, उदयपुर
9. श्री दिनेश व श्री परमेश पामेचा पुत्र श्री हरकलालजी पामेचा, देलवाड़ा
10. श्रीमती नीरू पत्नी श्री राजेन्द्र लोढ़ा, उदयपुर (पुत्री मोहनलाल बोल्या)
11. श्री जैन श्वेताम्बर वासूपूज्य महाराज ट्रस्ट, उदयपुर (मुख पृष्ठ फोटो)
12. श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा (अन्तिम कवर पृष्ठ फोटो)
13. श्री जैन श्वेताम्बर बीसा हुमड़ संघ, डूंगरपुर (द्वितीय कवर पृष्ठ फोटो)
14. श्री नेमीनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट (श्री जैन श्वेताम्बर बीसा पोरवाड़ संघ), डूंगरपुर (तृतीय कवर पृष्ठ फोटो)

वागड़ क्षेत्र के सभी जैन श्वेताम्बर मंदिरों
से जुड़े हुए सभी सदस्यगणों द्वारा
प्रदत्त सहयोग के लिए
हार्दिक आभार

मेरे विचारों से, लेखन से किसी के मन को आघात पहुंचा हो या जिन आज्ञा से विपरीत लिखने में आया हो तो सभी से क्षमायाचना करता हूँ यद्यपि स्थानीय सूत्रों से व साहित्य से जानकारी प्राप्त कर सामग्री संकलित की।

(मोहनलाल बोल्या)

मिथ्या दृष्टि द्वारा अपनाया गया सम्यग् ज्ञान भी मिथ्या ही मान लिया जाता है,
सम्यक्ज्ञान यदि मिथ्या ज्ञान को धारित करता है यह मिथ्या ज्ञान प्रतिभासित नहीं होता"

लेखक परिचय

नाम	:	मोहनलाल बोल्या
माता	:	स्व. श्रीमती गुलाबकंवर बोल्या
पिता	:	स्व. श्री रोशनलालजी बोल्या
जन्म स्थल	:	उदयपुर
जन्म दिनांक	:	15 जून, 1936
शिक्षा	:	एम.ए. (समाजशास्त्र)
पत्नी	:	श्रीमती सुशीला बोल्या
धर्म-संप्रदाय	:	जैन धर्म, मूर्तिपूजक समाज
व्यवसाय	:	सेवानिवृत - जिला समाज कल्याण अधिकारी

प्रकाशित, संपादित पुस्तकों की सूची :

1. उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ
2. मेवाड़ का प्राचीन जैन तीर्थ : देलवाड़ा के जैन मंदिर
3. श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ-केशरियाजी
4. नमोकार मंत्र स्मारिका
5. मेवाड़ के जैन तीर्थ - भाग-1
6. नमोकार मंत्र - महामंत्र (मौन साधना मंत्र)
7. मेवाड़ के जैन तीर्थ - भाग-2
8. मेवाड़ के जैन तीर्थ - भाग-3
9. वागड़ के जैन श्वेताम्बर मंदिर
10. महासभा दर्शन मासिक पत्रिका जनवरी 2011 से लगातार

संस्थागत कार्य :

कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा उदयपुर की साधारण सभा

संयोजक : ज्ञान खाता

कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा

अनुक्रमणिका

शंत्रजुय तीर्थ

प्रकाशक
संपादक आदि

समर्पण –आचार्य भगवंत

प्रस्तावना
आ. श्री कल्याणबोधिसूरिजी

संदेश / आशीर्वाद
प. श्री निपुणरत्नविजयजी

ग्रंथ के द्रव्य सहायक –
आभार अनुमोदन

सम्पादक की कलम से
श्री मोहनलाल बोल्या

आशीर्वाद
आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरिजी

सह सम्पादक के विचार
श्री हरकलाल पामेचा

संदेश / आशीर्वाद
प. अपराजितविजयजी म.सा.

लेखक के अन्त:मन की बात

डूँगरपुर का इतिहास

डूँगरपुर जिले का नक्शा

1
श्री आदीश्वर भगवान मंदिर, डूँगरपुर

9
श्री शांतिनाथ भगवान डूँगरपुर

11
श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ डूँगरपुर

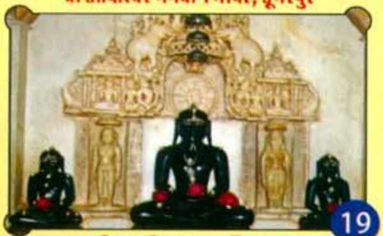
19
श्री महावीर भगवान डूँगरपुर

21
श्री संभवनाथ भगवान, डूँगरपुर

24
श्री नेमिनाथ भगवान, डूँगरपुर

27
श्री आदिनाथ भगवान, पुनाली

30
श्री आदिनाथ भगवान, बनकोड़ा

32
गुरु मंदिर, बनकोड़ा

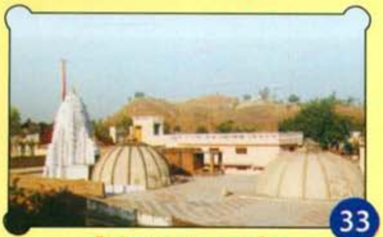
33
श्री चंद्रप्रभ भगवान बनकोड़ा

36
श्री अजितनाथ भगवान बनकोड़ा

38
श्री संभवनाथ भगवान पुँजपुर

42
श्री ऋषभदेव भगवान बड़ौदा (वट पद्रक)

46
श्री विमलनाथ भगवान, बड़ौदा

52
श्री आदिनाथ भगवान, काबजा

54
श्री आदिनाथ भगवान, माल

श्री चंद्रप्रभ भगवान, बोड़ीगामा बड़ा

श्री संभवनाथ भगवान, बोड़ीगामा छोटा

श्री नेमिनाथ भगवान, करियाणा

श्री धर्मनाथ भगवान, जोगीवाड़ा

श्री कुंथुनाथ भगवा, सरोदा

श्री संभवनाथ भगवान, गलियाकोट

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, सागवाड़ा

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान, सागवाड़ा

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान आसपुर

श्री सांवलिया पार्श्वनाथ साबला

श्री दादावाडी मंदिर सांबला

श्री भीलड़िया पार्श्वनाथ मन्दिर – भीलड़ी

बाँसवाड़ा राज्य का इतिहास 86

बाँसवाड़ा राज्य का नक्शा 88

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान बांसवाड़ा 89

श्री पार्श्वनाथ भगवान, बांसवाड़ा 94

श्री वितांहरण भगवान का मंदिर व दादावाड़ी, बांसवाड़ा 95

श्री आदिनाथ भगवान, बांसवाड़ा 98

श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान, दानपुर 101

श्री आदिनाथ भगवान, कुशलगढ़ 104

श्री शातिनाथ भगवान, तलवाड़ा 107

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, घाटोल 109

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, मोटा गाँव 111

संदर्भित पुस्तकों की सूची 114

देव-देवी के चित्र 115

भावी चौबीसी की संक्षिप्त जानकारी 116

महापुरूषों की सूचना एवं काल का विवरण 118

डूँगरपुर का इतिहास

डूँगरपुर राज्य का प्राचीन नाम वागड़ है जो गुजराती भाषा के "वागड़ा" से मिलता है इसका अर्थ जंगल है अर्थात् कम आबादी वाला प्रदेश। कुछ विद्वानों ने वागड़ को संस्कृत भाषा में "वाग्वर", वैयागड़", वागट" या "वार्गट" और प्राकृत भाषा में "बागड़" कहा है लेकिन शिलालेखों, ताम्रपत्रों में "वागड़" शब्द का ही प्रयोग हुआ है इसके प्रमाण में सं. 1242 वर्ष कार्तिक सुदि 15 का लेख वीरपुर (जयसमंद) में प्रयोग हुआ, सं. 1291 वर्ष पौष सुदि 3 में वागड़ वटपद्र में उल्लेख है, डूँगरपुर का भेरूगढ़ गांव के तालाब के निकट वैजवा माता मंदिर का लेख सं. 1308 वर्ष कार्तिक सुदि 15 में अद्देह वागड़ मण्डल झाड़ोल (जयसंमद) गांव का, शिव मंदिर मे लेख सं. 1343 वैशाख वदि 15, वागड़ वटप्रद महारावल वीरदेव सिंह के ताम्रपत्र की छाप सं. 1359 आषाढ़ सुदि 5 व सं. 1525 का लेख में भी इसी प्रकार का लेख है इसके अतिरिक्त सं. 1571 कार्तिक वदि 12, सं. 1593 वर्ष वैशाख वदि 1(प्रतिपदा) सबसे महत्वपूर्ण यह है कि सं. 1051 का लेख जैन मूर्ति पर है वह राजस्थान संग्रहालय(अजमेर) में सुरक्षित है। प्राचीन वागड़ देश में वर्तमान में बांसवाड़ा राज्य व डूँगरपुर राज्य का समावेश हैं वागड़ देश की प्राचीन राजधानी बड़ौदा (वटपद्र) थी तभी से वागड़ को बांसवाड़ा व डूँगरपुर राज्य कहा जाने लगा।

डूँगरपुर राज्य का इतिहास का वर्णन किया जा रहा है। डूँगरपुर को गिरिपुर भी कहा गया है

डूँगरपुर राजस्थान में 23.20° से 24° उत्तर अंक्षास और 73.22° से 74.23° तक पूर्व देशांतर के बीच बसा हुआ है।

डूँगरपुर राज्य के चारों ओर अरावली पर्वत की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ है। जैसा कि पूर्व पुस्तकों में वर्णन किया है कि किसी भी देश/राज्य की प्राचीनता के लिए लेख, शिलालेख, दानपत्र, सिक्के, ताम्रपत्र आदि प्रमुख है और इनसे ही प्राचीनता प्रमाणिक होती है। डूँगरपुर की स्थापना के बारे में भिन्न-भिन्न विचार है।

गुहिलवंश के राजा माहप से डूँगरपुर स्थापना माना है व कुछ विद्वान रावल सामंतसिंह से स्थापना मानते है। जहां तक अध्ययन से ज्ञान होता है कि डूँगरपुर राज्य की स्थापना महारावल सामंतसिंह से है और वर्तमान में भी इसी के वंशज है और उसी समय के प्रमाणिक शिलालेख उपलब्ध है। दंत कथा के अनुसार माहप ने राहप के साथ मिलकर डुंगरिया भील को मारा था लेकिन प्रमाणिक सत्य नहीं है क्योंकि माहप के समय के साथ मेल नहीं खाता।

महारावल सामंतसिंह से पूर्व डूँगरपुर राज्य पर सर्वप्रथम क्षत्रप वंश (शक के) महाक्षत्रप (क्षत्रप वंश से) व परमार वंश का अधिकार था क्षत्रप, महाक्षत्रप काल के सिक्के जो सुरवानिया (बांसवाड़ा) से मिले है जो वि.सं. 238 से 410 तक के हैं वागड़ के परमार मालवा (म.प्र.) के परमार वंशी

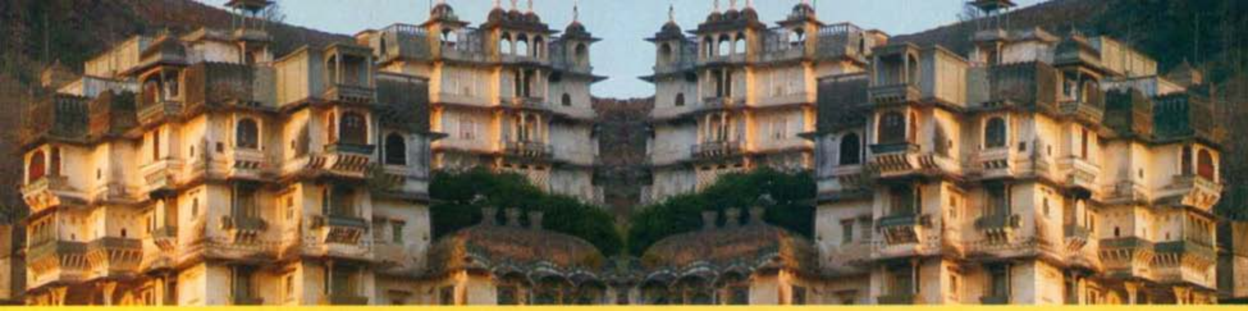

राजा वाक्पति राजा के दूसरे पुत्र डंबरसिंह के वंशज थे। यह संभव है कि डंबरसिंह को वागड़ का प्रदेश जागीर में दिया हो। वागड़ के परमार की राजधानी बांसवाड़ा के अर्थूणा नगर थी। उस समय प्राचीन नगर नष्ट हो गया और उसके पश्चात् नूतन रूप से बसाया गया। यहां पर आज ही प्राचीन जैन मंदिर शिल्प विद्यमान है।

परमारों के पश्चात् सिसोदिया वंश का राज्य रहा। इस बात में विद्वानों की भिन्न भिन्न राय रही।

(1) रावल कर्णसिंह के पुत्र माहप का राज्याधिकार रहा

(2) रावल समरसिंह का पुत्र रत्नसिंह का मेवाड़ पर राज्याधिकार था।

वि.सं. 1303 अलाउद्दीन के आक्रमण में रतन सिंह मारा गया। उनके मरने के पूर्व ही रावल रतन सिंह ने अपने भाई आदि को किले को छोड़ अन्यत्र जाने का आदेश दिया। जिससे वे वापस मेवाड़ को अपने अधिकार में ले सके। वे सब वागड़ में आकर बस गए और पृथक् राज्य स्थापित किया।

दो शिलालेख जो वि.सं. 1228 फाल्गुन सुदि 7 का उदयपुर के जगत के देवी मंदिर के स्तम्भ पर उत्कीर्ण है।

डूँगरपुर के मोलण गांव के पास माही नदी पर स्थित वीरेश्वर महादेव के मंदिर के दीवार पर है जो वि.सं. 1236 का है इन शिलालेखों से स्पष्ट है कि रावल सामंत सिंह ने डूँगरपुर राज्य पर सं. 1228 के पूर्व अधिकार कर लिया।

मुहणोत नेणसी ने अपनी ख्यात में उल्लेख किया है कि रावल सामंतसिंह जब चित्तौड़ का राजा था तब उसके छोटे भाई कुमारसिंह ने काफी सेवा की, सेवा से प्रसन्न होकर रावल सामंत ने अपना राज्य छोटे भाई को दे दिया। सामंत चित्तौड़ छोड़कर आहाड़ की ओर चला गया। इस समय वागड़ में चौरासीमल राजा था। उसके वहां एक डोम रहता था, उसकी पत्नी को राजा ने पासवान के रूप रखा। इस बात को लेकर डोम नाराज था, एक दिन वह अवसर पाकर वह बड़ोदा से भागकर आहाड़ पहुंच कर रावल सामंत को चौरासीमल पर आक्रमण करने के लिए उकसाया। सामंत ने अच्छा अवसर देखकर वागड़ पर आक्रमण कर चौरासीमल को मार दिया और इस राज्य को अपने अधिकार में ले लिया।

रावल सामंतसिंह के वंशज जयंतसिंह, सिंहड़देव, विजयसिंह देव, देवपालदेव, वीरसिंह देव और मचुंड वागड़ के राजा रहे। मचुंड के पुत्र डूंगरसिंह था जिसने सं. 1415 के लगभग डूँगरपुर बसाया, किला बनाया। डूँगरपुर को राजधानी स्थापित की।

विस्तृत वर्णन श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर का वर्णन करते समय किया है।

डूँगरपुर जिले का नक्शा

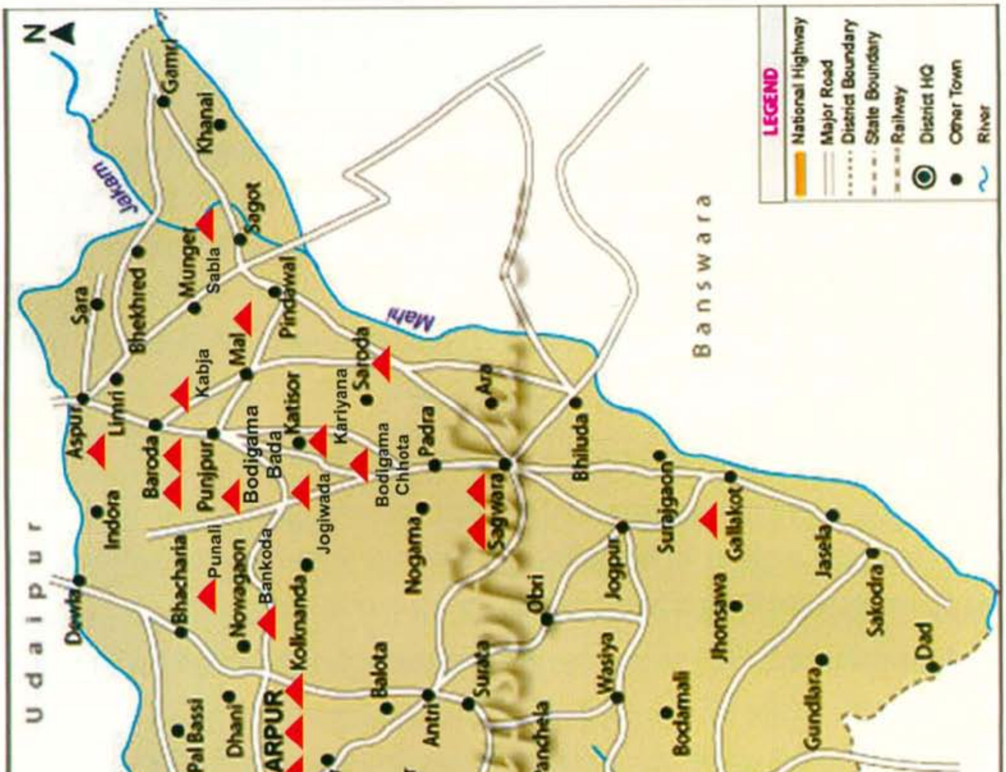

राजा वाक्पति राजा के दूसरे पुत्र डंबरसिंह के वंशज थे। यह संभव है कि डंबरसिंह को वागड़ का प्रदेश जागीर में दिया हो। वागड़ के परमार की राजधानी बांसवाड़ा के अर्थूणा नगर थी। उस समय प्राचीन नगर नष्ट हो गया और उसके पश्चात् नूतन रूप से बसाया गया। यहां पर आज ही प्राचीन जैन मंदिर शिल्प विद्यमान है।

परमारों के पश्चात् सिसोदिया वंश का राज्य रहा। इस बात में विद्वानों की भिन्न भिन्न राय रही।

(1) रावल कर्णसिंह के पुत्र माहप का राज्याधिकार रहा

(2) रावल समरसिंह का पुत्र रत्नसिंह का मेवाड़ पर राज्याधिकार था।

वि.सं. 1303 अलाउद्दीन के आक्रमण में रतन सिंह मारा गया। उनके मरने के पूर्व ही रावल रतन सिंह ने अपने भाई आदि को किले को छोड़ अन्यत्र जाने का आदेश दिया। जिससे वे वापस मेवाड़ को अपने अधिकार में ले सके। वे सब वागड़ में आकर बस गए और पृथक् राज्य स्थापित किया।

दो शिलालेख जो वि.सं. 1228 फाल्गुन सुदि 7 का उदयपुर के जगत के देवी मंदिर के स्तम्भ पर उत्कीर्ण है।

डूँगरपुर के मोलण गांव के पास माही नदी पर स्थित वीरेश्वर महादेव के मंदिर के दीवार पर है जो वि.सं. 1236 का है इन शिलालेखों से स्पष्ट है कि रावल सामंत सिंह ने डूँगरपुर राज्य पर सं. 1228 के पूर्व अधिकार कर लिया।

मुहणोत नेणसी ने अपनी ख्यात में उल्लेख किया है कि रावल सामंतसिंह जब चित्तौड़ का राजा था तब उसके छोटे भाई कुमारसिंह ने काफी सेवा की, सेवा से प्रसन्न होकर रावल सामंत ने अपना राज्य छोटे भाई को दे दिया। सामंत चित्तौड़ छोड़कर आहाड़ की ओर चला गया। इस समय वागड़ में चौरासीमल राजा था। उसके वहां एक डोम रहता था, उसकी पत्नी को राजा ने पासवान के रूप रखा। इस बात को लेकर डोम नाराज था, एक दिन वह अवसर पाकर वह बड़ोदा से भागकर आहाड़ पहुंच कर रावल सामंत को चौरासीमल पर आक्रमण करने के लिए उकसाया। सामंत ने अच्छा अवसर देखकर वागड़ पर आक्रमण कर चौरासीमल को मार दिया और इस राज्य को अपने अधिकार में ले लिया।

रावल सामंतसिंह के वंशज जयंतसिंह, सिंहड़देव, विजयसिंह देव, देवपालदेव, वीरसिंह देव और मचुंड वागड़ के राजा रहे। मचुंड के पुत्र डूंगरसिंह था जिसने सं. 1415 के लगभग डूँगरपुर बसाया, किला बनाया। डूँगरपुर को राजधानी स्थापित की।

विस्तृत वर्णन श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर का वर्णन करते समय किया है।

डूँगरपुर जिले का नक्शा

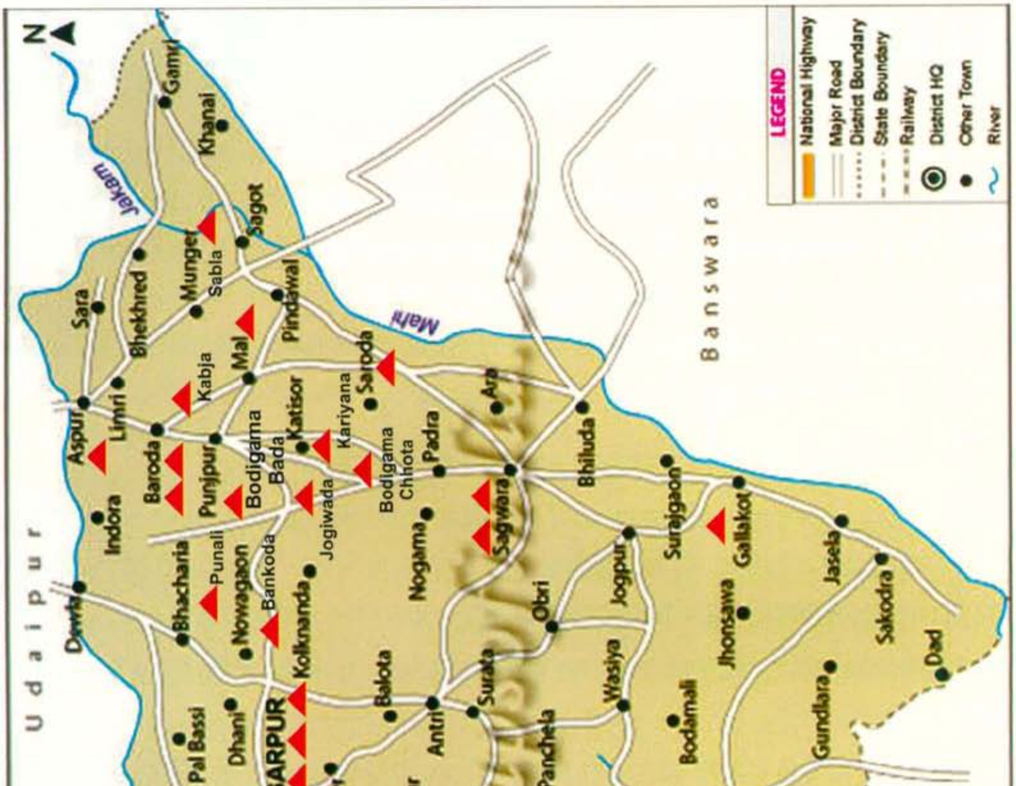

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर
डूँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर शहर के माणक चौक में सड़क के किनारे पर स्थित है। सूत्रों के अनुसार (श्रवण परम्परा के अनुसार) दावड़ा परिवार के श्री सांवलदास दावड़ा ने इस मंदिर को वि.सं. 1526 में निर्माण कराया गया जो उस समय के राजघराने के प्रमुख मंत्री थे।

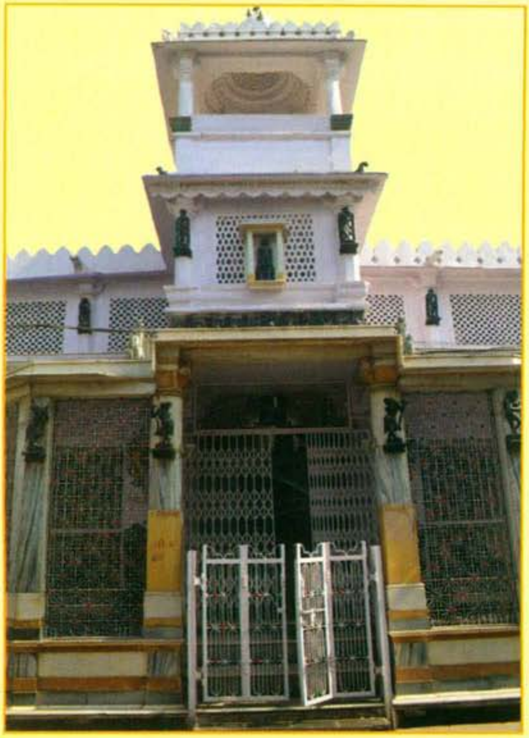

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

श्री ऋषभदेव भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1889 का लेख है।

ऐसा बताया गया है कि प्रारम्भ में धातु की प्रतिमा थी।

मुगल आक्रमण के समय में मुगल शासकों ने स्वर्ण मुर्ति समझ तोड़कर ले गए। बाद में श्वेत पाषण की प्रतिमा की प्रतिष्ठा वि.सं. 1889 माघ सुदि 10 बुधवार आचार्य जयरत्न सुरि तत्पट्टे आचार्य श्री शांतिसागर म.सा. महारावल दलपत सिंह के राज्य में करवाई।

परिकर पांच धातु का बना हुआ है। बहुत लम्बा होने के वास्तविक नाप नहीं लिया गया। लेकिन परम्परा के अनुसार 2½ गुणा लम्बा (ऊँचा) व 1½ गुणा चौड़ा बना हुआ है।

परिकर पर वि.सं. 1529 का लेख है जिसमें प्रतिष्ठा आचार्य श्री रत्नसिंह सूरि जी द्वारा करने का उल्लेख है।

इस धातु के परिकर की विशेषता है : इस परिकर में 14 स्वप्न, 9 ग्रह, 8 मंगल, 72 तीर्थंकर (भूत, वर्तमान व भावी चौबीसी) की प्रतिमाओं के साथ-साथ यक्ष दक्षिणी की मूर्तियां है।

मूलनायक के बाईं ओर :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है इस पर वि. सं. 1899 फाल्गुन सुदि 2 का लेख है।

(2) श्री अजितनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 1889 (1899) का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 1889 का लेख है।

दाईं ओर :

(4) श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। सम्भवतया सं. 1757 का है।

(5) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषान की 11'' ऊँची प्रतिमा है इस पर सं. 1889 फाल्गुन सुदि 2 का लेख है।

(6) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है इस पर सं. 1757 चैत्र वदि 6 का लेख है।

दोनों ओर आलिओं में (बाईं ओर) :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की कलात्मक स्फटिक की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

स्फटिक मूर्ति

दाईं ओर (प्रवेश के समय बाईं ओर)

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

इसी आलिए में (नीचे)

(1) श्री वासुपूज्य भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1751 का लेख है

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

बाहर आलिओं में :

श्री आदिनाथ भगवान धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है (दाएं)

श्री कुंथुनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

मध्य वेदी पर (रंगमण्डप में) :

श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 23'' ऊँची प्रतिमा है। (बीच में)

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है (बाएं) इस पर पर सं. 1501 का लेख है

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (दाएं) इस पर सं. 1505 वैशाख सुदि 11 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान की चरण पादुका श्याम पाषाण के पट्ट 17''X17'' पर है। इस पर अपठनीय लेख है। (सम्भवतया 1797 का लेख है)

श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण के पट्ट 21''X21'' पर बना है। इस पर अपठनीय लेख है।

बाएं : (कारनिस पर)

श्याम पाषाण के पट्ट पर

(1) श्री चौबीस तीर्थंकर है

(2) श्री नंदीश्वर द्वीप है

भूत, वर्तमान व भावी, चौबीसी के तीर्थंकर की माताएं बाल्यावस्था के रूप में अपने पुत्र को गोद मे लिए हुए ।

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

दाईं ओर : (कारनिस पर)

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है

बाएँ :

श्रैयांसनाथ भगवान की धातु की पंच तीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1555 वैशाख सुदि 3 का लेख है

बाईं ओर :

श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1505 वैशाख सुदि 3 का लेख है

श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अठनीय लेख है केवल 16... पढ़ने पर आता है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर 1874 (1674) का लेख है।

श्री श्याम पट्ट पर तीनों (भूत, वर्तमान व भविष्य) चौबीस तीर्थंकर बने हुए है।

श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

रंगमण्डप के गुम्बज कलात्मक व चित्रकारी से ओतप्रोत है।

बाहर :

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1636 का लेख है।

श्री पद्मप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1636 का लेख है।

सभामण्डप में कुल 9 कलात्मक तोरण बने हुए है तथा सभा मण्डप के बीच की देहरी के ऊपर कलात्मक तोरण बना हुआ है।

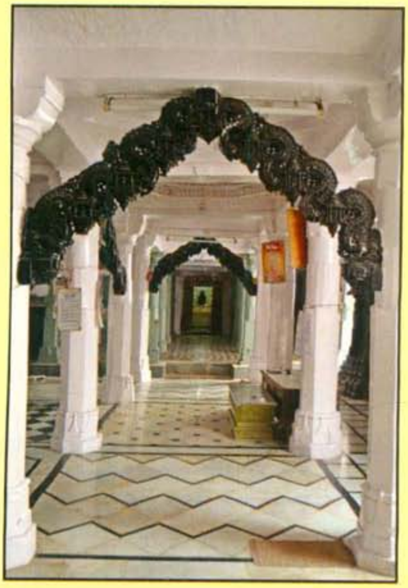

बावन जिनालय परिसर :

(1) श्री पद्भनाभ भगवान (भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर) का श्वेत पाषाण की 47'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1815 शाके 1680 का लेख है।

(2) श्री नमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2039 श्रावण शुक्ला 10 का लेख है।

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

(5) श्री वासुपूज्य भगवान की श्याम पाषाण की 9 '' ऊँची प्रतिमा है ।

(6) श्री शीतलनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री अभिनंदन भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(8) श्री श्रेयांस नाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

ये उक्त सभी प्रतिमा श्याम पाषाण की है व सभी पर किसी–किसी पर 1889 व किसी पर 1888 का लेख है।

बड़ी देवरी में :

(9) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

(10) श्री पद्मप्रभ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(11) श्री आदिनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(11) श्री विमलनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(12) श्री सम्भवनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(13) श्री वासुपूज्य भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(14) श्री मल्लिनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(15) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(16) श्री पद्मप्रभ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(17) श्री धर्मनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(18) श्री विमलनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(19) श्री आदीश्वर भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(20) श्री अनंतनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(21) श्री कुथुनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(22) श्री शीतलनाथ भगवान की 9 / 10'' ऊँची प्रतिमा है।

ये सभी प्रतिमाएं 9 या 10' ऊँची है व सभी प्रतिमा पर किन्ही पर सं. 1889 व किन्हीं पर 1899 का लेख है।

पीछे की ओर – बड़ी देहरी में :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 23' व परिकर सहित 41'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' व परिकर तक 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' व परिकर तक 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(1) श्री चंद्रप्रभ भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2502 का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2502 का लेख है।

बाहर दोनों ओर :

श्री गरूड़ यक्ष की श्याम पाषाण की ऊँची प्रतिमा है।

श्री निर्वाणी देवी (यक्षिणी) की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री चौमुखा जी श्वेत पाषाण का बना हुआ है इस पर सं. 1529 का लेख है जिसमें मुनि सुंदरसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठा का उल्लेख है।

(24) श्री ऋषभदेव (25) श्री अजितनाथ (26) श्री सुमतिनाथ

(27) श्री आदिनाथ (28) श्री अरनाथ (29) श्री अजितनाथ

(30) श्री मुनिसुव्रत (31) श्री श्रेयासनाथ (32) श्री पार्श्वनाथ (33) श्री अनंतनाथ

इन सभी प्रतिमाओं पर किसी पर 1889 या 1899 का लेख उत्कीर्ण है तथा श्याम पाषाण की है। इसके साथ साथ कोई 18'' व कोई 17'' ऊँची है।

बड़ी देवरी में :

(1) श्री नमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है (बाएं)

(4) श्री महावीर भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है (दाएं)

(5) श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 9'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

श्री शांतिनाथ भगवान की चतुविशंति 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1705 ज्येष्ठ सुदि.......का लेख है।

श्री श्रैयांसनाथ भगवान की चतुर्विशंति 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1512 का लेख है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री नमिनाथ की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 माह सुदि 5 का लेख है।

श्री चंद्रप्रभ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 माह सुदि 5 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख है।

श्री शांतिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख है।

श्री महावीर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री मुनिसुव्रत भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1495 का लेख है।

श्री बीस स्थानक यंत्र 9'' X 7'' का है। इसपर सं. 2051 का लेख है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 3.5'' का है।

श्री त्रिकोण यंत्र 4'' ऊँचाई का है।

श्री अष्टमंगल यंत्र 5.5 X 3.5'' का है। इस पर 2051 फाल्गुन सुदि प्रतिपदा का लेख है।

बाहर :

(1) श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

दीवार पर काँच में सम्मेतशिखर जी, अष्टापद, शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ पट्ट लगे है।

श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है ।

श्री महावीर भगवान की प्रतिमा है।

श्री अभिनंदन भगवान की प्रतिमा है।

श्री सुविधिनाथ भगवान की प्रतिमा है।

श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा है।

श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा है।

बड़ी देहरी में :

श्री सुविधिनाथ भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1659 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1541 का लेख है।

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1674 वैशाख वदि 13 का लेख है।

श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

गर्भगृह के सामने, प्रवेश द्वार के ऊपर :

(1) श्याम पाषाण का हाथी है। जिस पर तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की माता श्री मरूदेवी सवार (श्याम पाषाण की) है।

हाथी के पीछे :

श्री पुण्डरीक स्वामी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2030 ज्येष्ठ सुदि 10 का लेख है।

प्रवेश के समय दोनों ओर :

(1) श्री अधिष्ठायक देव 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री गणेश की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

प्रवेश द्वार से भीतर जाते समय दाईं ओर एक लेख लिखा है जिसका सारांश यह है : वि.सं. 1526 में महारावल श्री सोमदास के राज्य में बीसा हुमड़ समाज द्वारा प्रतिष्ठा श्री रत्नसूरि जी, उदयवल्लभसूरिजी के शिष्य श्री ज्ञान सागर सूरि जी ने कराई। उसके बाद सं. 1889 माघ शुक्ला 10 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। जिनालय, ध्वजा दण्ड एवं बिम्बों की प्रतिष्ठा वैशाख शुक्ला 3 की आचार्य श्री माणिक्यसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

अंतिम प्रतिष्ठा वि.सं. 2051 फाल्गुन शुक्ला 3 को आचार्य श्री विजयदेवसूरिजी, हेमचद्रंसूरि जी श्री ज्ञान सागरसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठा कराई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन शुक्ला 3 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर बीसा हुमड़ द्वारा संचालित श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर जिनालय संघ द्वारा की जाती है। मंदिर के साथ दुकानें व उपाश्रय होना चाहिए।

सम्पर्क सूत्र : श्री पूरणमल जी दावड़ा - 09414104706, श्री महेश जी दावड़ा, 09413118428

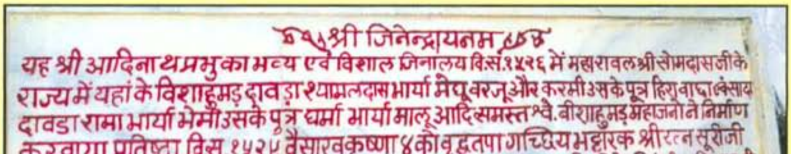

मंदिर में कलात्मक मुर्तियां

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर
डूँगरपुर

यह शिखर बंद मंदिर शहर के फौज बड़ला मोहल्ला में स्थित है। सूत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि यह मंदिर 300 वर्ष प्राचीन है। सुत्रों ने यह भी बताया है कि यह मंदिर ओसवाल परिवार द्वारा बनवाया गया था, वह परिवार कौन था ज्ञात नहीं, वर्तमान में नगर में ओसवाल परिवार के कम ही सदस्य है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की पीत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1917 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1917 का लेख है।

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्याम पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1917 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्विंशति 8'' ऊँची है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की चतुर्विंशति 4.5'' ऊँची प्रतिमा है ।इस पर सं. 1578 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1751 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1746 का लेख है।

(5) श्री सिद्धचक्रयंत्र चाँदी के पतरे पर 6'' गोलाकार है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

(6) श्री सिद्धचक्रयंत्र चाँदी के 2.7'' गोलाकार है।

(7)(8) श्री चांदी के यंत्र 4'' X 3'' व 3'' X 2'' के है।

(9) देव–देवी की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

(10) से (12) श्री यंत्र तीन है।

(13) व (14) श्री यंत्र ताम्बा के दो है।

(15) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

बाहर :

श्री भैरव की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है

श्री गणेश की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर सभा मण्डप में :

श्री सम्मेत शिखरजी, शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ के पट्ट है।

दरवाजे के ऊपर :

चरण–पादुका 10'' X 10'' श्याम पाषाण पट्ट पर स्थापित है। इसके किनारे वि.सं. 1917 शाक 1782 का लेख है। दरवाजे के बाहर श्याम पाषाण के हाथी है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक पूर्णिमा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख – श्री जैन श्वेताम्बर बीसा हुमड़ द्वारा संचालित श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर जिनालय संघ द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री पूरणमल जी दावड़ा – 09414104706

श्री महेश जी दावड़ा – 09413118428

श्री वासुपूज्य जिनालय (श्वे.) – चम्पापुरी

श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, डूँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर डूंगरपुर शहर के पुराने मोहल्ले में घाटी पर स्थित है। मंदिर के द्वार पर मंदिर शालाशाह द्वारा निर्मित होने का समय सं. 1312 वीर सं. 1782 का लेख लिखा हुआ। इस मंदिर की विशेषता यह है कि मंदिर का शिखर पवेरा पत्थर से बना हुआ है। मंदिर के गर्भगृह रंगमण्डप में काँच की जड़ाई की हुई है।

16 सोलह स्तम्भों पर भी काँच की जड़ाई का कार्य किया हुआ है। कलात्मक तोरण बने हुए है।

डूंगरपुर राज्य के राजा (महारावल) गोपीनाथ व उसके पुत्र सोमदास (समय वि.सं. 1483) थे। उस समय शालाशाह जैन ओसवाल वंश के मंत्री थे। वे शूरवीर, कर्मवीर, दानवीर थे। उनके शासन काल में डुंगरिया नामक उद्ण्डी भील रहता था। आस-पास के प्रदेश उसके अधीन थे।

डुंगरिया उद्ण्डी होने के कारण वह छोटे-मोटे उपद्रव किया करता था यहां तक शालाशाह की सुंदर कन्या से विवाह करने का प्रस्ताव कर दिया और शालाशाह के मना करने पर उसने जबरन ले जाने की घोषणा कर दी। ऐसे समय में शालाशाह ने विवेक के आधार पर दो माह का समय मांग कर महारावल की सहायता से डुंगरिया भील को मार दिया।

मरणोपरांत उसकी दोनो पत्नियां धनी व काली सती हुई। जिसकी छतरिया आज भी पहाड़ी पर विद्यमान है। इस पहाड़ी को धन माता की पहाड़ी कहा जाता है। स्थानीय लोगों की भी यही मान्यता है डूंगरिया भील के नाम से डुंगरपुर बसा है।

महारावल गोपीनाथ व सोमदास का गद्दीनशीन का समय वि.सं. 1483 से 1536 तक का था, इनके समय काल की गणना से सं. 1312 में निर्मित होना मेल नहीं खाता ।

यह घटना महारावल वीरसिंहदेव के समय की है। महारावल वीरसिंह देव की गद्दीनशीनी का भी समय वि.सं. 1343-1344 माना गया है। यह समय भी मंदिर निर्माण के समय से मेल नहीं होता है। अतः यह सम्भव है कि मंदिर शालाशाह के पूर्वजों ने बनवाया हो ।

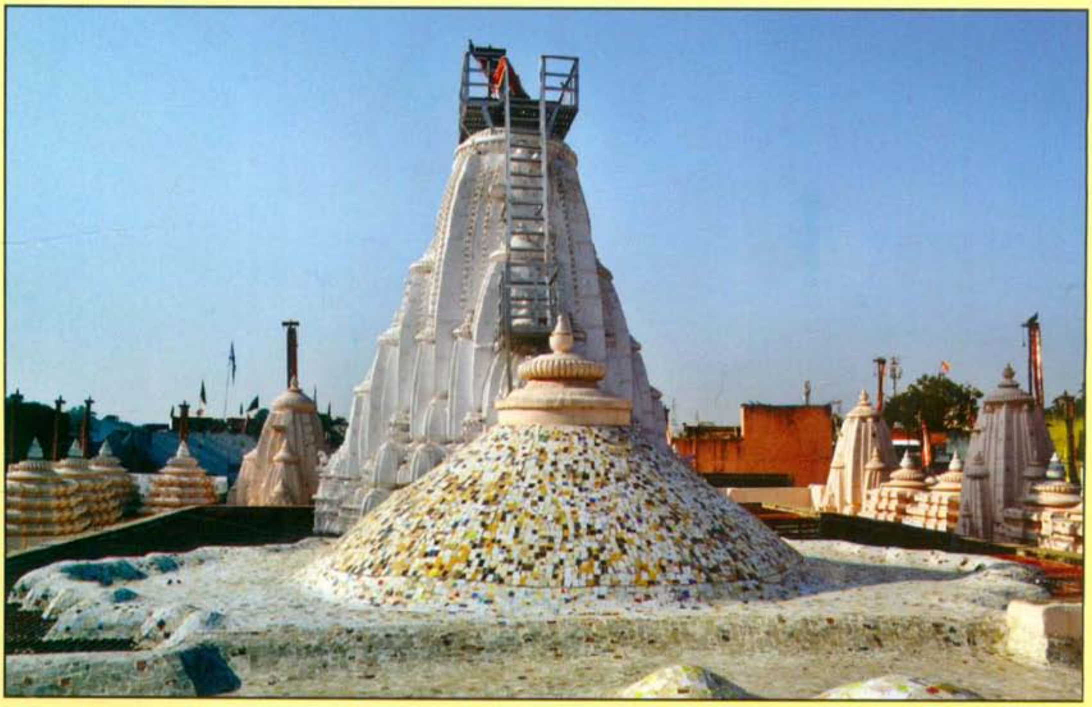

बड़वों की ख्यात के आधार पर महारावल वीरसिंह देव का समय कहीं पर सं. 1315 कहीं 1335 कहीं 1359 का लिखा है। डूंगरिया भील को मार कर डूंगरपुर बसाया और राजधानी बनाई। वि.सं. 1415 में महारावल डूंगरसिंह तो वीरसिंह देव का पौत्र था। प्राय: राजा महाराजा अपने ही नाम से नगर की स्थापना करते थे जैसे - उदयपुर, जयपुर, जोधपुर आदि।

इसी प्रकार से यह सम्भव है कि डूंगरसिंह ने अपने नाम से डुंगरपुर नगर बसाकर राजधानी बनाई हो। यह भी स्पष्ट है बड़ौदा (वटपद्र) की राजधानी वि.सं. 1359 तक होना निश्चित है। उसके बाद का कोई प्रमाण नहीं मिलता। ख्यात को सही माने तो सं. 1312 का समय वीरदेव सिंह का समय उचित प्रतीत होता है।

डूंगरपुर किसने बसाया कब बसाया यह विषय मेरे विषय सामग्री का नहीं हैं। मंदिर निर्माणकर्ता का नाम व समय को लेकर स्पष्ट किया है।

शालाशाह की प्रसिद्धि व ख्याति के कारण स्व ग्राम में विशाल मंदिर का कार्य प्रारंभ किया लेकिन उनकी मृत्यु हो जाने से पूर्ण नहीं हो सका। वर्तमान में वहां एक छोटा शिव मंदिर है।

सूत्रों के अनुसार शालाराज ने जीर्णोद्धार कराया । सं. 1525 में शालाराज ने आंतरी में जैन मंदिर का निर्माण कराया । शालाराज शालाशाह के वंशज है । अत: महारावल वीरसिंहदेव के समय में मंदिर निर्माण होकर प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई ।

यह संभव है कि उस समय प्रचलन परम्परा के आधार पर ख्यात पर अधिक महत्व दिया जाता था और महारावल वीरदेवसिंह का 1315 बताया गया तो यह संभव है मंदिर का निर्माण वि.सं. 1312 में हुआ हो जो सत्य प्रतीत होता है ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 11'' नाग तक 15'' परिकर तक 35'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 1964 चैत्र वदि (प्रतिपदा) का लेख है।

मूलनायक के दाएं :

(2) श्री अजितनाथ भगवान की धातु की 13'' मय परिकर तक 33'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री संभवनाथ की धातु की 13'' व परिकर तक 33'' ऊँची प्रतिमा है।

मूलनायक के बाएँ :

(4) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 13'' परिकर तक 33'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा हे।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ :

(1) बीस स्थानक यंत्र 9'' का गोलाकार है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र चांदी का 5'' गोलाकार है।

(3) से (6) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'', 5'' 4'' एवं 4.5'' का गोलाकार है।

(7) श्री अष्ट मंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

नीचे :

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की है।

रंग मण्डप का गुम्बज कलात्मक है ।

दोनों ओर आलिओ में (रंगमण्डप में) :

दाएँ :

(1) श्री अजितनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र तांबा का 13'' X 10'' का है।

(3) श्री ऋषि मण्डल यंत्र तांबा का 17'' X 14'' का है।

बाएँ :

(1) श्री श्रैयांसनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विशंति धातु की 13'' ऊँची है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान चतुर्विशंति 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(श्री वागड़ वीशा पोरवाल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक महासंघ डूंगरपुर की पारिवारिक दिग्दर्शिका के पृष्ठ 105) के अनुसार भी महारावल वीरसिंह देव की गद्दीसीनी वि.सं. 1339 में मानी है। लेकिन बड़ौदा में राजधानी होने का उल्लेख जिसमें महारावल वीरसिंहदेव का नाम

आता है जो एक शिलालेख में उत्कीर्ण है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि बड़ौदा से राजधानी 1359 तक थी उसके बाद कोई लेख उपलब्ध नहीं हुआ।

गर्भगृह के बाहर आलिओं में (बाएँ) :

श्री मुनिसुव्रत भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र तांबा का 16'' X 12'' का है

श्री पार्श्वनाथ यंत्र तांबा का 16'' X 12'' का है

श्री सिद्धचक्र यंत्र तांबा का गोलाकार 25''का है (भूमि पर) रंगमण्डप में

श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (कारनिस पर)

श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1705 का लेख है। देवी को देव ने ऊपर उठा रखा है।

श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 15' ऊँची प्रतिमा है। देवी को देव उपर उठा रखा है।

श्री पद्मावती देवी धातु की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

श्याम पाषाणी पट्ट पर भूत, वर्तमान व भावी चौबीसी के तीर्थंकर (बाल्यावस्था) के शिशु के रूप में गोद में लिए तीर्थंकर की माताएं का बना है।

सरस्वती देवी की धातु की प्रतिमा है। इस पर सं. 1453 का लेख है।

नव चौकी में :

बाहर दोनों ओर आलिओं में (गोखड़े में)

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है इस पर श्री विजयदेवसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1905 का लेख है।

बावन जिनालय परिसर मार्ग :

एक प्राचीन शिलालेख सं. 1671 वर्षे वैशाख वागड़ देशे का लेख है।

(1) समवसरण पट्ट श्वेत पाषाण का श्री ऋषभानन, चंद्रानंन श्री वर्धमान श्री वारिषेण विहरमान का है। प्रतिष्ठा होना शेष है।

(2) श्याम पट्ट 27'' X 20'' पर वर्तमान चौबीसी के तीर्थंकर प्रतिमा उत्कीर्ण है।

परिसर में :

(1) श्री सहस्त्राफणा पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की पीत पाषाण 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। यह प्रतिमा 40 वर्ष पूर्व नागेश्वर तीर्थ से लाई गई।

बड़ी देवरी में :

(4) श्री केसरियाजी (मूलनायक) श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

श्री सम्भवनाथ भगवान की (दाएं) श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1905 का लेख है। (बाएं)

(5) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(6) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री नवफणा पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री आदिनाथ भगवान के चरण–पादुका 17'' X 17'' के पट्ट पर है। इस पर सं. 1982 का लेख है।

(8) पार्श्वनाथ भगवान का समवसरण श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

श्री सिद्धचक्रयंत्र श्याम पाषाण का 16'' गोलाकार है।

बड़ी देवरी में (रंग मण्डप में)

29 देवरिया (आलिऐ में) बनी है जिनमें निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(3) श्री गणेश जी म. श्याम पाषण की प्रतिमा है।

(4) खाली

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(6) श्री सुविधिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(7) श्री संभवनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(8 से 12) खाली

(13) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(14) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(15) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की खड़ी (काऊसग्गीय) प्रतिमा है।

(16) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(17) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(18 – 22) खाली

(23) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(24) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(25) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(26 – 27) खाली

(28) श्री गौमुखयक्ष श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(29) श्री भैरव की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

पुनः आगे :

(9) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(10) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(11) श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(12) श्री मल्लिनाथ की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(13) श्री आदिनाथ भगवान की की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(14) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(15) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(16) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(17) श्री सिद्धचक्र यंत्र श्वेत पाषाण का 19''X19'' का है की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(18) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(19) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(20) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(21) श्री संभवनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(22) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(23 एवं 24) श्री गौतम गणधर श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर 2040 का लेख है। एक स्तम्भ पर सं. 1795 शिवसिंह विजयराजे का लेख है।

(25) श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 37'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है। (काउसग्गीय)

(26) श्री माणिभद्रयक्ष की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(27) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(28) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर के बाहर निकलते समय बाई ओर श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। यह प्रतिमा चमत्कारिक है। यह मुस्लिम बस्ती से घिरा हुआ है। कई वर्ष पूर्व इस प्रतिमा को कील लगाकर खुर्द–बुर्द करने का प्रयास किया। इस प्रकार का जघन्य व्यवहार किसने किया, जांच करने पर ज्ञात हुआ कि दो परिवार के बालको द्वारा यह कृत्य किया गया वे सभी बालक गम्भीर रूप से बीमार हो गए वे घर की आर्थिक स्थिति में अचानक परिवर्तन (कमजोर) होने लगे। जैनी श्रैष्ठि ने उन्हें क्षमा मांगने की सलाह दी। ऐसा करने पर बालक भी स्वस्थ हुए और व्यवसाय आदि में पुनः बढ़ोतरी होने लगी। तब से मुस्लिम समाज के सदस्य मंदिर की रखवाली भी करते है और नमन करते है।

इस घटना के बाद मंदिर को बाहर से जाली से बंद कर दिया है।

इस मंदिर में पांच पट्ट श्री गिरनार, नाकोड़ा, शिखरजी, शत्रुंजय व जैसलमेर तीर्थ के बने हुए है। मंदिर में एक भोयरा (तहखाना) है। यह भूतल के भीतरी भाग का मार्ग है जो महलों तक जाता है, ऐसा बतलाया गया है। महलों से महारानियों इसी मार्ग से आकर भगवान के दर्शन–वंदन करती थी।

इस मंदिर की 10 दुकानें है जो किराये पर दी गई है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक सुदि 15 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर बीसा पोरवाल सघ द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री हेमेन्द्र भाई महता-09352794588 एवं श्री मोहित जी महता-941402345

- **तीर्थंकर ओघो मुंहपत्ति नहीं रखते हैं-समवायांग सूत्र**
- **गौतम स्वामी मुंहपत्ति नहीं बांधते थे - विपाक सूत्रे-दुःख विपाक**
- **विक्रम संवत् 1708 में लवजी स्वामी ने मुंहपत्ति बांधने की प्रथा चलाई है।**

श्री महावीर भगवान का मंदिर
डूँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर श्री गंभीरा पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर परिसर में स्थित है। सूत्रों के अनुसार यह मंदिर करीब 600 वर्ष प्राचीन है। श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर पूर्ण बनने के पश्चात् भक्तों के लिए यह मंदिर बनवाया क्योंकि उस समय जैनों के यहां पर 700 घर थे। मंदिर के द्वार पर मंगलमूर्ति पर निम्न लेख है।

''संवत 1480 वर्षे पूर्णिमा पक्षे श्री हेमचंद्रसूरि शिष्य व लक्ष्मीचंद्र सूरिणी। महावीर प्रसाद। कारयिता गुरूश्रेयोर्थ।''

इस प्रकार एक शिलालेख भी द्वार पर लगा हुआ है। इससे यह मंदिर 600 वर्ष प्राचीन होना प्रमाणित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री महावीर भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान (दाएं) की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(3) श्री धर्मनाथ भगवान (बाएं) की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

उत्थापित अष्टमंगल यंत्र 5'' X 3'' का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

इस मंदिर में पूर्व में सं. 1994 में व बाद में सं. 2036 में जीर्णोद्धार हुआ था।

सभा मण्डप में सिद्धचक्र पट्ट बना हुआ है।

मंदिर परिसर में पांच मंजिला कुआ बना हुआ हे। जहां से कई वर्षो तक आस–पास की बस्ती वाले इसी कुएं के पानी का उपयोग करते थे। अब मंदिर परिसर को बंद कर दिया।

इस मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक सुदि 15 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर बीसा पोरवाल संघ, डूंगरपुर द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री हेमेन्द्र भाई, 09414102345, 09352794588

हस्तगिरी पर्वत पर आदिनाथ प्रभु की प्राचीन देहरी का दूर दृश्य

सभी सयाने एक मत

- भगवती सूत्र के प्रारम्भ में ''णमो बंभीए लिवीए'' ऐसा कहकर सुधर्मास्वामी गणधर ने श्रुतज्ञान की स्थापना (मूर्ति) को नमस्कार किया है।
- केलवा की अंधारी ओरी में तेरापंथी आचार्य भारमलजी की काष्ठ की खडी मूर्ति है।
- तुलसी साधना शिखर के प्रांगण में आचार्यश्री भारमलजी स्वामी जी पाषाणमय चरण पादुकाएँ स्थापित है।
- रूण (जिला नागौर) में स्व. युवाचार्य मिश्रीमलजी म. मधुकर की प्रेरणा से बनी हुई स्व. हजारीमलजी म. की संगमरमर की बडी मूर्ति है।
- जैतारण के पास गिरिगांव में स्थानक के गोखडे में स्था. मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म.सा. की मूर्ति है।
- जसोल (जिला बाडमेर) में तेरापंथी संत स्व. जीवणमलजी स्वामी की संगमरमर की मूर्ति है।

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर
डूँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर शहर के आदर्शनगर (वर्धमान, जैन कॉलोनी) में स्थित है। यह मंदिर 25 वर्ष प्राचीन है। मंदिर का खनन मुर्हत और शिलान्यास सं. 2045 माह शुक्ला 13 को हुआ।

बिबों (प्रतिमाओं) की प्रतिष्ठा सं. 2051 फाल्गुन शुक्ला 13 को आचार्य श्री देवसूरि जी व आचार्य श्री हेमचंद्रसूरि जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

मंदिर के तीनों ओर दरवाजे है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री सम्भवनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की मय परिकर के 27" ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23" ऊँची प्रतिमा है। (दाएँ)

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 23" ऊँची प्रतिमा है। (बाएँ)

इन तीनों प्रतिमाओं पर सं. 2051 फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व मंत्र :

(1) श्री संभवनाथ भगवान की 7" ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की 7" ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र 8" का गोलाकार है।

(4) श्री अष्टमंगल यंत्र 6" X 3" का है।

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5" ऊँची प्रतिमा है।

इन पांचों प्रतिमाओं व यंत्रों पर सं. 2051 का लेख है।

(6) श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्विशंति 11" ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1804 फाल्गुन सुदि का लेख है।

(7) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6" का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(8) श्री भक्तामर पट्ट ताम्बे का 14" X 13" का है।

दोनों ओर :

(1) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15" व नाग तक 19" ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। इन दोनों पर सं. 2051 का लेख है।

सभा मण्डप में :

(1) श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की 19" ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 14" ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(4) श्री नेमिसूरि जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 12" ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(5) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 19" ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(6) श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की 16" ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

मंदिर के साथ ही बना हुआ उपाश्रय है, प्रवचन हॉल, आराधना हॉल, नोहरा है। एक कुंआ भी है। इसके साथ–साथ मंदिर के पीछे व आगे की ओर छोटे व बड़े पार्क बने हुए है। ऐसा भी बताया गया है कि पार्क को छोटे–बड़े कार्यक्रम के लिए किराए पर दिए जाते है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर वीशा हुमड़ संघ की श्री वर्धमान नगर जैन सोसाइटी, डूंगरपूर की ओर से श्री कन्हैयालाल जी दावड़ा करते है। सम्पर्क सुत्र : 02962-230143

किले पर जिनालयों का दृश्य – जैसलमेर

ज्ञान भण्डार में जो पुस्तकें वे निरर्थक नहीं है।
उनके योग्य कोई न कोई जीव इस विश्व में है ही।
योग्य समय पर वे आ ही पहुंचेगे।
पुस्तकें स्वयं के योग्य पाठकों की प्रतीक्षा करती हुई भीतर बैठी हुई है।
– 'कहे कलापूर्णसूरी' से साभार

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर

डूँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर शहर से सागवाड़ा की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे स्थित है। मंदिर का निर्माण मुनि महाराज के आए स्वप्न के आधार पर हुआ श्याम पटट् पर निर्मित पादुका एक खेत में थी वहां से लाकर मंदिर क्षेत्र में श्री नित्यवर्द्धन सागर जी म.सा. की प्रेरणा से उनके ही प्रयास से भूमि आवंटन कराई और 101 रुपये जमा कराकर जमीन को अपने सुपुर्दगी में ली।

मंदिर निर्माण की सामग्री मंदिर के पास ही पड़ी खाली भूमि पर रखी और निर्माण करते समय भूमि का कुछ अतिक्रमण हो जाने से वह भूमि लीज की राशि जमा करा क्रय की गई। यह मंदिर 30 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 27'' व परिकर सहित 47'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 वैशाख शुक्ला 10 का लेख है।

बाहर :

(1) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। अपठनीय लेख है।

रंगमण्डप में :

(1) श्री सीमंधर स्वामी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र श्वेत पाषाण की 17'' X 17'' का है। (दाए) इन दोनों पर सं. 2040 का लेख है।

(3) श्री आंबिका देवी की श्वेत पाषाण की 21''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 चैत्र कृष्णा 13 का लेख है।

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17''ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(5) श्री गोतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11''ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(6) श्री चक्रेश्वरीदेवी की श्वेत पाषाण की 21''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 चैत्र कृष्णा 13 का लेख है । (बाएं)

उत्थापित – धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री ऋषिमण्डल यंत्र 17'' X 13'' का है । इस पर सं. 2040 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(4) श्री शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

(5) श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' X 2.5'' का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

(6) श्री नेमिनाथ भगवान की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री पद्मावती देवी की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर – सभा मण्डप में :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2053 का लेख है।

(2) श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 13''प्रतिमा है।

परिक्रमा – कक्ष में (पीछे) :

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री आदिनाथ भगवान की चरण पादुका श्याम पट्टी 17'' X 13'' पर स्थापित है। इस पर सं. 1829 चैत्र वदि 5 का लेख है। यह वही पादुका है जिसका विवरण ऊपर दिया है।

मंदिर परिसर में उपाश्रय, धर्मशाला, भोजनशाला, तीन हॉल, व छात्रावास के लिए कमरे है। पूर्व में छात्र रहकर अध्ययन करते थे। भोजन की व्यवस्था वर्तमान में बंद है।

मंदिर के बाहर पांच दुकाने है। जो किराए पर दी गई है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक पूर्णिमा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री नेमिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट द्वारा की जाती है। धर्मशाला की व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री हेमेन्द्र जी महता है। सम्पर्क सूत्र – 09414102345

नोट :

करीब 80 वर्ष पूर्व प.पू. मुनि श्री महेन्द्रविजयजी म.सा. व श्री पुण्यविमलजी म.सा. डूँगरपुर पधारे। दैनिक कार्य (शौच) के लिए पातेला तालाब की ओर गए वहाँ रायण वृक्ष के बीच एक देहरी देखी उन्होंने सोचा कि यहाँ पर चरण पादुका के अवशेष होना चाहिए तब उन्होंने श्रावकों से वार्ता की। उस समय के शासक से वार्ता की, अनुमति लेकर उस स्थान पर खनन कार्य प्रारंभ किया। वहाँ पर 39 धातु की प्रतिष्ठित प्रतिमाएं पार्श्वनाथ भगवान मंदिर में विराजमान कराई व एक चरण पादुका भी प्राप्त हुई जो इसी मंदिर में स्थापित है।

मन्दिर समूहों का दृश्य तलहटी, पालीताणा

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर
पुनाली

यह शिखरबंद मंदिर डूंगरपुर से 25 किलोमीटर दूर गांव में स्थित है। उल्लेखानुसार यह मंदिर वि.सं. 11वीं शताब्दी का निर्मित है। जीर्णोद्धार के समय पुनः सं. 1687 में प्रतिष्ठा होने का उल्लेख है।(जैन तीर्थ पृष्ठ 322)(जैन तीर्थ सर्व संग्रह पृ. 344) इसके अतिरिक्त ऐसा भी उल्लेख है कि वि.सं. 1421 से शाह सुजान जी द्वारा यह मंदिर निर्मित हुआ। मुगल आक्रमणों के आधार पर कई मूर्तियां खण्डित हो गई व और अन्य स्थान पर गृह मंदिर रूप में पूंजित होती रही। मूल प्रतिमा चमत्कारी व प्रभाविक होने के कारण पं.पू. पं. श्री पुण्य विमलजी म.सा की निश्रा में पुनः प्रतिष्ठा कराई और पूरे मंदिर में काँच की जड़ाई की हुई है, छतरीनुमा प्रवेश द्वार है। मंदिर को मूल रूप में नूतन बनाया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1657 का लेख है। (उल्लेखानुसार) व प्रतिमा पर सं. 1692 का लेख है जैसा कि उपर वर्णन किया है कि जिर्णोद्धार सं. 1887 में सम्पन्न होकर प्रतिष्ठा हुई । उस समय लेख सं. 1692 का उत्कीर्ण हुआ हो।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (बाएं)

बाहर

(1) श्री गौमुखयक्ष श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2016 का लेख है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2016 का लेख है।

रंग मण्डप में :

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2055 माघ शुक्ला 14 का लेख है।

श्री ताम्रयंत्र (श्री यंत्र) 18'' X 14'' का है।

श्री नवलखा पार्श्वनाथ की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

श्री अजितनाथ भगवान की 7''ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1617 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 4''ऊँची प्रतिमा है।

श्री तांबे का यंत्र 6.5 X 6.5'' का है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' का गोलाकार है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 10'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 1509 का लेख है।

श्री अष्टमंगल 6 X 3'' का है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 1494 का लेख है।

आलिए में :

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ की श्याम पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 13'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है । इस पर वि.सं. 2511 का लेख है।

श्री माणिभद्रयक्ष की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा दिनांक 16.1.2014 को श्री कुंदकुंदसूरी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

बाहर :

श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा दिनांक 16.1.14 को सम्पन्न हुई । मंदिर का जीर्णोद्धार वि.सं. 2061 पौष कृष्णा 12 को हुआ ।

मंदिर में श्री सम्मेत शिखर जी, राजगृही, शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

मंदिर के साथ उपाश्रय है

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन सुदि 3 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अरविंद जी पंचोली द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : मो. 09828823232

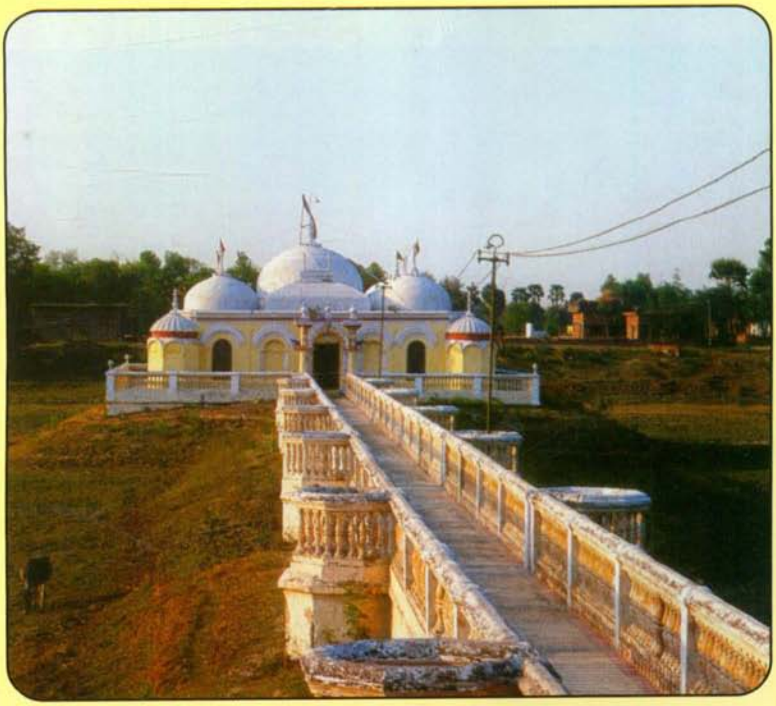

आकर्षक जल मंदिर – गुणाया जी

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर

रत्नगिरी, बनकोड़ा

यह शिखरबंद नूतन मंदिर है। इस नगर का प्राचीन नाम बनकोट भी रहा है।

इस मंदिर को निर्माण करने के लिए प.पू.पं. श्री पुण्य विमल जी म.सा. के जीवन काल में ही यह भूमि (151 एकड़ भूमि) केवल मात्र 151 रुपये जमा करा आवंटन कराई।

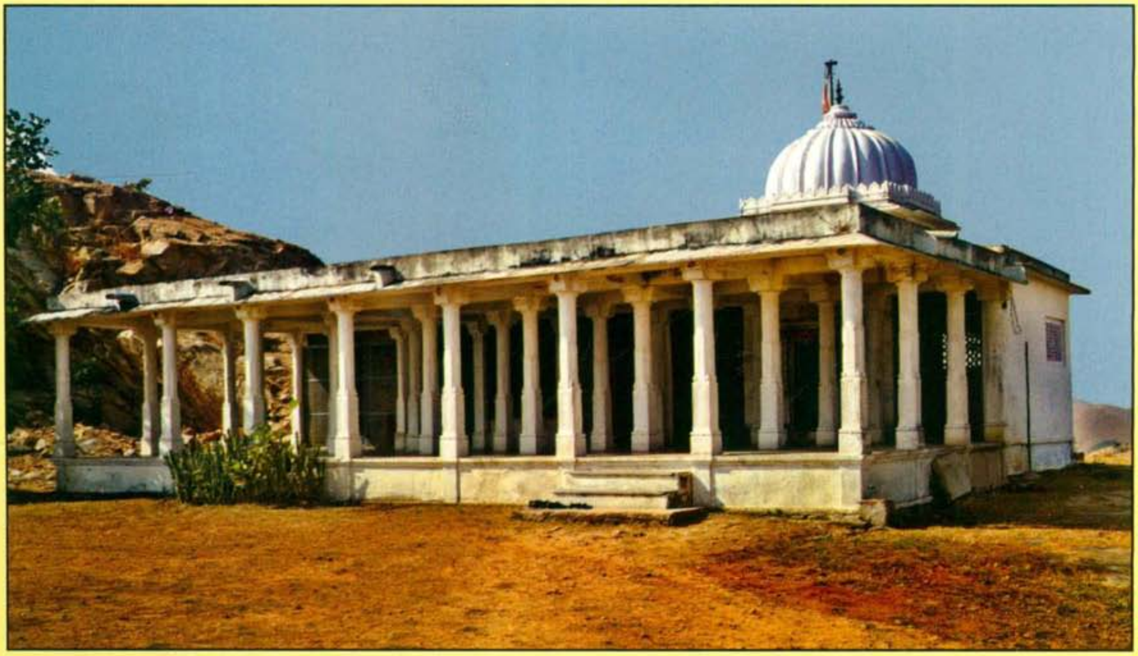

इस मंदिर में निम्न प्रतिमा स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं दिखाई दिया क्योंकि प्रतिमा पर लेप किया गया। यह प्रतिमा गोमती चौराया (राजसमंद) से लाई गई।

श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण की 17'' X 17'' की पट्टिका पर है। इस पर सं. 2034 का लेख है। (बाएं)

श्री चरण – पादुका श्वेत पाषाण की पट्टिका 22'' X 22'' पर स्थापित हे। इस पर सं. 2034 का लेख है। (बाएं)

जल मंदिर, पावापुरी सम्मेतशिखर जी तीर्थ के पट्ट पर बने हुए है।

पास में ही श्री शत्रुंजय तीर्थ, अष्टापद व सिद्धचक्र बने हुए है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ वदि 12 को चढ़ाई जाती है ।

सम्पर्क सूत्र : श्री चेतनलाल शाह–098288 95589

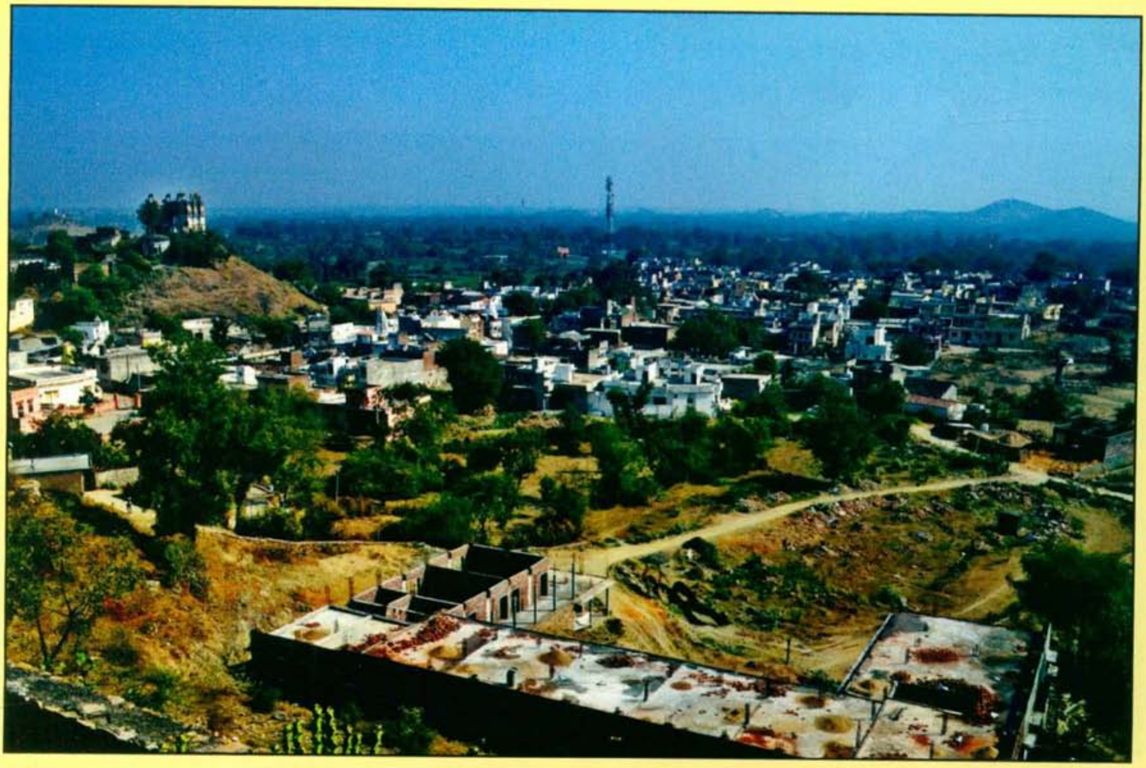

गुरू मंदिर पू. पं. श्री पुण्य विमल जी म.सा.

प.पू. पं. श्री पुण्य विमल जी म. सा. का बचपन का नाम पीताम्बर था, उनका जन्म वि.सं 1948 में हुआ। वे पाटीदार कुल के थे उनकी दीक्षा के साथ श्री पुण्यविमल जी के नाम से जाने गए। इनके पिता का नाम शंकरलाल व माता का नाम गंगाबाई था जो गुजरात के चाणस्मा जिले का एक गांव खेरसम के रहने वाले थे। गुरूदेव अंहिसा सत्य, चोरी न करना आदि बातें उनकी माँ से सुनी। किसी पिड़ित व्यक्ति के दुख को गुरूदेव सहन नहीं कर सकते थे। इन्हीं गुणों के आधार पर व जैन मुनियों की ओर आकर्षित होते रहे और एक दिन ऐसा आया कि (वि.सं. 1972 में) उन्होंने दीक्षा ग्रहण की।

साधु-जीवन पर्यन्त सिद्धान्त का पालन करते हुए, सभी पुण्य कर्म करते हुए वागड़ प्रदेश को अपना कर्म स्थली बताते हुए सुधारात्मक, धार्मिक कार्य करते रहे। उनके जीवन काल में उक्त दर्शाई गई जमीन आवंटित कराई और उसका नाम ''रत्नगिरी'' रखा और उन्होंने इच्छा प्रकट की कि उनका अंतिम कार्य इसी रत्नागिरी पर किया जाए उनका अंतिम चतुर्मास बनकोड़ा में हुआ और चतुर्मास के अंतिम दिन अंतिम विहार कार्तिक पूर्णिमा सं. 2029 को बनकोड़ा ग्राम से रत्नगिरि के लिए प्रस्थान किया। अंतिम विदाई स्थल पर आज उनका समाधि स्थल है जहां पर गुरूदेव की मूर्ति स्थापित है।

गुरू (जिनानंद) के नाम से अंग्रेजी माध्यम की पाठशाला संचालित है, अब पाठशाला का नूतन भवन निर्माणधीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माह वदि 12 को चढ़ाई जाती है। इस मंदिर की देख-रेख समाज कीओर से श्री चेतनलाल जी शाह द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : श्री सोहनलाल नाथुलाल ट्रस्ट, आसपुर, मो. 09828895589

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर
बनकोड़ा

यह शिखरबंद मंदिर करीब 1000 वर्ष प्राचीन है। बनकोडा नगर का प्राचीन नाम बनकोट नगर रहा है। मुस्लिम शासन में इस नगर की संस्कृति को क्षति हुई। उल्लेखानुसार इस नगर में 2 जैन मंदिर स्थापित थे। पड़ोस के ''जूना पादर' में खनन के समय श्री चंद्रप्रभ भगवान की प्रतिमा प्राप्त हुई। मंदिर निर्माण की दृष्टि से कुछ भूमि पहले से थी और कुछ भूमि धूलजी भाई कोठारी नि. बनकोड़ा ने भेंट के स्वरूप समाज को दी। रंगमण्डप बना हुआ है। मंदिर की व्यवस्था एवं व्यय राशि महारावल पूंजा ने दी ।

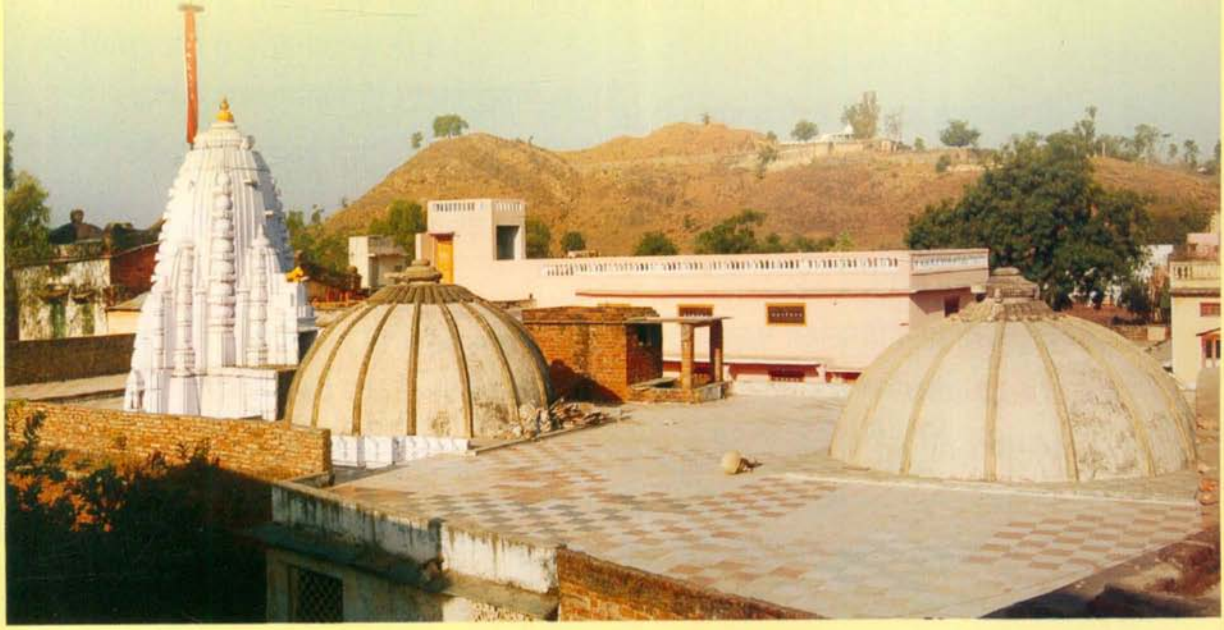

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री चंद्रप्रभ भगवान (मूलनायक) की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है (दाएं)। इस पर अपठनीय लेख है।

(3) श्री पद्मप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। अपठनीय लेख है। (दाएं)

(4) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख है। (बाएं)

(5) श्री नमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1376 का लेख है। लांछन लेख के अनुसार नहीं है। (बाएं)

(6) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(7) श्री विमलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(8) श्री विहरमान पट्ट श्वेत पाषाण का 19''X15'' का है। (बाएं)

(9) अष्टमंगल यंत्र 6''X3'' का है। इस पर सं. 1993 का लेख है ।

बाहर :

(1) श्री विजय यक्ष की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं) इस पर सं. 2041 माह सुदि 8 का लेख है।

(2) श्री ज्वालादेवी यक्षिणी श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं) इस पर सं. 2041 माह सुदि 8 का लेख है।

बाहर :

(1) श्री माणिभद्र यक्ष की देशी पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 9'' नाग तक व 17'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं) इसकी विशेषता : पक्षी के आकार पर बैठी है। अधूरे दस पट्ट बने हुए है।

बाहर - परिक्रमा क्षेत्र में :

(1) प.पू.पं. श्री पुण्य विमलजी म.सा. की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

धातु प्रतिमाएं एवं यंत्र :

(1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1486 का लेख है।

(2) श्री चंद्रप्रभ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(4) श्री शांतिनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2002 का लेख है।

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्रैयांसनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(8) श्री महावीर भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(9) श्री शांतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(10 एवं 11) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'', 6'' गोलाकार है।

(12) श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 1686 का लेख है।

(13) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1585 का लेख है।

(14) श्री जिनेश्वर भगवान की 2'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1746 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री सिद्धचक्रयंत्र 4'' का गोलाकार है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1625 का लेख है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

देव प्रतिमा 1.2'' ऊँची है।

वेदी बनने पर चौमुखा जी है। प्रतिष्ठा होना शेष है।

मंदिर के साथ 10 दुकानें है। साधु–साध्वियों के लिए अलग अलग उपाश्रय है, आयम्बिलशाला व भोजनशाला भी है।

वार्षिक ध्वजा माह सुदि 12 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री चेतनलाल जी शाह करते है।

सम्पर्क सूत्र : 09828895589, छोटालाल भूपतावत - 0992555408

ओसवाल जाति का इतिहास

वीर संवत् 70 में ओसीयां के नागरिकों को मांस, शराब आदि छुड़वाकर आचार्यश्री रत्नप्रभसूरिजी म.सा. ने ओसवाल जैन बनाए थे। उसी वर्ष ओसवालों ने जैन मंदिर का ओसिंया में निर्माण करवाया था। इसलिए सभी ओसवाल मंदिर मार्गी है।

– पार्श्वनाथ परम्परा के इतिहास में से साभार

श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर
बनकोड़ा

यह मंदिर 70 वर्ष प्राचीन है। यहां पर बाहर से आकर बसे लोगों ने यहां मंदिर की आवश्यकता समझी और उन्होंने मिलकर अजितनाथ भगवान का मंदिर बनवाया और दर्शन पूजन कार्य चलता रहा

लेकिन कुछ विगत वर्षों से यह अनुभव हुआ या कराया कि मंदिर छोटा है – उसका क्षेत्र बढ़ाया जाए। मंदिर के पीछे 23'' x 23' फीट जमीन 5.00 लाख में क्रय कर प्राचीन मंदिर को जमीनदोज कर नूतन मंदिर बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। नूतन मंदिर निर्माण 1 करोड़ रूपया में करने का प्रस्ताव है। करीब 60 लाख व्यय हो चुका है।

वर्तमान में सभी प्रतिमाएं एक कमरे में अस्थायी क्रम से विराजमान है। यहां पर निम्न प्रतिमाएं विराजित है :

(1) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1994 वैशाख सुदि 5 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री महायक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(6) प.पू.पं. श्री पुण्य विमल जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(1) ताम्र सिद्ध चक्र यंत्र 17'' X 14'' का है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 9' ऊँची पंचतीर्थी है।

(3) श्री सिद्ध चक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है।

(4) श्री अष्ट मंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

(5) श्री जिनेश्वर भगवान का गोलाकार 2' पतरा का है।

मंदिर के साथ दो दुकानें एक उपाश्रम है एक कमरा है।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा होना शेष है। इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री विनोद जी भोमावत करते है। सम्पर्क सूत्र : 9828153577

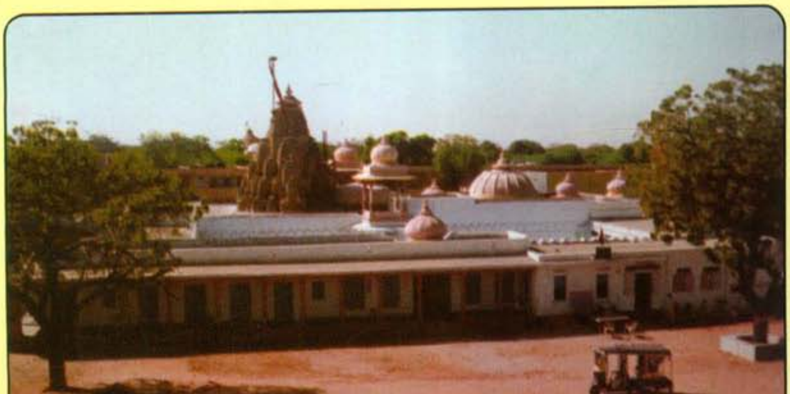

श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ मन्दिर–मेड़ता रोड

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर

पुँजपुर

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 45 किलोमीटर दूर गांव में स्थित है। यह ग्राम महारावल पूंजा ने बसाया था। जिनका समयकाल 1666 - 1714 का है। इससे यह तात्पर्य है कि ग्राम 400 वर्ष प्राचीन है।

ग्राम बसते ही काबजा ग्राम से व्यापार के लिए जैन श्रेष्ठिगण भी आकर बसे। अपने दर्शन वंदन, पूजा के लिए जैन मंदिर बनाया प्रारम्भ में 17 वीं शताब्दी में श्री शाँतिनाथ भगवान का मंदिर बना,

प्रतिष्ठा कराई। तत्पश्चात् साधु भगवंत की सलाह थी कि इस मंदिर में शांतिनाथ की प्रतिमा न होकर चंन्द्र प्रभ भगवान की प्रतिमा होनी चाहिए और वि.सं. 1984 में श्री चंद्रप्रभ भगवान की प्रतिमा विराजमान कराई, इसके बाद ऐसा बताया कि ग्राम में अशांति होने लगी तो तीन आचार्यों से वार्ता कर तीनों की एक सहमति थी कि ग्राम में श्री सम्भवनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान होना चाहिए। इस आधार पर संभवनाथ भगवान की प्रतिष्ठा वि.सं. 2061 में सम्पन्न हुई। पूर्व के मूलनायक मंदिर परिसर में ही मूलनायक के रूप में विराजमान कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री संभवनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2501 माह सुदि 6 का लेख है। (बाएं)

गर्भ गृह व रंगमण्डप में काँच की जड़ाई की हुई है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'' गोलाकार है।

(4) श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 2.5'' का है।

बाहर आलिओं में :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2501 का लेख है।

बाहर बड़ी देवरी में (बाएं) मूलनायक :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1761 का लेख है।

(2) श्री मल्लिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। लेख अस्पष्ट है। (दाएं)

3) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

तॉंबे का यंत्र 18'' X 14'' का है।

तॉंबे का यंत्र 6'' X 6'' का है।

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 का लेख है।

बड़ी देवरी में (दाएं) :

(1) श्री चंद्रप्रभ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2501 का लेख है। (बाएं)

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (दाएं)

श्री विजय यक्ष श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री ज्वाला यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री माणिभद्रवीर की **केवल चेहरा** श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर सभामण्डप में (दाएं) :

(1) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (मूलनायक)

(2) श्री आनंद सागर सूरि (सागरानंदसूरि) म.सा. की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

(3) श्री पुण्य विमल विजय जी म.सा. का श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 का लेख है। (दाएं)

इन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा सं. 2061 पौष शुक्ला 6 शनिवार को पं. श्री मृदुरत्न सागर जी म. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

(बाएं) :

(1)श्री लक्ष्मीदेवी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(2)श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

(3)श्री सरस्वती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

जिनालय परिसर में : शत्रुंजय, सिद्धचक्र, गिरनार, अष्टापद, सम्मेत शिखर व अंचलगढ़ (आबू) दरवाजे के ऊपरी भाग में एक बड़ी छतरी बनाई है। जहां पूर्व के मूलनायक को स्थापित करने का प्रस्ताव था जो बाद में अस्वीकार कर दोनों ओर देवरिया बनाकर मूलनायक के रूप में स्थापित कराए।

अब छतरी में चौमुखा जी स्थापित करने का प्रस्ताव है।

इस मंदिर का जीर्णोद्धार के लिए 25 लाख स्वीकृत हुए । आनंदजी कल्याणजी की पेढ़ी से 7 लाख प्राप्त हुए उसमें से 6 लाख छतरी निर्माण में व्यय हुए। शेष मंदिर में खर्च हुए।

शेष राशि आनंद जी कल्याण जी की पेढी से प्राप्त नहीं हुए है जबकि 7 लाख का उपयोगिता प्रमाण पत्र भेज दिया है।

मंदिर के साथ दो दुकाने है, नोहरा है, दो उपाश्रय साधु-साध्वी के लिए है। एक का निर्माण हो रहा है। राशि के अभाव में कार्य रूका हुआ है।

वार्षिक ध्वजा पोष शुक्ला 6 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सूरजमल जी कोठारी करते है।

सम्पर्क सूत्र : 9460582561, शशिकांत जी - 9828451301

पूंजपुर में अन्य प्राचीन स्थल दर्शनीय है (1) विष्णु मंदिर (2) प्राचीन सूर्य मंदिर

श्री जीवित स्वामी मन्दिर—महुवा

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर
बड़ौदा

यह विशाल शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 40 किलोमीटर दूर बस स्टेण्ड के पास स्थित है। इतिहास के आधार पर इस नगर का प्राचीन नाम ''वटपद्र मेघपुरपतन भी बताया गया है। वागड़ प्रदेश के प्राचीनकाल में क्षत्रप, महाक्षत्रप परमार वंश के राजा थे और धीरे-धीरे इन्हीं के वंश के शासक रहे। गुहिल वंश के प्रथम शासक रावल सामंतसिंह का शासन (वि.सं. 1228-36) में

परमार शासकों को परास्त कर वागड़ पर अधिकार प्राप्त किया।

सामंतसिंह, चित्तौड़ छोड़कर आहड़ (उदयपुर) होते हुए वटपद्र आया और अपने मंत्री कर्मसिंह महता के सान्निध्य में वटपद्र को राजधानी बनाई। चौलुक्य परमार वंशी राजा यशोभद्र इस प्रदेश के राजा थे उन्होंने जैन धर्म अंगीकार कर जैनाचार्य से दीक्षा ग्रहण की और यशोभद्रसूरि नाम से जाने गए उस समय का यह मंदिर है लेकिन अल्लाउद्दीन खिलजी की सेना चित्तौड़ से गुजरात की ओर बढ़ते हुए वागड़ की राजधानी वटपद्रक पर भी आक्रमण किया और मंदिर व सांस्कृतिक वैभव को क्षति पहुंचाई।

जैन इतिहास में इस नगर का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। वटपद्र राजस्थान-मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ होने से एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

माण्डवगढ़ के मंत्री पेथडशाह का इस नगर में संघ लेकर आने का उल्लेख है। (वि.सं. 1340 मे रचित सुकृतसागर ग्रंथ द्वारा रत्नमण्डन गणि) सं. 1427 में श्री जयानंद सूरि द्वारा रचित वागड़ प्रवासिक गीतमाला के अनुसार यहां पर 5 जैन मंदिर थे।

वर्णित मंदिर जो खण्डित था उसको नूतन रूप में तैयार करवाया गया।

धुलेवा ग्राम में विराजित केसरिया जी की प्रतिमा वि.सं. 928 में यहां से एक पीपल के पेड़ के वहां खनन से प्रगट हुई। जहां पर आदिनाथ भगवान के चरण पादुका स्थापित है। अतः यह मंदिर 1000 वर्ष पूर्व का है। वर्तमान का मंदिर 50 वर्ष प्राचीन है।

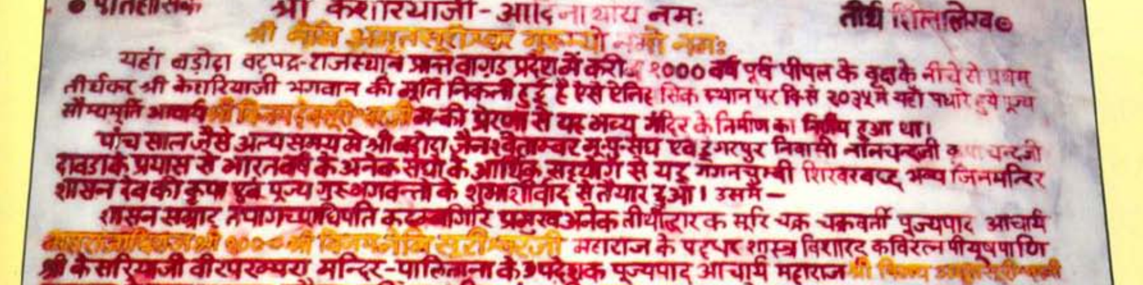

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री ऋषभदेव भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 43'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2505 माघ शुक्ला 5 का लेख है। परिकार पाषाण का है।

मूलनायक के दोनों ओर :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 31'' ऊँची काउसग्गीय प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 31'' ऊँची काउसग्गीय प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6.5'' का है।

बाहर :

(1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरीदेवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर (दाएँ) रंगमण्डप में :

श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2038 का लेख है।

श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' प्रतिमा है (दाएं)

श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है (बाएं)

श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 33'' ऊँची प्रतिमा है (बाएं)

बाएँ :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री मल्लिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1366 का लेख है।

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

श्री महावीर भगवान की श्याम पाषाण की 33'' ऊँची प्रतिमा है।

पीछे :

एक श्याम पट्टी की 17''X17'' की चरण पादुका स्थापित है इसके किनारे वीर सं. 2448 का लेख है।

एक मंदिर (देवरी) बना हुआ है, उसमें :

(1) श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 41'' व नाग तक 46'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है।

(2) श्री नेमिनाथ भगवान की भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री नागेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 13'' व नाग तक 16'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है।

एक पृथक छतरी में :

श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2538 का लेख है।

श्री प्राचीन चरण पादुका श्याम पट्टिका पर 6'' के स्थापित है।

मंदिर में एक लेख लिखा है कि 2000 वर्ष पूर्व बडौदा वटपद्र डुँगरपुर राज्य की प्राचीन राजधानी थी।

मंदिर में सम्मेत शिखर जी शत्रुंजय तीर्थ के पट्ट हैं

मंदिर के दोनों ओर दरवाजे है। तीन दरवाजे है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर के परिसर में 3 दुकानें है जो किराए पर दी हुई है। एक बोरवेल (कुआँ) है।

पास में बहुत बड़ा भूखण्ड (जमीन) पंचायत से क्रय की जिसमें चार दुकाने बनी है। 10 दुकाने बनाने की योजना है। खाली भूखण्ड पर भोजनशाला, धर्मशाला, उपाश्रय, आदि निर्माण कराने का प्रस्ताव है।

इस मंदिर की देख-रेख समाज की ओर से श्री अशोक जी जैन (09772681959)

विशेष सम्पर्क सूत्र : संतोष जी भूपतावत - 09983447376

विशेषता :

इस नगर में 84 जैन मंदिर, 84 कुएं, चौरासीमल राजा, पांच हनुमान जी मंदिर, एक विष्णु का मंदिर एवं कलात्मक प्राचीन शिव मंदिर है । खण्डहर भी देखे जा सकते हैं। एक गुफा अंदर तक जाती है ।

इस नगर में जैनाचार्य जिनदत्तसूरिजी, यशोभद्रसूरि, श्री हेमचन्द्रसूरि जी म.सा. व श्री देवसूरि जी यहां आए थे।

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर
बड़ौदा

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 40 किलोमीटर दूर ग्राम के बीच में स्थित है। प्रारम्भ में इस मंदिर में श्री नेमीनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई जैसा कि मंदिर परिसर में एक खण्डित परिकर के पबासन पर वि.सं. 1196 माघ वदि 2 का लेख है । यही संवत मूल मंदिर के शिखर पर भी अंकित है । महत्वपूर्ण यह है कि एक

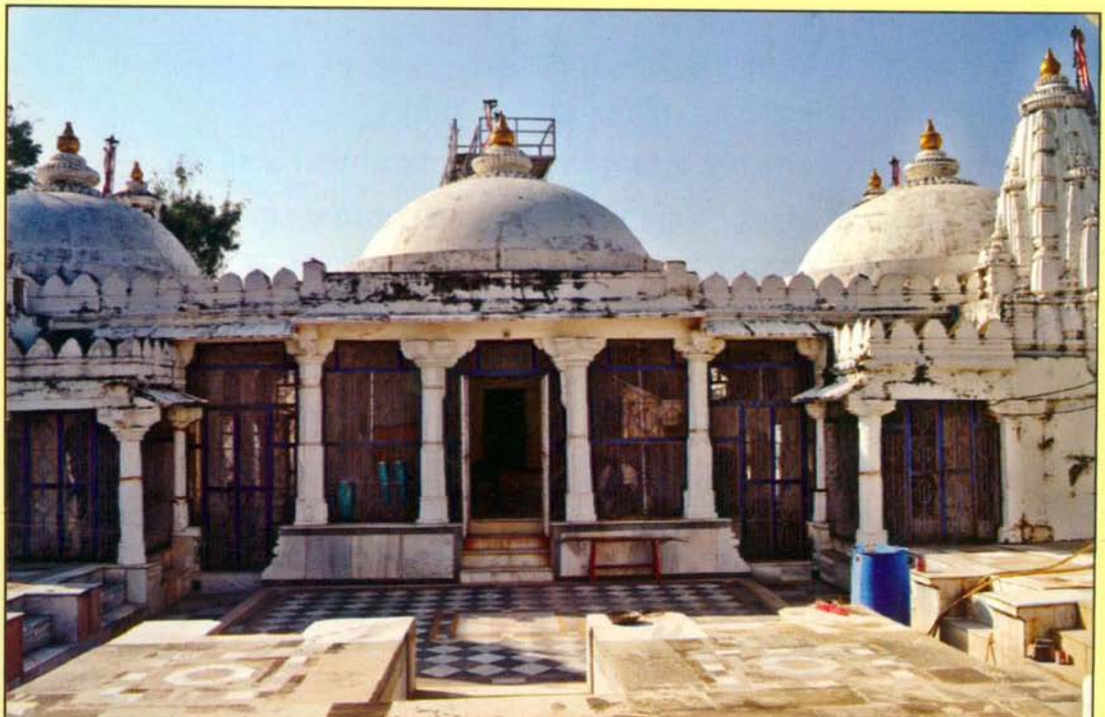

प्रतिमा पर सं. 1051 का लेख उत्कीर्ण है जो अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है । प्रतिमा किस तीर्थंकर की है ज्ञात नहीं है ।

इसके अतिरिक्त वि.सं. 1352 ज्येष्ठ सुदि 5 बुध का लेख एक देहरी पर अंकित है तथा वि.सं. 1575 वर्षे वैशाख सुदि 7 बुधवासरे का लेख है जो संभावतया जिर्णोद्धार का लेख है । मूलनायक श्री नेमीनाथ भगवान के पश्चात् सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान कराई जिसका लेख वटपद्र नगरे सुमतिनाथ चेत्य वि.सं. 1697 वर्षे आषाढ़ सुदि 2 का है । एक चरण पादुका के पट्ट के किनारे पर वि.सं. 1697 का लेख है जिसमें महिमा सागरजी की चरण पादुका होने का उल्लेख है ।

श्री सुमतिनाथ भगवान का प्राचीन पबासन को कोबा तीर्थ (अहमदाबाद) के संग्रहालय में ले जाने लगे । तब समाज द्वारा असहमति होने से नहीं ले जाने दिया लेकिन वह परिकर उपलब्ध नहीं है। ऐसा सूत्रों ने बताया ।

इसके बाद पौरूषादानीय पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। वर्तमान में प्राचीन देशी पत्थरों से बना शिखर विद्यमान है। यह प्राचीन तीर्थ रहा है। इस परिसर का निर्माण वि.सं. 1196 में माघ सुदि 2 में हुआ। यह मंदिर 7 शिखरीय, 27 देहरिया युक्त मंदिर है जिसका वर्णन यतीन्द्र विहार दिग्दर्शन में है । इस मंदिर का वि.सं. 2011 वैशाख सुदि 11 को जीर्णोद्धार कराया गया। इस क्षेत्र में चारों ओर अनेक कलात्मक खण्डहर दिखाई देते है। मंदिर में कुछ प्रतिमाओं पर सं. 1336 के लेख उत्कीर्ण है। मंदिर में प्राचीन वीस विहरमान व तीर्थंकर कल्याणक पट्ट है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) 27'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा विसं. 2041 वैशाख सुदि 11 को हुई।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1904 ज्येष्ठ सुदि प्रतिपदा प्रतिष्ठित श्री देवेन्द्रसूरीजी व हेमचन्द्रसूरीजी का लेख है। (बाएं) प्रतिमा को आदिनाथ भगवान बोलते है।

(3) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2028 वैशाख सुदि 10 का लेख है। (दाएं)

आलिओं में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इन भगवान को साधारण बोलचाल में श्री सुपार्श्वनाथ भगवान कहा जाता है ।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इन भगवान को साधारण बोलचाल में श्री सुपार्श्वनाथ भगवान कहा जाता है। उक्त दोनों प्रतिमाएँ दिनांक 11.6.1995 को खनन से प्राप्त हुई।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवानकी 5'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' X 4'' का है।

बाहर आलिओं में :

(1) श्री षण्मुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री विजया दक्षिणी की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

दाएं (रंग मण्डप में) :

(1) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1336 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1336 का लेख है।

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1336 का लेख है।

(4) श्री मल्लिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री अभिनंदन भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

(6) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्राचीन प्रतिमा है जो खनन से प्राप्त हुई इसको श्री महावीर भगवान के नाम से नमन किया जाता है।

(7) श्री चौबीस तीर्थंकर कल्याणक पट्ट 17'x17' के श्याम पाषाण पट्ट पर स्थापित है। नीचे एक ओर गौतम स्वामी व दूसरी ओर जिनचन्द्रसूरी (हाथ जोड़ते) हुए की प्रतिमा बनी है । इस पर विक्रम संवत 1364 वैशाख सुदि 5 का लेख है ।

बाएं :

श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 33'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1359 माघ वदि 12 गुरौ का लेख है।

उत्थापित धातु / पाषाण की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' का गोलाकार है।

(4) श्री अष्टमंगल यंत्र 4'' X 3'' का है।

(5) श्री जिनेश्वर भगवान शांतिनाथ (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर 1575 का लेख है ।

(6) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 माह सुदि 3 का लेख है। (दाएं)

(7) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं 1885 का लेख है। (बाएं) सरसुत समरसिंह करापित

श्री अंबिका देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री विहरमान (20) भगवान का श्याम पाषाण की 17''X 17'' की पट्टी पर बने है। इस पर सं. 1367 फाल्गुन सुदी 5 का लेख है।

बीच में :

वेदी पर समवसरण पाषाण का 25'' ऊँचा है।

बाहर (मंदिर में प्रवेश के समय बायें) बड़ी देवरी में :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 17'' व नाग तक के 23'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इसके पबासन पर सं. 1573 का लेख है। बाद में श्री देवेन्द्रसूरिजी ने प्रतिष्ठा कराई इस पर सं. 1904 ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा प्रतिष्ठित अंजनशलाका साथे महावीर व आदिनाथ की प्रतिष्ठा सम्पन्न करने का लेख है। द्वारा श्री भट्टारक श्री देवेन्द्रसूरीजी *वटपद्र नगरे मासोतममासे शुभ मासे शुक्ल पक्षे सं. 1904 वर्षे ज्येष्ठ सुदि एकम प्रतिपदा भृगवास प्रतिष्ठितमं समस्त पंच संघे* । यह प्रतिमा पूर्व में मुलनायक के रूप में पूजित रही है।

(2)श्री मल्लिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1328 का लेख है।

(3) महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

श्री पद्मावती की धातु की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाणकी 17'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री पार्श्व यक्ष श्वेत पाषाणकी 13'' का है।

एक पाषाण पट्टी पर 27'' X 11'' की दो जोड़ी पादुका स्थापित है।

देवरी में – श्याम पाषाण की 16 X 9'' की पट्टी पर दो पादुका जोड़ी स्थापित जिसमें से एक आदिनाथ व एक महावीर भगवान की है। एक पांव खण्डित है।

अलग : श्री धर्मनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। घीसा हुआ अपठनीय लेख है।

बाहर – बाएं :

(1) श्री महावीर भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1904 ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा का लेख है।

(2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1336 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है। लांछण स्पष्ट नहीं है।

अलग देवरी :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

अलग

श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख है।

विशेषता :

(1) 24 तीर्थंकर कल्याणक पट्ट पाषाण पर अंकित है। दोनों ओर नमन करते हुए। इसे श्री जिनचन्द्र सुरि म.सा. द्वारा वि.सं. 1364 में प्रतिष्ठित है।

(2) वि.सं. 1335 श्री पेथड़शाह द्वारा आचार्यदेव श्री धर्मसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में वटप्रद से शंत्रुजय तक संघ निकाला ।

(3) 20 विरहमान पट्ट श्याम पाषाण का है।

(3) मंदिर के बाहर एक चबूतरा बना हुआ हैं जहां पर पीपल का पेड़ भी है। यहां पेड़ के नीचे से

खनन के समय श्री केसरिया जी की प्रतिमा प्रगट हुई जो धुलेवा में विराजित है। इस स्थान को श्रद्धालुगण दर्शन–वंदन करते हैं और मनोकामना मांगते हुए नाचते है।

इस स्थल पर एक देवरी पर पादुका जोड़ी स्थापित है।

नोट : श्री पार्श्वनाथ (विमलनाथ) मंदिर के पास पहाड़ी पर प्राचीन वटपद्र की राजधानी रही है । समय काल के साथ–साथ वहां पर कोई प्राचीन अवशेष नहीं है क्योंकि डूंगरपुर राजधानी स्थानान्तरित होने से व देखरेख नही होने के कारण खण्डहर की सामग्री नगरवासी अपने निजी प्रयोग के लिए ले जाते रहे। ये अवश्य है कि नीचे की ओर (तलहटी) पर सेना निवास करती थी जिसको घोड़ाफला कहते हैं। वहां प्राचीन भवन विद्यमान है जिसमें वर्तमान में राजकीय विद्यालय संचालित है कहा जाता है कि मंदिर में जो तहखाना है उसमें जो मार्ग है वह महलों तक जाता था जहां से महारानियाँ दर्शन वंदन करने आती थी ।

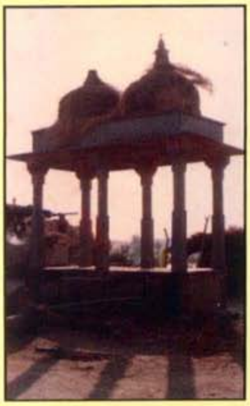

तालाब :

तालाब के किनारे की छोटी पहाड़ी पर दो अतिप्राचीन छतरियां बनी हुई है जिसमें पूर्वाचार्य (यति) के चरण पादुका स्थापित है। इसके किनारे लेख उत्कीण है जो घीसा होने के कारण अपठनीय है । इसके सामने दो मंदिर के गुम्बज भी दिखाई देते हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि यहां पर जैन मंदिर रहे होंगे। यह पहाड़ी क्षेत्र जैन समाज की होना बताया गया है लेकिन देखरेख के अभाव में अतिक्रमण हो रहा है । उल्लेखानुसार प्राचीनकाल में इस नगर में 5 मंदिर थे ।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर के साथ 18 बीघा जमीन है जो पुजारी को दी हुई है। मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अशोक जैन करते है।

सम्पर्क सूत्र : श्री नाथूलालजी उपाध्याय-07665487510,

श्री संतोष जी भूपतावत 09983447376, श्री धर्मेन्द्र जी कोठारी (09828152428),

श्री जयंतिलाल मेहता-0989673188

नोट : इस मंदिर का अब जिर्णोद्धार करने का प्रस्ताव है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर
काबजा

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 45 किलोमीटर दूर (वाया पुंजपुर) स्थित है। यह मंदिर करीब 800 वर्ष प्राचीन होना बताया गया। पूर्व में यहां जैनों की घनी बस्ती थी। महारावल पूंजा द्वारा पूंजपुर बसने के कारण अधिकतर जैन परिवार वहां जा बसे। वर्तमान में यहां दो परिवार ही रहते हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। परिकर बना हुआ है। इसके पीछे सं. 1241 का लेख है।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2038 का लेख है। (दाएं)

श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (बाएं)

नीचे :

श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1904 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ :

(1) श्री वासुपूज्य भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1530 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' X 5'' का है।

(3) श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' X 7.25'' का है।

बाहर :

(1) श्री गौमुख यक्ष श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। नेमिनाथ (गिरनार) पट्ट है।

मंदिर की जमीन है जो पुजारी के पास है। इसी भूमि की आय से ही मंदिर का दैनिक खर्च होता है। कुल जमीन की जानकारी होनी चाहिए।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से कुलदीप कुमार सुखलाल जी करते है।

सम्पर्क सूत्र : 09982924046

श्री पंचासरा का विख्यात मन्दिर – पाटण

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर

माल

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 50 किलोमीटर दूर स्थित है। इसी ग्राम से 5 किलोमीटर दूर पतलासा ग्राम है। वहां पर घनी जैन बस्ती थी लेकिन जैन व्यापार के लिए पलायन कर गए, यहां कोई भी जैन परिवार नहीं रहे तो माल ग्राम के जैन श्रेष्ठिगणों ने इस ग्राम में वि.सं. 1927 में मंदिर का निर्माण कराया। उल्लेखानुसार पतलासा ग्राम का मंदिर करीब 600 वर्ष प्राचीन बतलाया। उल्लेखानुसार मूल प्रतिमा पर वि.सं. 1396 का लेख है। पतलासा के मंदिर के साथ कुछ जमीन भी होना बताया है।

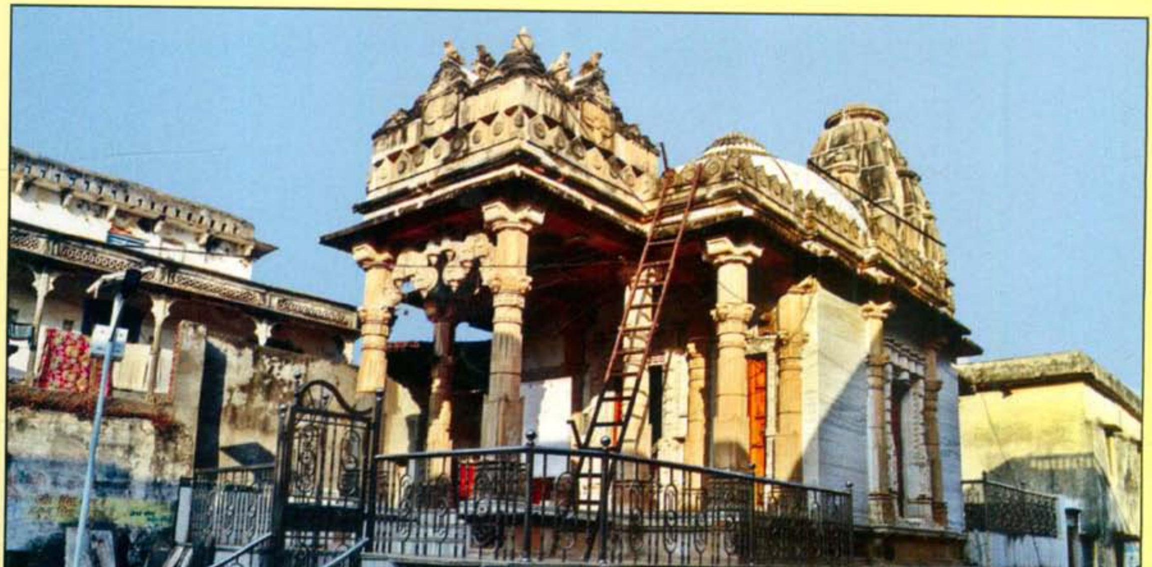

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) श्याम पाषाण की 9''ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। पाषाण का परिकर है।

(2) श्री वासुपूज्य भगवान श्वेत पाषाण की 13''ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है। (बाएं)

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13''ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (दाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 12''ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है।

(2)(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 7'' व 6'' का है।

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7''ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1534 का लेख है।

(5) श्री ताम्र यंत्र 19'' X 14'' का है।

(6) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 4'' का है।

बाहर :

(1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 9''ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 8''ऊँची प्रतिमा है।

श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1952 का लेख है।

श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 7''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 का लेख है।

विशेषता :

इस मंदिर में विराजित प्रतिमा पतलासा ग्राम से माल में श्री देवचंद्रजी गांधी लाए। पतलासा का प्राचीन मंदिर व शिखर जीर्ण शीर्ण हो गया। वर्तमान में ग्रामवासी वहां पर ऋतु के अनुसार फल, अन्न के दाने गिनकर चढ़ाते–उसके बढ़ोतरी के आधार पर उसी अन्न को बोते है। ऐसा विश्वास ग्रामवासी को आज भी है।

जहां पर वर्तमान में शिखर है वह पूर्व में खाली था जिस का जैनी श्रेष्ठिगण का कब्जा था। लेकिन अन्य जाति के लोगों ने कब्जा कर लिया, निर्णय जैन समाज के पक्ष में रहा कि पिछला हिस्सा अन्य समाज को दिला और पास में जहां आंगनवाड़ी चलती थी वह जीर्णशीर्ण मकान है। जिसका क्षेत्रफल करीब 2000 फीट है, जैन समाज को मिला।

मंदिर का पुराना उपाश्रय हे, उपाश्रय का जीर्णोद्धार हो रहा है।

मंदिर के दो भू–खण्ड अन्यत्र भी है।

मंदिर का जीर्णोद्धार आचार्य श्री कुंथुसागर सूरिजी म.सा. के मार्गदर्शन में हो रहा है। मेवाड़ देशोद्धारक आचार्यश्री जितेन्द्रसूरिश्वर जी म.सा. द्वारा भी मार्बल आदि का सहयोग करवाया।

बाहर :

श्री नाकोड़ा भैरव की पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 का लेख है। (दाएं)

श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2008 का लेख है।

इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री वस्तुपालजी, श्री राजकुमार जी गांधी - 09166785171 एवं श्री भूपेन्द्र जी गांधी - 09636685648 करते हैं।

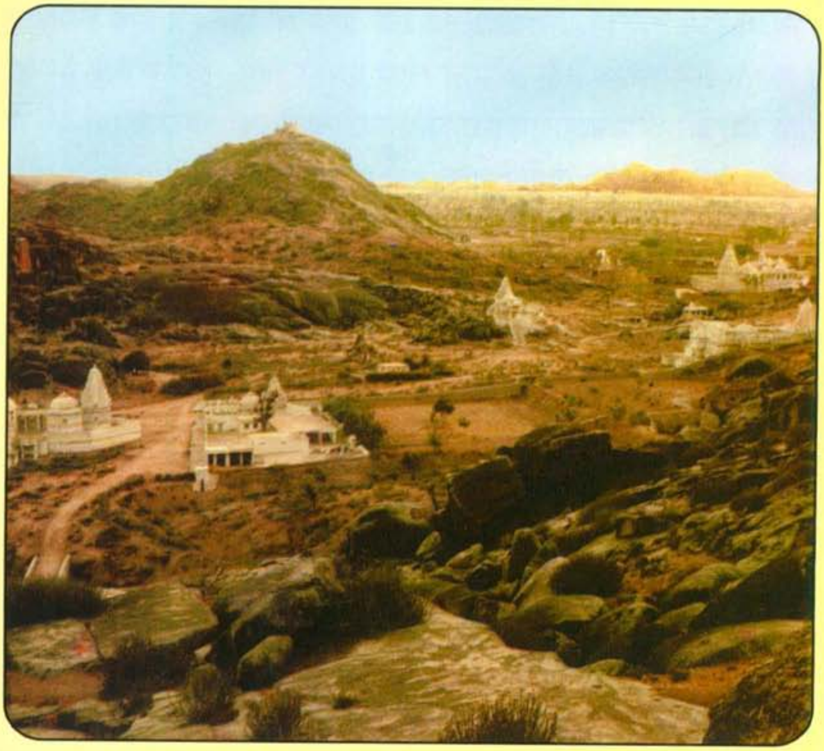

मन्दिर समूहों का दृश्य–नाडलाई

गोड़वाड़ की पंचतीर्थी में से एक नारलाई तीर्थ है।
यहां भव्य 11 जिनमंदिर, शंत्रुजय गिरनार तीर्थ पर पहाड़ी पर निर्मित है। नीचे तलहटी बनी गई है।

श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर
बोड़ीगामा बड़ा

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 60 किलोमीटर दूर स्थित है। यह प्राचीन कस्बा है यहां विष्णु मंदिर है। जिस पर सं. 1631 का निर्माण होने का लेख है।

ग्राम होने से जैन बस्ती भी रही होगी और जैन साहित्य के अनुसार प्राचीन मंदिर होना बताया है, कितना प्राचीन है, स्पष्ट नहीं है। मूर्ति पर सं. 1356 पढ़ने में आता है। अतः 700 वर्ष प्राचीन मंदिर है।

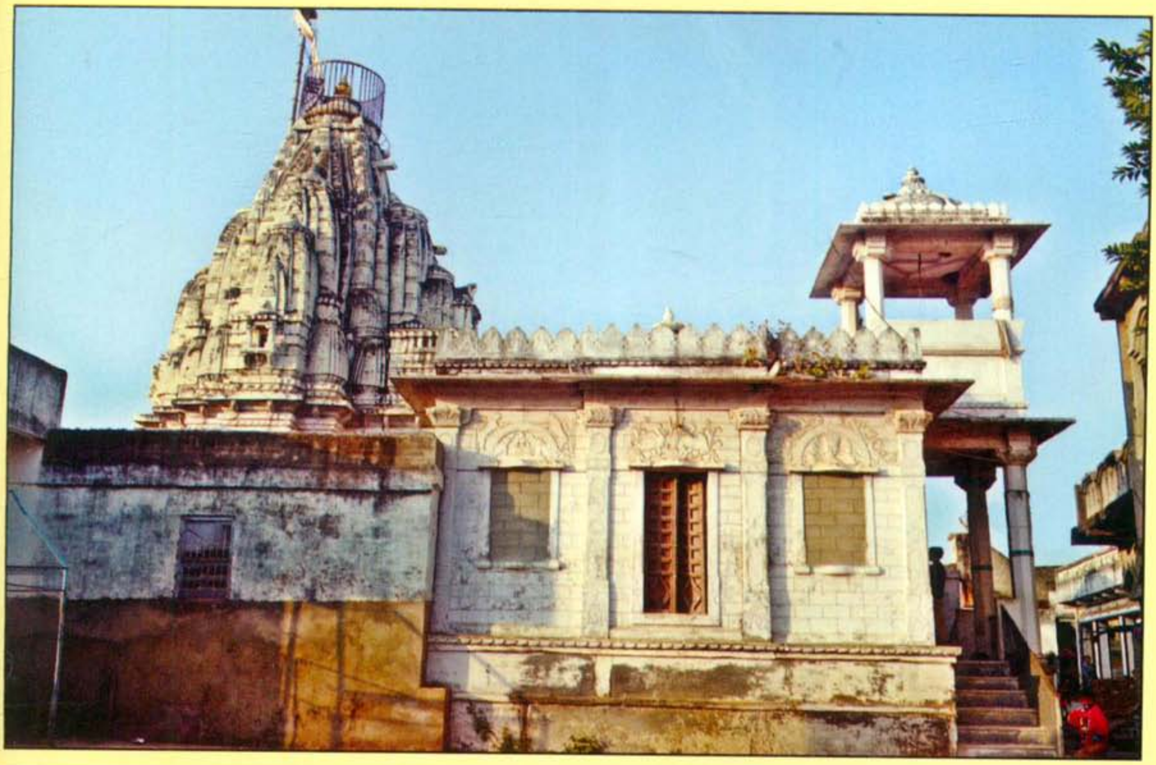

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री चंद्रप्रभ भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 11''ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1356 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 का लेख है। (बाएं)

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान श्याम पाषाण की 11''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1954 का लेख है। (दाएं)

श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1544 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1) श्री वीस स्थानक यंत्र 9'' का है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12''ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3''ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री शांतिनाथ भगवान की 9''ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री आदिनाथ भगवान की 8''ऊँची प्रतिमा है।

(6) श्री जिनेश्वर भगवान की 8''ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

(7) श्री जिनेश्वर भगवान की 17''ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1523 वैशाख सुदि 13 का लेख है।

(8) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 3'' का है।

(9) श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' X 3'' का है।

(10) श्री ताम्रयंत्र 7'' X 6'' का है।

बाहर :

विजय यक्ष की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री ज्वालादेवी श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री पार्श्व यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर के साथ आयम्बिल शाला, दो उपाश्रय एवं 2 कमरे है।

पूर्व में प्रतिष्ठा 8, फरवरी, 89 को श्री कुंद–कुंद सागर सूरि जी द्वारा कराई गई।

मंदिर में काँच का काम हो रहा है व जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माह सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर के साथ एक बड़ा भूखण्ड करीब 15000 वर्ग फीट है। इस मंदिर का कार्य समाज की ओर से श्री अशोक कुमार जी धनराज जी करते है। सम्पर्क - 9828073091

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर
बोड़ीगामा छोटा

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 61 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर करीब 80 वर्ष प्राचीन है।

मंदिर के लिए भूमि क्रय की और मंदिर बनाकर श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा सं. 2035 माघ शुक्ला 5 को सम्पन्न हुई।

मेवाड़ देशोद्धारक आचार्यश्री जितेन्द्रसूरिश्वर जी म.सा. द्वारा भी मार्बल एवं अर्थ सहयोग करवाकर इस कार्य को सम्पन्न करवाया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री सम्भवनाथ भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा ज्येष्ठ सुदि 12 को (2061) को सम्पन्न हुई।

(2) श्री विमलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 माघ शुक्ला 5 का लेख है। (बाएं)

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर वीर संवत 2504 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है।

(6) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

(7) श्री ताम्र यंत्र 4.5'' X 3'' का है।

बाएं :

(1) श्री सिद्धचक्र यंत्र पट्ट का पृथक से मंदिर है। जहां साधक साधना करते है।

(2) श्री पद्मावती देवी श्वेत पाषाण की 16'' नाग तक ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

ऊपर :

(1) पूर्व में श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा जो मूलनायक के रूप में पूजित रही, इसलिए नूतन देवरी बनाकर मूलनायक के रूप में प्रतिमा विराजमान कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए विराजित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(2) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर के साथ उपाश्रय बना हुआ है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ सुदि 12 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देख-रेख समाज की ओर से श्री चंद्रकांता जी (09982473027) व श्री वास्तुपालजी शाह (09929029929) करते है।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर
करियाणा

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 70 किलोमीटर, बोड़ीगामा से 8 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह नूतन मंदिर है।

मंदिर के लिए भूमि पाटीदार परिवार से क्रय कर मंदिर का निर्माण करा संवत 2061 वैशाख सुदि 14 को श्री कुंदकुंद सूरिजी महाराज की निश्रा में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई ।

इस मंदिर मे निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री बीस स्थानक यंत्र 8'' का है।

(5 एवं 6) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' 6'' का है।

(7) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

वेदी के बीच परसादी देवी स्थापित है।

श्री भ्रकुटिदेव की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री गंधारीदेवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 14 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था समाज की ओर से श्री राजेन्द्र जी शाह, श्री वरदीचंद जी - 08107836508 व बदामीलालजी, रूपलालजी शाह - 09461574815 द्वारा की जाती है।

श्री शंखेश्वर

श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर
जोगीवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 70 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन है (उल्लेखानुसार)।

सर्वप्रथम यह घूमटबंद श्री आदिनाथ भगवान का गृह मंदिर था, बादे में श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई गई।

अब श्री धर्मनाथ भगवान की प्रतिष्ठा होना शेष है। ग्राम में 4 जैन परिवार है। मंदिर के साथ उपाश्रय भी है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री धर्मनाथ भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (नूतन प्रतिमा)

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (प्राचीन प्रतिमा)

(3) श्री नमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (प्राचीन प्रतिमा)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1466 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2489 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है। वेदी के बीच परसादी (लक्ष्मी) देवी श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री किंभर यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री प्रसाप्ति की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर – बाएं – देवरी में :

श्री शांतिनाथ भगवानकी श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2489 का लेख है।

दाएं – देवरी में :

श्री संभवनाथ की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 का लेख है।

श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

दो पट्ट बने है, प्रतिष्ठा होना शेष है। मंदिर के दो उपाश्रय है।

मंदिर की व्यवस्था समाज की ओर से श्री योगेश जी कोठारी करते है।

सम्पर्क सूत्र - 07725931686

नोट : मंदिर की प्रतिष्ठा दिनांक 27.3.2014 को (चैत्रवदि 12) प.पू. पं. प्रवर पद्म भूषण विजयजी म. सा. की निश्रा में को सम्पन्न हुई ।

श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर
सरोदा

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 65 किलोमीटर व बोडीगामा से 8 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है।

मंदिर कितना प्राचीन है। स्पष्ट नहीं हो पाया लेकिन गांव के महादेव मंदिर पर वि.सं. 1670 माघ सुदि 10 का लेख है। उससे यह कहा जा सकता है उस समय जैन मंदिर भी रहा होगा । मंदिर का कार्य चल रहा है। मंदिर निर्माण व प्रतिष्ठा मेवाड़ देशोद्धारक आचार्यश्री जितेन्द्रसूरिश्वर जी म.सा. आदि की शुभ निश्रा में सुसम्पन्न हुआ व पृथ्वीराजजी खीमचन्दजी बाकलीवालों ने प्रतिमा भरवाने का व अन्य लाभ लिया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री कुंथुनाथ भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। परिकर बना हुआ है।

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(3) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाए व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की 3.5'' चांदी के पतरे की बनी है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है।

(6) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

आलिओं में :

(1) श्री गंधर्व यक्ष की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री बलादेवी यक्षिणी की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) देव मूर्ति चांदी के पतरे पर बनी हुई है।

मंदिर के साथ एक प्राचीन उपाश्रय है व एक नूतन निर्माणाधीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन सुदि 2 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से मगनलाल रूपचंद जी कोठारी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : 09983823486

विशेषता :

तीन बार चोरो ने ताले तोड़कर सामान ले जाने का प्रयास किया ले जाने में असफल रहे।

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर
गलियाकोट

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 60 किलोमीटर व सागवाड़ा से 15 किलोमीटर दूर है। सूत्रों का मनना है कि यह मंदिर 1000 वर्ष प्राचीन है। जब बांसवाड़ा व डूंगरपुर राज्य (दोनों) की राजधानी सर्वप्रथम गलियाकोट व बाद में अरथूना रही है। उसके बाद बड़ौदा (वटपद्र) बनी। प्राचीन दुर्ग की दीवार, महल के खण्डहर आज भी पहाड़ी पर विद्यमान है।

गलियाकोट वागड़ की राजधानी होने कर कही पर उल्लेख नहीं मिलता । संभवतया यह जागीदारी गांव रहा है इसलिए पहाड़ी पर दुर्ग के खण्डहर है । नगर के साथ जैन बस्ती भी बनी समय, काल, व मुगलकालीन आक्रमण से

नगर बने, बिगड़े विकास व विनाश हुए। मंदिर की कला, बनावट के आधार पर यह स्पष्ट है कि मंदिर प्राचीन है और मंदिर में स्थापित प्रतिमाएं व पादुकाओं पर संवत् 1302, 1637 आदि उत्कीण है।

अत: मंदिर का प्राचीन होना प्रमाणित होता है। यह 6000 वर्ग फीट क्षेत्र में बना है व जीर्ण शीर्ण अवस्था में है यहां वर्तमान में चार शिखर व एक शिखर टूटा हुआ है। जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। जीर्णोद्धार कार्य आचार्य भगवंत श्री जितेन्द्रसूरि जी म.सा. के सुशिष्य पं. प्रवर निपुणरत्न विजय जी म. सा. की निश्रा में चल रहा है।

के.पी. संघवी ट्रस्ट पावापुरी, श्री सुमतिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर, मालेगाँव तथा श्री आदिशांति पद्मप्रभ भगवान जैन पेढ़ी लुणावा के अर्थ सहयोग से सुचारू रूप से चल रहा है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री संभवनथ भगवान (मूलनायक) की धातु की 13'' ऊँची व परिकर सहित 43'' ऊँची प्रतिमा है। परिकर धातु का बना हे। जिसमें चौबीसी व यक्ष यक्षिणी लक्ष्मी बनी हुई है। इस पर वि. सं. 1807 फाल्गुन सुदि 7 का लेख है।

उल्लेखानुसार पूर्व में वासुपूज्य भगवान का मंदिर था।

रंगमण्डप में बनी वेदी पर है :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1637 का लेख है। (दाएं)

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1691 का लेख है। (दाएं)

(3) श्री समवसरण (चौमुखाजी) की श्वेत पाषाण की 32'' ऊँचा है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। प्रतिमा पर लेप किया हुआ है। लांछन भी स्पष्ट नहीं है। सूत्रों के अनुसार यह आदिनाथ भगवान की प्रतिमा है।

(5) श्री गुरू चरण पादुका 20'' X 18'' के श्याम पाषाण पर 6'' चरण पादुका स्थापित है। ये पादुका अलग अलग गुरूओं की है और भिन्न–भिन्न समय की है। इसी प्रकार इन पर सं.

1302, 1689 आदि समय का लेख है।

(6) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री संभवनाथ की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1632 फाल्गुन सुदि 10 का लेख है।

(8) श्री पद्म प्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(9) श्वेत पाषाण के 18'' X 18'' व 23'' X 23'' पर 4 जोड़ी व 4 जोड़ी पर चरण पादुका विभिन्न गुरूओं की स्थापित है। इस पर सं. 1823 का व सं. 1896 का लेख है।

(10) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1673 वैशाख सुदि 14 का लेख है।

(11) श्री गुरू चरण 7'' X 7'' के श्वेत पाषाण पर 2 जोड़ी चरण पादुका स्थापित है। इस पर सं. 1673 का लेख है।

(12) श्री गुरू चरण 13'' X 13'' के श्वेत पाषाण पर दो जोड़ी गुरू चरण पादुका स्थापित है। इस पर सं. 1696 का लेख है।

(13) श्री गुरूचरण 11'' X 9'' के श्वेत पाषाण पर एक चरण पादुका जोड़ी श्री चन्द्रसूरि की स्थापित है। इस पर सं. 1702 वैशाख सुदि 2 का लेख है।

इसी प्रकार श्री गुरूचरण 11'' X 9'' के श्वेत पाषाण पर तीन जोड़ी चरण पादुका स्थापित है। इस पर सं. 1698 का लेख है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण का बहुत ही घिसा हुआ है। श्री क्षेत्रपाल जी की मूर्ति स्थापित है।

बाहर मंदिर की देवरी के बाहर एक शिलालेख वि.सं. 1797 का है। इसी प्रकार प्रवेश द्वारा के ऊपर गोखले की दीवार पर लेख है जो अपठनीय है। मंदिर का एक खण्डहर उपाश्रय है।

कुछ चरण पादुका पट्ट नदी में से निकले है इस मंदिर की बनावट, कला आदि को देखने से श्री सिद्धचक्र की घिसावट को देखकर तथा प्रतिमाओं व चरण–पादुका पर उत्कीर्ण लेख 16वीं शताब्दी के है, इससे मंदिर की प्राचीनता स्पष्ट है।

यहां पर पूर्व में जैन बस्ती अधिक थी, माही के डूब में आने से बस्ती के लोगों की सागवाड़ा श्री पुनर्वास कॉलोनी में भूखण्ड आवंटन किया है। वहां पर मकान बने है, बन रहे है। वहां पर जैन मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा हे। वर्तमान में इस नगर में कोई जैन श्रावक नहीं रहते हैं केवल दो श्रावक अपने व्यवसाय हेतु आते है और उसी दिन पुनः लौट जाते हैं ।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री प्रदीप कुमार पुत्र श्री शोभाचंद जी दावडा करते है।

सम्पर्क सूत्र - 09928831783

यह संपति बीसा हुमड़ समाज, सागवाड़ा के अधीन है।

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर
गलियाकोट, पुनर्वास कॉलोनी, सागवाड़ा

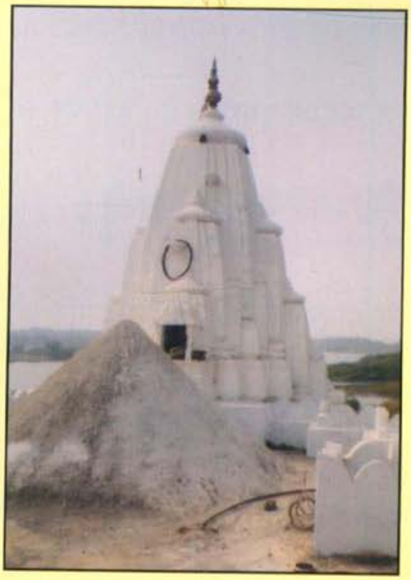

इस शिखरबंद मंदिर का सम्पूर्ण कार्य मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य देवेश श्री जितेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पन्यास श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. के मार्गदर्शन में सेठ आनंदजी कल्याणजी की पेढ़ी अहमदाबाद के प्रमुख अर्थ सहयोग से निर्माण प्रगति की ओर है, शीघ्र तैयार होगा और प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न होगा।

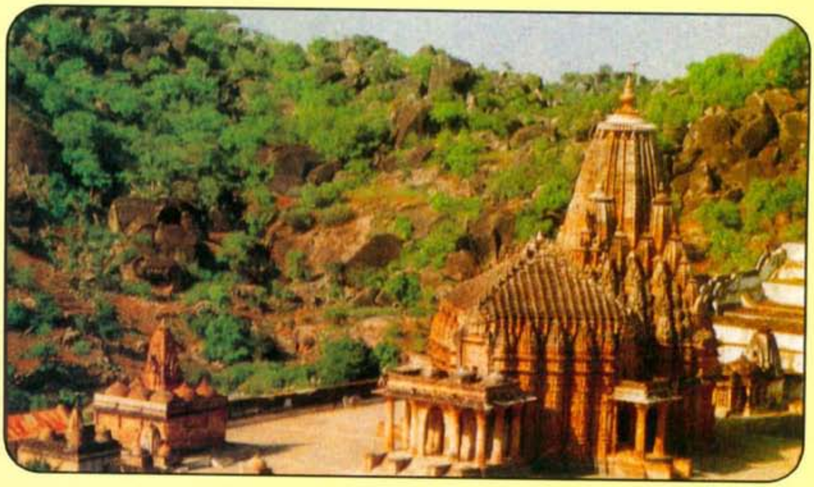

श्री तारंगाजी तीर्थ

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सागवाड़ा

यह शिखरबंद विशाल मंदिर हुमड़ जाति दावड़ा गौत्रीय श्री रत्ना पुत्र लच्छा भोजराज सुत रजिया देवजी सुत गोपाल दावड़ा मेघराज सुत केसर कल्याणमल गोमता नायकदेव समस्त परिवार ने निर्मित करा प्रतिष्ठा सं. 1622 माघ शुक्ला 13 शुक्रवार को तपागच्छीय आचार्यश्री धनरत्न सूरि जी, आचार्यश्री अमररत्नसूरिजी, आचार्यश्री तेजरत्नसूरि तत्पट्टे भट्टारक श्री देवसुंदरसूरि द्वारा प्रासाद एवं बिम्बों की प्रतिष्ठा कार्य महारावल श्री आसकरणजी के राज्य काल में सम्पन्न हुई।

जिर्णोद्धार, प्रतिष्ठा, ध्वजादण्ड सं. 2017 मौन एकादशी को 28 नवम्बर, 1960 को हुआ, 24 मई, 1967 को बावन जिनालय का कार्य श्री कृपाचंद दावड़ा द्वारा कराया गया। अर्थात् यह मंदिर 450 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। परिकर 2½ X 1½ गुणा श्वेत पाषाण का है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस प्रतिमा को महावीर भगवान नाम से जाना जाता है। (दाएं)

(3) श्री विमलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमा एवं यंत्र :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इसके साथ–साथ श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6 प्रतिमाएं है।

(2–3–4) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 3 है।

(5) श्री पद्मावती देवी की प्रतिमा है।

गर्भ गृह के बाहर आलिओं में :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' व परिकर सहित 17'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (बाएं)

रंग मण्डप में :

दाएं :

(1) श्री नेमिनाथ भगवान की पीत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पीत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री धर्मनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं0. 1654 माघ सुदि 12 बुधवार का लेख है।

बाएं :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1655 का लेख है।

(3) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 19'' (नाग तक) ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1654 माघ वदि 12 का लेख है।

वेदी पर :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की धातु की 14'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1826 का लेख है। (दाएं)

(3) श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1645 का लेख है। (बाएं)

(4) श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण 21'' X 21'' का है। इस पर सं. 1965 का लेख है।

(5–6–7) श्री जिनेश्वर भगवान की प्रतिमाएं (3) धातु की प्राचीन है।

(8) श्री चरण पादुका दो जोड़ी 16'' X 16'' श्वेत पाषाण पर स्थापित है। इस पर सं. 1635 का लेख है।

बाहर :

श्री चौमुखा जी

(1) श्री अजितनाथ भगवान यह समवसरण मंदिर 31'' ऊँचा है। (दाएं)

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान

(3) श्री अभिनंदन भगवान

(4) श्री संभवनाथ भगवान

बड़ी देवरी में :

श्री चंद्रप्रभ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1622 का लेख है। (बाएं)

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1622 का लेख है। (दाएं)

श्री सुविधिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी धातु की उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 1549 का लेख है।

एक धातु की प्रतिमा है।

दीवार पर तीन पट्ट बने हुए है। गुरू प्रतिमा, श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।

बीस विहरमान 16''X16'' का श्वेत पाषाण के पट्ट पर बने है।

बड़ी देवरी के पहले की अंतिम देहरी के सामने बरामदा पर लगे पाट पर लेख उत्कीर्ण है जो प्रवेश द्वार पर लिखे हुए जैसा ही है।

बावन जिनालय में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। अस्पष्ट लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। अस्पष्ट लेख है।

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। अस्पष्ट लेख है।

(5) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। अस्पष्ट लेख है।

(6) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1673 वैशाख वदि 4 का लेख है।

(7) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1624 का लेख है।

(8) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1673 का लेख है।

(9) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(10) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(11) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1750 का लेख है।

(12) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1750 का लेख है।

(13) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(14) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1635 का लेख है।

(15) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(16) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(17) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1673 का लेख है।

(18) श्री वासुपूज्य भगवान की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1673 का लेख है।

(19) श्री अभिनंदन भगवान की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(20) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(21) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1654 का लेख है।

(22) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(23) श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(24) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(25) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

(26) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

(27) श्री धर्मनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1675 का लेख है।

(28) श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण के पट्ट 19'' पर बना है।

बड़ी देवरी में :

(29) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(30) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)
इस पर सं. 1543 का लेख है। (बाएं)

(31) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। धातु की चार प्रतिमाएं व तांबे का यंत्र 1 है।

देवरी में :

(32) श्री संभवनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(33) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1673 का लेख है।

(34) श्री वासुपूज्य भगवान श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(35) श्री वासुपूज्य भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(36) श्री सुविधिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(37) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(38) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1635 का लेख है।

(39) श्री पार्श्वनाथ यक्ष की श्याम पाषाण की 20'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(40) श्री विवेकसूरि जी के चरण पादुका 11'' X 11'' के श्वेत पाषाण की पट्टी पर स्थापित है।

(41) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(42) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है।

(43) श्री कुंथुनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1673 का लेख है।

(44) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(45 से 51) धातु की उत्थापित प्रतिमा 7 है।

(52) श्री अनंतनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप के एक ओर तीर्थ पट्ट है।

द्धार प्रवेश करने पर :

श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

प्रवेश द्वार पर दो पाषाण के विशाल हाथी स्थापित है।

मंदिर में प्रवेश करते समय बाई ओर :

एक उपाश्रय बना हुआ है जहां पर कई वर्ष पूर्व श्री भेरूतुंग विजय जी म.सा. का साधना केन्द्र बना है। जहां पर चरण–पादुका स्थापित है। इन मुनि महाराज का देवलोक वि.सं. 2000 वैशाख सुदि 11 को हुआ इनकी मूल समाधि स्थल नसिया पर (टेकरी पर) कल्लाजी के मंदिर के पास स्थित है।

इनकी समाधि स्थल पर आकर श्रावकगण अपनी मन्नत मांगते है, मनोकामना पूरी होती है।

नगर के श्रावकगण अपने स्तर पर ही उपाश्रय का जीर्णोद्धार करवा रहे है।

मंदिर के साथ 5 दुकाने है, किराए पर है तथा उपाश्रय है।

वार्षिक ध्वजा माघ शुक्ला 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अनिल कुमार जी सारगरिया व श्री चंद्रप्रकाश जी गांधी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 09828140129, 9414105503

विशेषता : मंदिर में आज तक चोरी नहीं हुई है उसका मुख्य कारण श्री भेरूविजय को रक्षक देव मानते है वे ही मंदिर की रक्षा करते है।

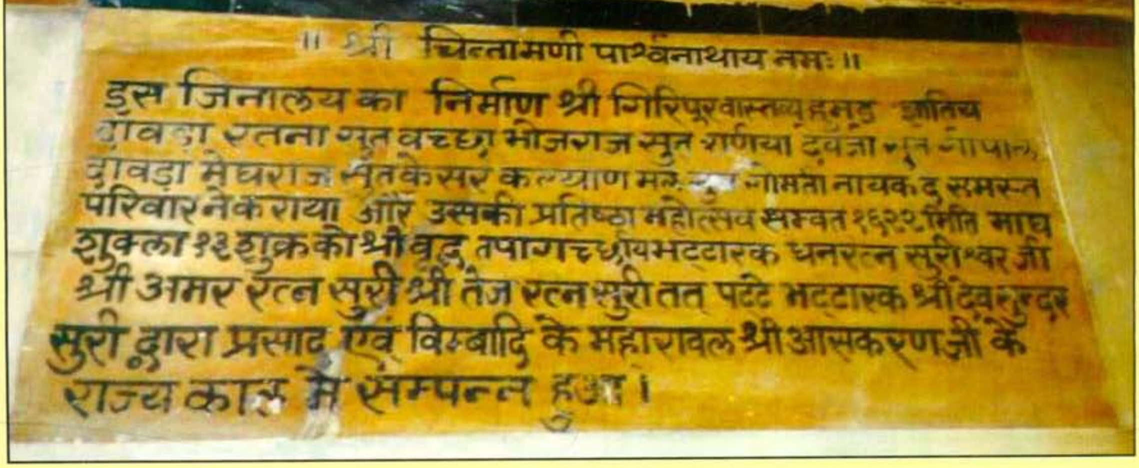

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, आसपुर

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से 45 कि.मी. दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। इसमें रंगमण्डप, नव चौकी, सभामण्डप बना हुआ है। यह मंदिर वीसा पोरवाल द्वारा बनाया गया । शिखर व रंगमण्डप गोपजी तारावत द्वारा बनाया गया ।गोपजी तारावत ने वीर संवत 2502 कार्तिक सुदि 5 को फर्श, वेदी कलश आदि बनवाया ।

सूत्रों के अनुसार जैन लोग भीनमाल से आकर आसपुर के पास गढ़ा (गोल) ग्राम में आकर बसे । वहां पर जैन व अजैन लोगो में विवाद होने से जैन लोग टुकवासा ग्राम में जाकर बसे । वहां पर भी पहाड़ी की तलहटी पर जैन मंदिर की स्थापना की । सूत्रों ने बताया कि महारावल आशकरण द्वारा वि. सं. 1596 से 1638 के बीच आसपुर की स्थापना की। उसके पश्चात् यह वि.सं. 1610 में इस मंदिर का निर्माण होने का उल्लेख है। व्यावसायिक दृष्टि से जैन लोग यहां आकर बसे ।संवत 16वीं शताब्दी से सं. 1821 तक मुगलकालीन आक्रमण होने के कारण जैन लोग आसपास के ग्राम टुकवासा, बनकोड़ा, राजगढ़, सलूम्बर आदि ग्रामों में जाकर बस गए। जहां पर आज भी रह रहे है । पुनः कुछ लोग आकर बसे और उन्होंने वि.सं. 1808 चैत्र वदि

12 को प्रतिमा को पुनः विराजमान कराई ।इस बीच मीमाशाह पोरवाल द्वारा आसपुर के ऋषभदेव तक वि.सं. 1742 चैत्र सुदि 5 को संघ का आयोजन हुआ, उस समय मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान करना था लेकिन मुहुर्त के अनुसार अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कर विराजमान कराई ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमा स्थापित है :

(1) श्री अमीझरा पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1802 चैत्र वदि 12 का लेख है। (मूलनायक)

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (दाए)

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

उत्थापित पाषाण व धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1–4) ताम्र पत्र के विभिन्न नाप के चार – (4) यंत्र

(5) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विशंति की प्रतिमा है।

(6) श्री शांतिनाथ भगवान की पंचतीर्थी 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1578 का लेख है।

(7) श्री जिनेश्वर भगवान की पंचतीर्थी 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1651 का लेख है।

(8) श्री सिद्धचक्र यंत्र है।

(9–11) श्री जिनेश्वर भगवान की छोटी प्रतिमाएं है।

(12) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

(13) श्री विमलनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1512 का वैशाख सुदि 5 लेख है।

(14) श्री भैरव की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1759 का लेख है।

बाहर (आलिओं में) :

श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

रंगमण्डप में :

दाएं

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1536 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री महावीर भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(6) श्री अभिनंदन भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री चरण पादुका एक जोड़ी 10'' X 9'' श्वेत पाषाण के पट्ट पर स्थापित है।

(8) श्री चरण पादुका चार जोड़ी 19'' X 17'' श्वेत पाषाण के पट्ट पर स्थापित है।

(9) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्याम पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

(10) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(11) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(12) श्री सुविधिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(13) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(14) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(15) श्री शासन देवी की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है।

(16) श्री धरणेन्द्र देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

बाएं :

(1) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1802 चैत्र वदि 12 का लेख है।

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(6) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1826 का लेख है।

(7) श्री माणिभद्र वीर की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1802 का लेख है।

रंगमण्डप के बीच में - वेदी पर :

श्री चौमुखा जी :

श्री जिनेश्वर भगवान की चारों प्रतिमाओं पर कोई लांछण (चिन्ह) नहीं है। चारों प्रतिमाए श्वेत पाषाण की 9'', 11'', 12'' वं 9 '' ऊँची है। जिनमें से एक पर सं. 1336 का व दूसरी पर सं. 1856 का लेख है शेष पर लेख नहीं है।

एक 23'' X 23'' का श्वेत पाषाण का पट्ट पर 9 जोड़ी चरण पादुकाएं स्थापित है। इस पर सं. 1694 का लेख है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण की 17'' X 17'' का है। इस पर सं. 1802 का लेख है।

वेदी पर विराजित प्रतिमा, यंत्र, पादुकाएं टुकवासा ग्राम से लाकर यहां विराजमान की, बाहर सभामण्डप में (रंग मण्डप के बाहर दोनों ओर) शत्रुंजय व गिरनार तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

प्रवेश के समय दाईं ओर श्री नाकोड़ा भैरव का विशाल चित्र है, जहां पर भविष्य में नाकोड़ा भैरव की प्रतिमा विराजमान करने का प्रस्ताव है।

मंदिर के पीछे खाली नोहरा है। खाली भूखण्ड है।

चढ़ावा (बोली से) राशि प्राप्त होती है। उससे मंदिर का दैनिक व्यय होता है।

श्री आत्मानन्द जैन आराधना भवन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 14 को चढ़ाई जाती है।

पूजा नियमित होती है 70 जैन परिवार वर्तमान में निवास कर रहे है।

इस मंदिर की देखरेख श्री बीसा पोरवाल जैन श्वेताम्बर समिति आसपुर की ओर से श्री हीरालाल जी वेणीचंद जी भामावत (99292 80331) श्री जयंतिलाल जी सोमलावत (094147 24203) करते है।

श्री शत्रुंजय तीर्थ

श्री सांवलिया पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, साबला

यह शिखरबंद मंदिर डूँगरपुर से करीब 60 किलोमीटर व आसपुर से 15 किलोमीटर गांव के मध्य में स्थित हैं सूत्रों के अनुसार यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन है।

पूर्व में घूमटबंद मंदिर था, बाद में जीर्णोद्धार करते समय शिखरबंद मंदिर बनाया। प्रारम्भ से ही यही प्रतिमा है। जिस पर संवत् 1543 का लेख है। उल्लेखनुसार भी यह मंदिर प्राचीन बतलाया है।

इस प्रतिमा की विशेषता यह है कि प्रतिमा के लांछण के स्थान पर नाग फण फैलाए हुए (वास्तविक नाग जैसा) बैठा है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है।

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। उल्लेखानुसार वि.सं. 1888 का लेख है। संभव है कि श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा का 1888 का उल्लेख किया है लेकिन सं. 1543 दिखाई देता है।

बाएं :

(1) श्री सम्भवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2039 का लेख है।

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1801 का लेख है।

दाएं :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1888 का लेख है।

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2039 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (आलिए में)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1–3) ताम्रपत्र यंत्र तीन विभिन्न आकार के

(4) ताम्र (ताम्बा) का नाग एक।

(5) ताम्बे का का सर्वलब्धि यंत्र 18''**X**14'' का है जिस पर मंत्र उत्कीर्ण है।

(6–7) ताम्बे के तीन चौकोर यंत्र है।

(8) श्री सुमतिनाथ भगवान की चतुर्विंशति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1518 ज्येष्ठ सुदि 6 का लेख है।

(9) श्री नमिनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1478 का लेख है।

(10) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है।

*(11) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' **X** 4'' का है।*

(12) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2495 का लेख है।

(13–16) श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमाएं है। इस पर सं. 1478 का लेख है।

(17) श्री नवकार मंत्र यत्र धातु का है।

(18) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख है।

(19) श्री वासुपूज्य भगवान की 11'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 1535 माघ सुदि 5 का लेख है।

(20) श्री धर्मनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1515 माघ सुदि 11 का लेख है।

(21) बीस स्थानक यंत्र 8'' गोलाकार है।

वेदी के बीच दीवार में परसादीदेवी स्थापित है।

रंगमण्डप में (दांए) :

(1) श्री धरणेन्द्र देव की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 वैशाख सुद 5 का लेख है।

(2) श्री धरणेन्द्र यक्ष की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1560 का लेख है।

(3) श्री माणिभद्र वीर की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस प्रतिमा की दिनांक 23.04. 2007 को प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई गई। श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 वैशाख सुद 5 का लेख है।

श्री चरण पादुका दो जोड़ी 18''X 14'' श्वेत पाषाण के पट्ट पर स्थापित है।

विशेषता – मूल मंदिर (गंभारा) :

रजत व स्वर्ण से सुशोभित है।

गुम्बज पर 8 अप्सरा बनी हुई है जो रंगीन व कलात्मक है।

सभामण्डप में :

श्री गिरनार, आबू, नाकोड़ा, अष्टापद, सम्मेतशिखर, शत्रुंजय तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

सभामण्डप में एक गुरूदेव की प्रतिमा व काला गौरा भैरव की प्रतिमा है जिसकी प्रतिष्ठा माण्डवला (जालोर) में हो चुकी है। स्थानीय दादावाड़ी में विराजमान की जानी है। गुरू–प्रतिमा पर पछेवड़ी की किनार पीली है ? इस मंदिर की अंतिम प्रतिष्ठा सं. 1990 ज्येष्ठ शुकला 5 को सम्पन्न हुई। मंदिर के साथ तीन उपाश्रय है तीन भूखण्ड (बाड़े) है। भूखण्ड किसी आयोजन के लिए किराए पर दिये जाते है। मंदिर के नीचे दो छोटे कमरे है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख जैन संघ की ओर से निम्न सदस्यों द्वारा की जाती है

श्री जवाहरलाल जी मेहता - 09460377764, 07891928393

श्री ललित जी - 09414867914, श्री मनोहरलाल जी सेठ - 09413529815

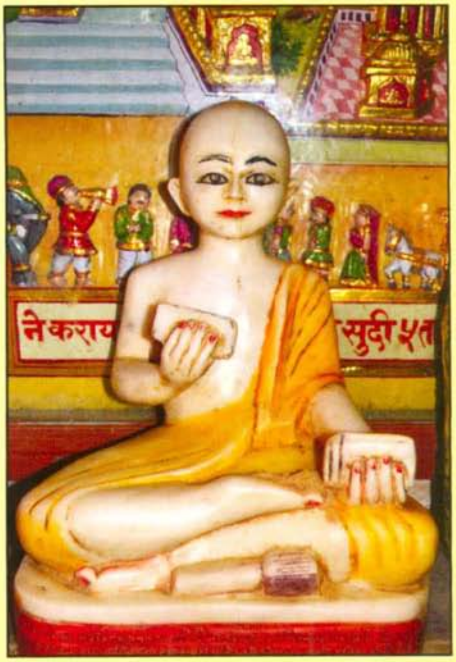

श्री दादावाड़ी मंदिर
साबला

यह घूमटबंद मंदिर साबला ग्राम के निकट 2 कि.मी दूर पहाड़ी ''सोनगिरी' पर स्थित है। इस पहाड़ी का नाम सोनगिरि इसलिए है कि यहां अल्पमात्रा में सोना पाया गया जिसका खनन कार्य प्रारम्भ नहीं किया गया। मंदिर परिसर के चारों ओर पक्की चारदीवारी बनी हुई है। मंदिर के पास ही एक हॉल बना हुआ है उसमें ऊँचा चबूतरा बना हुआ है उस पर नूतन छः छतरिया (देवरिया) बनी हुई है। इन देवरियों के ऊपर (छत) पर एक शिलालेख वि.सं. 1635 का है जो दादावाड़ी निर्माण होने का वर्ष बताते है। वर्तमान में मंदिर की प्रतिमा बिराजमान नहीं हैं। साबला ग्राम के मंदिर में मणीधारी दादा गुरू श्री जिनचंद्रसूरि जी की प्रतिष्ठित प्रतिमा अस्थायी रूप से बिराजीत है उसको व काला गोरा भेरव की प्रतिमा को बिराजित कर जानी है।

इन देवरियों में निम्न चरण पादुकाएं स्थापित है :

(1) श्री जिनदत्तसूरि व श्री जिन कुशलसूरि की श्वेत पाषाण के पट्ट 23'' X 18'' की प्राचीन (दो जोड़ी) पादुका स्थापित है।

(2) दादा गुरू की श्वेत पाषाण के पट्ट पर 20'' X 16'' व 18'' X 18' पर दो चरण पादुका स्थापित है।

(3) श्री जिनचंद्रसूरि की पादुका श्वेत पाषाण के पट्ट 16'' X 16'' पर स्थापित है। इस पर सं. 1677 का लेख है।

दादा गुरू की श्वेत पाषाण के पट्ट 17'' X 17'' पर स्थापित है। 17'' X 17'' पर तथा 15'' X 15''के पट्ट पर स्थापित है।

(4) श्री मणिधारी जिनचंद्र सूरि की श्वेत पाषाण के पट्ट 17'' X 17'' पर स्थापित है। इसके अतिरिक्त 17'' X 17'' व 17'' X 17'' पट्ट पर दो चरण – पादुकाएं स्थापित है। इन पर अस्पष्ट लेख है।

(5) श्री विजयसागर की श्वेत पाषाण के पट्ट 17'' X 17.1'' पर चरण पादुका है। इस पर सं. 1688 का लेख है।

(6) श्री जिन हंससूरि की श्वेत पाषाण की 19'' X 19'' पट्ट पर चरण पादुका स्थापित है। इस पर सं. 1698 का लेख है।

इस भूमि पर दिगम्बर समाज वालों ने अपना अधिकार कर लिया था लेकिन दिगम्बर मुनि श्री धर्मसागर जी ने देखा कि मूर्ति वस्त्रधारी है। उन्होंने श्वेताम्बर समाज को सुपुर्द करवा दी।

इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से निम्न सदस्यों श्री जवाहरलाल जी मेहता – 094603 77764 एवं श्री मनोहरलाल जी सेठ – 094135 29815 द्वारा की जाती है।

बाँसवाड़ा राज्य का इतिहास

बाँसवाड़ा राज्य वागड़ का पूर्वी भाग है। यह राजस्थान राज्य के दक्षिण में 23.3° - 23.55° डिग्री उत्तर अक्षांस तथा 73.58° 74.47° पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। इसका क्षेत्रफल करीब 2800 किलोमीटर है।

पूर्व में वागड़ प्रदेश से बांसवाड़ा व डूँगरपुर राज्य सम्मिलित था बाद में डूंगरपुर से पृथक हो गया और डूंगरपुर राज्य का पूर्वी भाग बांसवाड़ा है।

बांसवाड़ा की राजधानी जहां पर स्थित है। वहां पर बांसों की झाड़ियां थी और वर्तमान में भी चारो तरफ पहाड़ियों पर बांस की झाड़ियां है। इसी कारण से इस राज्य का नाम बाँसवाड़ा पड़ा इसके पूर्व कई स्थानों पर ''बासबहाल'''' बांसवाला का भी उल्लेख है।

महारावल उदयसिंह के दो पुत्र पृथ्वीराज व जगमाल थे। उदयसिंह ने पृथ्वीराज को डूंगरपुर का व जगमाल को बांसवाड़ा का राज्य दिया। तब से बांसवाड़ा को पृथक राज्य घोषित हुआ।

अस्सी के दशक में बांसवाड़ा में माही डेम का निर्माण हो जाने से सम्पूर्ण जिले में खुशहाली हुई है तथा अर्थव्यवस्था में काफी सुधार हुआ है जिससे आदिवासी सहित समाज लाभान्वित हुए है।

जन श्रुति के आधार पर राज्य का पहला राजा जगमाल ने बासना भील को मारकर (वि.सं. 1587 में) राज्य को नए रूप से बसाया। लेकिन ऐसा उल्लेख है कि बांसवाड़ा वि.सं. 1536 के पूर्व में बसा हुआ था।

13 वीं शताब्दी में गुहलवंशीय सामंतसिंह ने वागड़ राज्य पर अपना शासन स्थापित कर लिया। यद्यपि राजस्थान में ऐतिहासिक भण्डार विद्यमान है लेकिन बांसवाड़ा राज्य का ऐसा कोई पुरातत्व की दृष्टि से सामग्री उपलब्ध नहीं हो सकी।

जो कुछ सामग्री उपलब्ध हुई उसके आधार पर वि.सं. 1575 के लगभग वागड़ दो भागों में (डूंगरपुर व बांसवाड़ा राज्य) विभक्त हुआ।

सभी तरह से अध्ययन करने पर सारांश में महारावल जगमाल का राज्य स्थापित होना वि.सं. 1587 के

आसपास पाया जाता है।

वागड़ राज्य पर गुहिलवंशीय राज्य स्थापना होने के पूर्व क्षत्रप महाक्षत्रप परमार व गुजरात के सोलंकी का शासन था। परमार की राजधानी अर्थुणा रही जो उस काल की बड़ी नगरी थी जहां पर **अनेक कलात्मक जैन मंदिर है** उसके खण्डहर आज भी देखे जा सकते है।

बांसवाड़ा के पास सुरवानिया के तालाब के खनन कार्य करते समय एक घड़े में 2.393 चांदी के सिक्के प्राप्त हुए वे सिक्के वि.सं. 256 के है जिसमें क्षत्रप शब्द उत्कीर्ण है।

महारावल जगमाल के वंशजों का 420 वर्ष राज्य रहने पर भी काई प्रशस्ति या शिलालेख उपलब्ध नहीं है। इस काल में नरेशों द्वारा जिनालय, देवालय, तालाब या बावड़ी के बनवाने का उल्लेख भी कम ही दिखाई दिया।

यह भी लिखना उपयुक्त होगा कि बांसवाड़ा राज्य की प्राचीनता की अनुसंधान कार्य कम ही हुआ है। इसका मुख्य कारण यह है कि पूर्व में इसका इतिहास वागड़ राज्य से जुड़ा हुआ था, कोई अलग से राजा/महारावल नहीं था, पृथक राज्य के बाद मुगलकालीन आक्रमण में ही व्यवस्तता रही।

हमारा कार्य क्षेत्र/ध्येय जैन मंदिरों का इतिहास, मूर्तिकला, चित्रकला का वर्णन करना है। अतः राज्य के स्थापित जैन श्वेताम्बर का वर्णन किया जा रहा है।

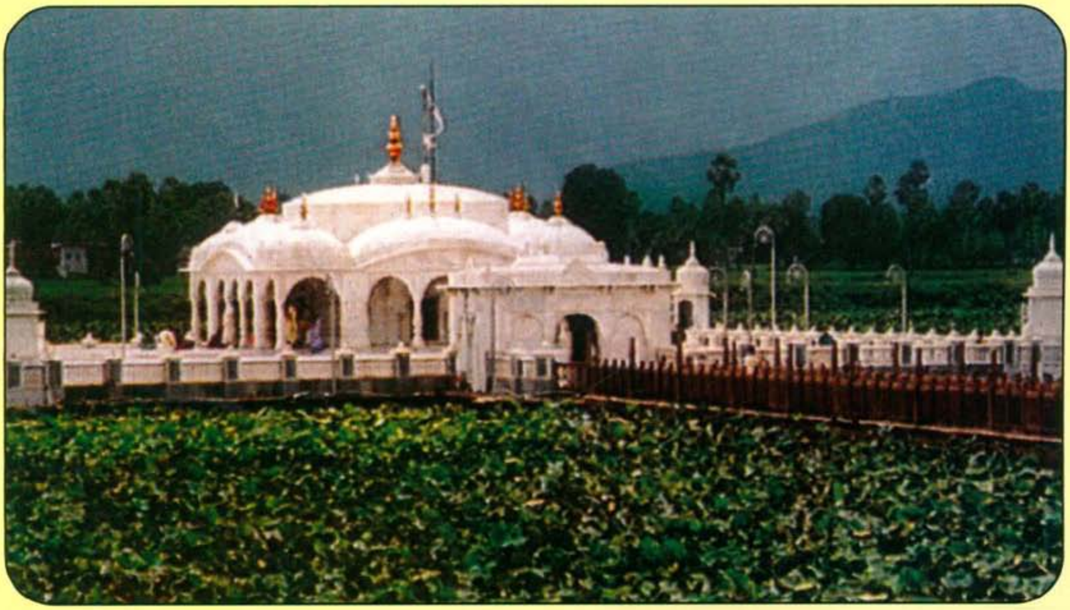

श्री पावापुरी तीर्थ

बाँसवाड़ा जिले का नक्शा

BANSWARA
DISTRICT
Udaipur
Pratapgarh
N
Dungarpur
Narwali
Jagpura
Sobaniya
Kushalpura
Wadalia
Bori
Motagaon
Papalkhunt
NH-113
Jamil
Lahoria
Ghatol
Ghantali
Dukwara
Matiya
Dusalawari
Dewda
Khodan
Bhawasa
Amarthun
Pipalsa
Bhongra
Senawasa
Mor
Sareri Bari
Ghori
Borkhera
Tejpur
Kohala
Garhi
Japura
Chhoti
Kopra
Wakatpura
Talwada
Khanpur
Danakhari
Saranpur
Amja
BANSWARA
Danpur
Timatia
Chhaja
Chhinch
Salia
Jhupel
Khandu
Kajalju
Barodia
Bagidora
Dokar
Doria Rel
MADHYA
PRADESH
Dalpura
Anas
Bhuknia
Kalinjara
Maheshpura
Shergarh
Ambadara
Charkani
Kotra
GUJRAT
Bijori Kotan
Mirchghati
Bhopatpura
Sarwa Kalan
LEGEND
National Highway
Major Road
Railway
District Boundary
State Boundary
River
District HQ
Other Town
Major Town
Sallopat
Kushalgarh
Dungra
Ahdakh
Maska Bara
Malpara
Wageri
Map not to Scale
Copyright © 2011 www.mapsofindia.com
(Updated on 11th July 2011)

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, ओसवालवाड़ा, बाँसवाड़ा

यह विशाल शिखरबंद मंदिर उदयपुर से 163 कि.मी. डूंगरपुर से 100 किलोमीटर, रतलाम से 90 किलोमीटर, दाहोद से 80 किलोमीटर दूर बांसवाड़ा नगर के ओसवालवाड़ा मोहल्ले में स्थित है। सूत्रों के अनुसार यह मंदिर कोठारी परिवार के पूर्वज श्री हीरालालजी व कन्हैयालालजी कोठारी दोनों भाई थे, उन्होंने कुल चार मंदिर बनवाए। एक ही छोटे क्षेत्र में चार मंदिर होने से अन्य समाज के सदस्यों के आग्रह पर एक मंदिर वैदिक धर्म के सदस्यों को जो अभी चारभुजा जी का मंदिर है दूसरा जैन धर्म के ही दिगम्बर समाज वालों को सुपुर्द किया तथा दो मंदिर गौड़ी पार्श्वनाथ मंदिर व एक अन्य छोटा पार्श्वनाथ

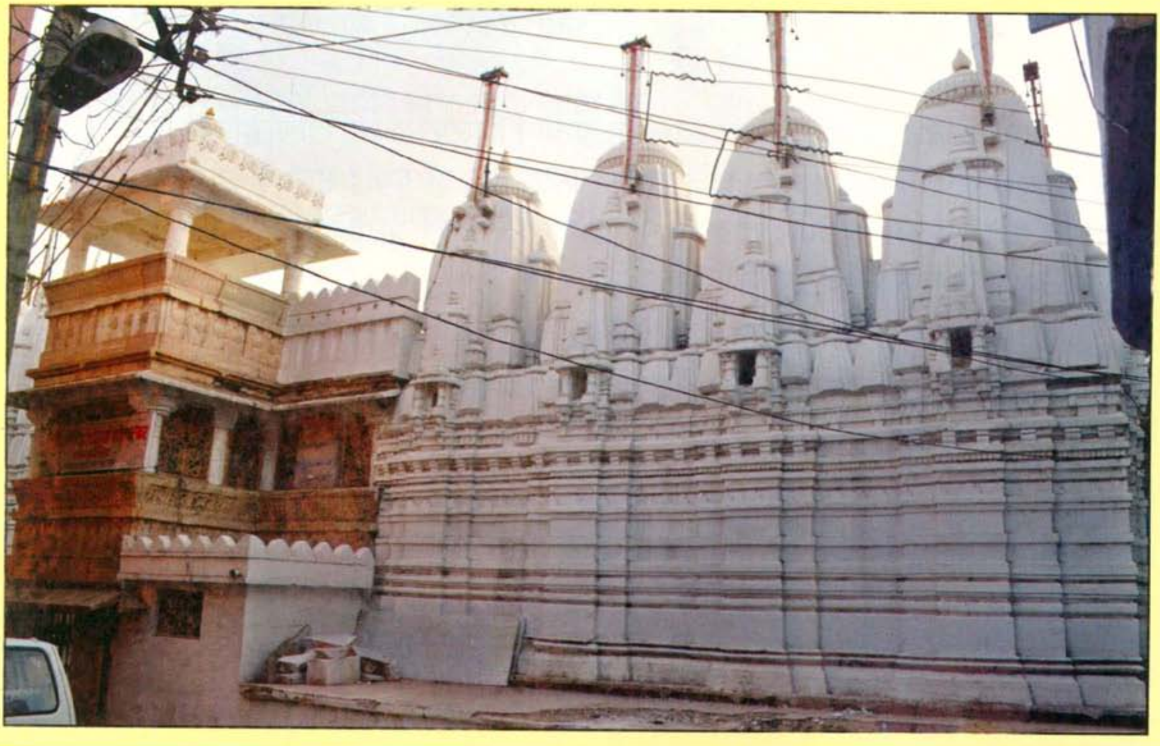

मंदिर स्वयं के देखरेख में रखा। सूत्रों के अनुसार यह भी ज्ञात हुआ कि निर्माणकर्ता की भावना, 52 देहरियों का मंदिर बनाने की थी। मूल मंदिर का निर्माण हो गया और बावन जिनालय की कुछ देहरियों की नींव भर जाने के बाद उनका देहांत हो जाने से जो नींव भरी हुई थी उन्हें इसी प्रकार सभामण्डप का निर्माण भी श्री फौजमलजी कोठारी की स्मृति में उनके परिवार के सदस्यों ने निर्माण कराया एवं पूर्ण कराया। इसलिए इसको बावन देहरी का मंदिर बोला जाता है जबकि वास्तविकता में यह बावन जिनालय नहीं है।

यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन बतलाया गया लेकिन प्रमाणित तथ्य प्राप्त नहीं हुए। यह तीर्थ चमत्कारी, प्रभावी माना जाता है। वि.सं. 2025 के लगभग पं.पू. श्री अभयसागर जी म.सा. का पधारना हुआ। उन्हें ऐसा आभास हुआ कि इस मंदिर में प्राचीन प्रतिमाए है और उस स्थान को भी चिन्हित किया जहां प्रतिमाएं थी लेकिन किसी कारणवश उन प्रतिमाओं को नहीं निकाला गया। कुछ वर्षों बाद पू.पू. श्री सूर्योदयसागर सूरीश्वर जी म.सा. इधर पधारे, उन्हें इस घटना का वर्णन किया तो उनकी निश्रा में खनन कार्य प्रारंभ किया। वहां से 16 प्रतिमाएं खण्डित व 11 प्रतिमाएं पूजित योग्य की प्राप्त हुई। इस समय महाराज सा. ने डूंगरपुर भेजने को कहा क्योंकि वहां प्रतिष्ठा कार्य होने जा रहा था, वहां पर प्रतिष्ठा हो जाएगी और प्रतिष्ठा होने के पश्चात वापस लाकर यहां (बांसवाड़ा) में विराजमान कराना था लेकिन 11 प्रतिमाएं वापस नहीं आई, वे डूंगरपुर में ही प्रतिष्ठित है यहां पर नई प्रतिमाएं विराजमान कराई।

वि.सं. 2027 में प.पू. श्री अभयसागर जी म.सा. की निश्रा में ध्वजादण्ड, कलश की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

मंदिर के प्रवेश द्वार के वहां पर स्तम्भ पर प्राचीन शिलालेख था, जीर्णोद्धार के समय उस पर मार्बल पत्थर लगा दिया गया। इस प्रकार प्राचीन प्रमाण नष्ट हो गया। सूत्रों के अनुसार सारांश यह है कि यह मंदिर कोठारी परिवार द्वारा निर्मित है और 500 वर्ष प्राचीन है लेकिन मूल प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख को देखने से भी 200 वर्ष प्राचीन मंदिर है।

जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। 52 देहरिया नहीं बन कर 24 देहरियां निर्माण कराने का प्रस्ताव है। मूल मंदिर के पीछे एक बड़ा हॉल बनवाया जा रहा हे। जो अराधना भवन के रूप में कार्य में लिया जावेगा।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1871 माघ सुदि 6 का लेख है।

(2) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1907 चैत्र सुदि 12 का लेख है। (बाएं)

(3) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1907 चैत्र शुक्ला 12 का लेख है। (दाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

(2) श्री श्रैंयांसनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 1584 चैत्र वदि 5 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(5) चार प्रतिमा कमल की पत्तियों पर व चार प्रतिमाएं चार पत्तियों पर अर्थात कमल के आठ पंखुड़ियों पर 8 प्रतिमाए विराजित है। कमल का सिंहासन 7" ऊँचा है।

(6) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर सं. 2034 का लेख है।

(7) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

(8) ताम्र यंत्र (मंत्रों से भरपूर) 15'' X 13'' का है।

दोनों ओर आलिए में – आलिओं की नाप की चतुर्विशंति स्थापित है। जो निम्न है।

(1) श्री धातु की दो चतुर्विशंति का 15'' X 13'' का है इस पर सं. 1531 का लेख है।

(2) श्री धातु की दो चतुर्विशंति का 20'' X 15'' का है। चतुर्विशंति पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर मंदिर 540 वर्ष प्राचीन होना माना जाता है।

मूल मंदिर (गभ्भारा) के बाहर :

(1) श्री पार्श्व यक्ष की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (दाए)

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

सभा मण्डप में :

सभा मण्डप में 108 पार्श्वनाथ भगवान के चित्र कांच में जड़े हुए है।

(1) श्री माणिभद्रवीर की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं) आलियें में

(2) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

धातु की प्रतिमाएं कांच की अलमारी में :

(1) एक अलमारी में 18 व दूसरी में 15 प्रतिमाएं है।

प्रवेश द्वार के ऊपर, मूल भगवान के सम्मुख एक स्तम्भ पर चार प्रतिमाए (चौमुखाजी) श्री

शांतिनाथ भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्री महावीर भगवान व श्री आदिनाथ भगवान चारों प्रतिमाए श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमाए है। इन पर सं. 2034 माघ सुदि 12 का लेख है।

प्रवेश द्धार के ऊपर व चौमुखा जी के दोनों ओर :

(1) श्री माणिभद्र वीर की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। काँच की अलमारी में है।

(2) श्री सागरानंद सूरि जी म.सा. की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

प्रवेश के समय दाई ओर देहरियों में :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(6) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(8) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।

इन सभी प्रतिमाओं पर वि.सं. 2035 वैशाख सुदि 5 का लेख है।

आगे बड़ी देहरी में :

(1) श्री ऋषभदेव भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1907 वैशाख शुक्ला 12 को लेख है इस पर धातु का अर्द्ध परिकर (भगवान के स्कंध तक) बना हुआ है (मूलनायक)

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1907 का लेख है। (दाएं)

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1907 का लेख है। (बाएं)

सिद्ध चक्र पट्ट, शत्रुंजय पट्ट बने है। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 वै.सु. 5 का लेख है। आगे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है।

प्रवेश के समय दाएं :

(1) श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा नेमिसूरि समुदाय के साधुगण द्वारा प्रतिष्ठित है।

(2) श्री कुथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(3) श्री नमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(4) श्री विमलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(5) श्री अनंतनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(6) श्री मल्लिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

(7) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1907 वैशाख सुदि 12 का लेख है।

(8) श्री दो चरण पादुका पट्ट श्वेत पाषाण का 19'' X 19'' पर जिस पर बीच में चक्र व चारों ओर कमल पुष्प उत्कीर्ण है किनारे पर वीर सं. 2027 माघ सुदि 5 पार्श्वनाथ के शुभ गणधर पादुका लेख है।

(9) श्री पुण्डरिक स्वामी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2046 का लेख है।

(10) पादुका दो 19''X11'' के पट्ट पर है पादुका चांदी का कवर बना हुआ है।
आगे कार्य चल रहा है।

मंदिर की पेढ़ी बनी हुई है। मंदिर का ट्रस्ट श्री गौड़ी पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ सुदि पंचमी को चढ़ाई जाती है।

मंदिर का उपाश्रय बना हुआ है मूल मंदिर के पीछे एक आराधना भवन का कार्य चल रहा है। देहरियों का कार्य चल रहा है कुल 24 देहरीया बनाने का प्रस्ताव है।

चरण पादुका पट्ट पर वीर सं. 2027 का लेख है अर्थात् वि.सं. 1557 का लेख है। और धातु बीसी पर भी वि.सं. 1571 का लेख है। अर्थात 500 वर्ष प्राचीन मंदिर स्पष्ट है।

मंदिर की देखरेख के लिए श्री गौड़ी पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट है -

जिसके अध्यक्ष श्री प्रदीप जी कोठारी 02962-240489, 242489, मो. 94140 01023 व नाथुसिंह जी नानावटी मंत्री है-02962-240678 द्वारा की जाती है। सामान्य देखरेख के लिए व्यवस्थापक है।

जिनके दर्शन से मिटे, जन्म-जन्म के पाप,
जिनके पूजन से कटे, भव-भव के संताप,
ऐसे श्री जिनराज को, वन्दो बारम्बार ।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (छोटा)
ओसवालवाड़ा, बांसवाड़ा

यह पाटबंद मंदिर नगर के ओसवालवाड़ा मोहल्ले में स्थित है। यह मंदिर गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर के साथ ही बना बताया गया है। इस मंदिर को श्री माणिभद्र जी का तथा इसको छोटा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर भी कहा जाता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की मय परिकर के 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1870 का लेख है।

(2) 54 प्रतिमाओं का स्तम्भ धातु का 27'' मय कलश के ऊँचा है। यह कलात्मक है (दाए)

(3) श्री माणिभद्र जी श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। यह नव फणा प्रतिमा है। दो नाग कंधे पर छूते हुए है। कुल 11 नाग है। इस पर सं. 1907 का लेख है। (बाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाए व यंत्र :

(1–2) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'' व 4'' का गोलाकार हैं।

(3) श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' X 2.5'' का है।

(4) देवी प्रतिमा 4'' की है।

श्री माणिभद्र वीर का पृथक मंदिर है। माणिभद्र की 25'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा चमत्कारी होना बताया गया है।

श्री चिंताहरण पार्श्वनाथ भगवान व श्री राजेन्द्र सूरि दादावाड़ी मंदिर, बांसवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर बांसवाड़ा नगर की नई आबादी ''पाला'' के पास स्थित है। यह मंदिर उदयपुर से 165, डूंगरपुर से 100, दाहोद से 85, रतलाम से 90 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर प.पू. आचार्य श्री विद्यानंदसूरि जी म.सा. आदि ठाणा ने बांसवाड़ा नगर के सेठिया श्रीमाल समाज को मंदिर व गुरू मंदिर निर्माण कराने की प्रेरणा दी जिससे श्री बापुलालजी सेठिया ने मंदिर कार्य के लिए कुछ भूमि भेंट की व बाद में कुछ भूमि क्रय की ।

वि.सं. 2032 में मंदिर का शिलान्यास किया। प.पू. पं. प्रवर श्री रविन्द्रविजयजी म.सा., प.पू. श्री ऋषभचंद्र विजय जी म.सा. की प्रेरणा व मार्गदर्शन में मंदिर निर्माण हुआ।

मंदिर में श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा व अन्य प्रतिमाए वि.सं. 2065 चैत्र शुक्ला 13 को प.पू. आचार्य श्री हेमेन्द्रसूरिजी की निश्रा में प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इसी दिन गुरू प्रतिमा व अन्य प्रतिमाएं भी पृथक मंदिर में स्थापित की।

दादावाड़ी परिसर में श्री चीराबावजी समरसा की छतरी सं. 1730 की बनी हुई है जो चमत्कारी है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) मूलनायक के दोनों ओर श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। (मूलनायक) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमाएं है।

बाहर सभामण्डप में :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की पीत + हरा + श्याम (पर्पल) पाषाण की प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 2065 चैत्र शुक्ला 13 का लेख है (दाएं)

बाएं

(1) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

(2) श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

बाहर सभामण्डप के दोनो ओर :

(1) श्री महावीर भगवान की पिंक पाषाण की प्रतिमा है।

(2) श्री गौतम स्वमी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

बाहर प्रवेश के समय :

दाएं :

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की प्रतिमा है

बाएं :

श्री पद्मावती देवी (चौबीस हाथ) की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

इसी परिसर में गुरू मंदिर श्री राजेन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. का है।

श्री राजेन्द्र सूरीश्वर जी श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

श्री विद्याचंद्र सूरीश्वर की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। (बाएं)

श्री धनचंद्र सूरीश्वर की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। (दाएं)

मंदिर परिसर में 7 आधुनिक कमरे की धर्मशाला है। उत्तम व्यवस्था है।

मंदिर परिसर में भोजनशाला संचालित है।

वार्षिक ध्वजा चैत्र शुक्ला 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था ट्रस्ट की ओर से श्री सतीश जी नागावत (व्यवस्थापक) व्यवस्था देखते हैं -

सम्पर्क सूत्र - 02962 - 247121

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ने कहा-
''मैं तो हमेशा जाता हूँ मन्दिरों में।
अनेक स्थानों पर प्रवचन भी किया है ।
आज भीनमाल में भी पार्श्वनाथ मन्दिर में गया।
स्तुति गाई। बहुत आनन्द आया।''

-जैन भारती दिनांक 20.7.83, तेरापंथ अंक

श्री आदिनाथ भगवान का व नवग्रह मंदिर
सूर्यानंद कॉलोनी, बांसवाड़ा

यह विशाल शिखरबंद मंदिर नगर से गढ़ी परतापुर सड़क मार्ग के बाईं ओर सूर्यानंद कॉलोनी में स्थित है। इस कॉलोनी में 60 आवासीय भूखण्ड है। इन साठ ही सदस्यों ने मिलकर मंदिर की भूमि क्रय कर मंदिर को 44100 वर्ग फीट भूमि भेंट की।

इसी भूमि पर मंदिर व उपाश्रय का निर्माण कराया। मूल आदिनाथ मंदिर व सभा-मण्डप में 9 ग्रह की मुर्तियां स्थापित है। इसलिए इसको नवग्रह मंदिर भी कहते हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 35'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं) लेख ''वासुपूज्य'' का है।

(3) श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्याम पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इन सभी प्रतिमाओं पर वि. सं. 2062 फाल्गुन सुदि 3 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(2–3) श्री जिनेश्वर भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमाएं है।

(4–5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार है।

(6) श्री अष्टमंगल यंत्र है।

(7) नवकार मंत्र का पट्ट छोटा है।

मूल मंदिर के बाहर आलिओं में :

(1) श्री पद्प्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर सभा मण्डप में

दाएं :

(1) श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 67'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है।

(2) श्री सुविधिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

बाएं :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 59'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

पृथक देहरी में – प्रवेश के समय बाएं सभामण्डप के बाहर :

(1) श्री पुण्डरिक स्वामी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (मूलनायक)

(2) श्री आनंदसागर सूरि जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री अभय सागर जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(4) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री सूर्योदय सागर सूरि म.सा. की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है।

पृथक देहरी में – प्रवेश के समय दाएं : सभामण्डल के बाहर :

(1) श्री माणिभद्रवीर की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री क्षेत्रपाल वीर की श्याम पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री महालक्ष्मी देवी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(5) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

उक्त सभी प्रतिमाएं वि.सं. 2062 फाल्गुन सुदि 3 की प्रतिष्ठित है। इन सभी प्रतिमाओं की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पं.पू. सूर्योदय सागर जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन सुदि 3 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर के साथ उपाश्रय व भूमि है। मंदिर के साथ खाली कृषि भूमि है वहां पर प्रवचन हॉल, उपाश्रय, धर्मशाला, भोजनशाला आदि बनाने का प्रस्ताव है ।

मंदिर का ट्रस्ट बना हुआ है। निम्न पदाधिकारी मंदिर की देखरेख करते हैं,

श्री जगत सिंह जी चेलावत – 09413282858, श्री नरेश जी चोरड़िया – 09414101161

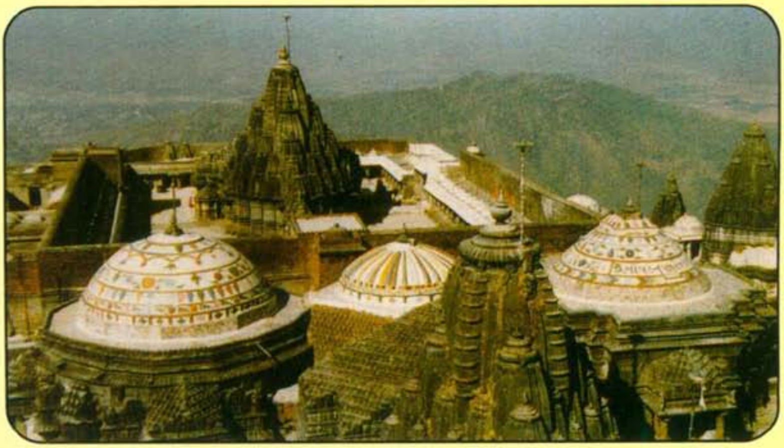

श्री गिरनारजी तीर्थ

श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर दानपुर

यह शिखरबंद मंदिर बांसवाड़ा जिला मुख्यालय से 35 किलोमीटर व रतलाम से 60 किलोमीटर दूर बांसवाड़ा-रतलाम सड़क मार्ग पर सड़क के किनारे स्थित है। 35 किलोमीटर के क्षेत्र में साधु-साध्वी के विश्राम के लिए कोई स्थान नहीं है। संभवतया सन् 1985 में साध्वी श्री निगुणा श्री जी विहार करते हुए यहां आए उन्होंने मोहनलालजी, मोतीलालजी जैन को उपदेश व प्रेरणा दी कि यहां पर एक छोटा उपाश्रय होना चाहिए। इस प्रेरणा से जैन

बंधु ने उपाश्रय के लिए 30''x100'' वर्गफीट भूमि दान में समाज को सुपुर्द की। धीरे-धीरे मंदिर निर्माण करने की भावना जागृत हुई तो उन्होंने 70''x 100'' वर्गफीट भूमि अतिरिक्त दी, इसके अतिरिक्त भूमि के लिए प. पू. नित्यावर्धन सागर जी म.सा. की प्रेरणा भी रही। भूमि प्राप्त होने, निर्माण कार्य प्रारम्भ होकर मंदिर तैयार हो गया। इसके बाद 80''x 100'' वर्गफीट भूमि ट्रस्ट ने क्रय कर ली और मंदिर की प्रतिष्ठा संवत् 2050 में सम्पन्न हुई। अतः मंदिर 20 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 41'' ऊँची (नाग तक) प्रतिमा है। (मूलनायक)

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 12'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(4) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' गोलाकार है।

(5) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

बाहर (सभामण्डप में) :

(1) श्री पार्श्वयक्ष की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री माणिभद्रवीर की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है।

बाएं :

(1) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री चक्रेश्वरी देवी श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

पृथक से गुरू मंदिर बना हुआ है जिसमें निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री सुधर्मास्वामी की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।

इस गुरू मूर्ति के दोनों ओर गोलाकार चार पट्ट बने हुए है। उन पर श्री सागरानंदसूरि जी, आनंदसागर जी, देवेन्द्र सागरजी, चंद्रसागर जी म.सा. के चरण–पादुका स्थापित है।

गुरू प्रतिमा के नीचे की ओर :

श्री नित्यवर्धनसागर जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर के मूल प्रवेश द्वार के सामने एक कमरा है। जहां श्री महावीर भगवान की 27 भव के चित्र बने हुए है। जो देखने योग्य है।

इस मंदिर के साथ उपाश्रय व कमरे बने हुए है। 80'' X 100'' वर्गफीट जो ट्रस्ट के पास है। वहां धर्मशाला, भोजनशाला निर्माण करने का प्रस्ताव है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 13 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री मनिष जी जैन (9413625859) एवं श्री पाल जी सुराणा (946157669) करते हैं

नोट : मंदिर की प्रतिष्ठा सन् 1994 अर्थात् वि.सं. 2050 माघ सुदि 13 को सम्पन्न हुई।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर कुशलगढ़

यह शिखरबंद मंदिर गुजरात व मध्यप्रदेश की सीमा पर बांसवाड़ा मुख्यालय से 60 किलोमीटर दूर नगर के मध्य में स्थित है। यहां सकल जैन समाज (श्वेताम्बर, दिगम्बर) के 400 घर है। लेकिन किसी भी समाज का कोई भी कार्यक्रम हो सामूहिक रूप से भाग लेते है, अनुकरणीय है।

श्रुत कथा (दंत कथा) के अनुसार जैन मंदिर व एक शिव मंदिर आकाश से उड़ते हुए अन्यत्र जा रहे थे, उनको प्रबल प्रभावी लोकागच्छाधिपति श्री नरपतिचंद्र (यतिवर्य) ने अपनी योग साधना व मंत्रबल से दोनों मंदिर को इस नगर में स्थापित किए। शिव मंदिर भी विद्यमान है।

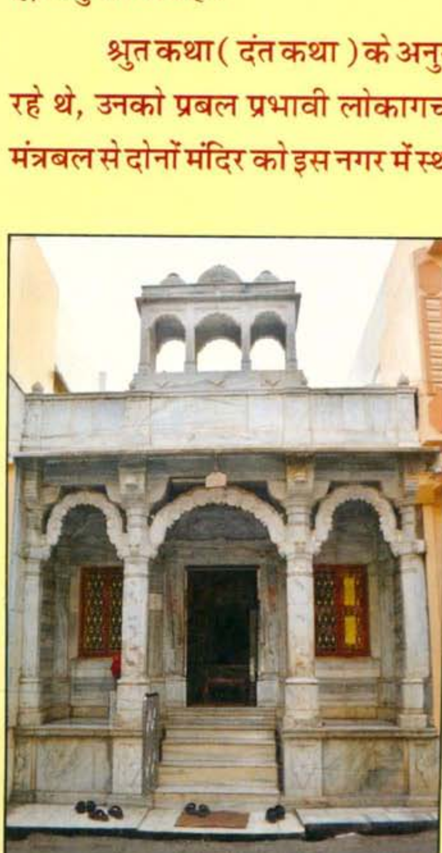

मंदिर में स्थापित प्रतिमा को खरतरगच्छीय आचार्य श्री संभवसूरिजी म.सा. की निश्रा में श्री ठाकुर जालमसिंह के राज्यकाल में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर के रख-रखाव व पूजा आदि के लिए ठाकुर सा. की ओर से सहयोग दिया जाता था और इसके साथ-साथ 17 बीघा जमीन भी यति जी को भेंट की। यति जी ने अपने अंतिम समय में यह जमीन मंदिर को समर्पित कर दी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाए स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1852 शाके 1717 का लेख है। (मूलनायक)

(2)श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2006 का लेख है। (दाएं)

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2006 का लेख है। (बाएं)

(1) श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा श्री संभवसूरिजी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित है।

(2–3) अन्य दोनों प्रतिमाएं श्री यतिन्द्र सूरि जी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित होने का उल्लेख है।

दोनों ओर आलिओ में :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। प्रतिमा पर कोई लांछण नहीं है, बोलचाल में श्री चंद्रप्रभ भगवान कहते है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री संभवनाथ भगवान की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1697 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1622 का लेख है।

(4) श्री जिनशेवर भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1539 का लेख है।

(5) श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1519 का लेख है।

(6) श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' X 5'' का है। इस पर सं. 1785 माघ वदि 5 का लेख है।

(7) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' X 4'' का है।

(8) ताम्रपत्र यंत्र 4'' X 4'' का है।

(9) ताम्रपत्र त्रिकोण यंत्र 3'' ऊँचा है।

(10) वासुपूज्य की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

(11) सिंहासन 7.6'' ऊँचे पर चौमुखाजी प्रतिमा है।

(12) श्री सिद्धचक्र यंत्र चांदी का 3.5'' गोलाकार है।

(13) अष्टमंगल यंत्र 5'' X 2.5'' का है।

मूल मंदिर के बाहर दोनों आलिए में :

(1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

सभामण्डप में :

(1) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री सुधर्मास्वामी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

सभामण्डप के बाहर

(1) श्री माणिभद्र वीर की प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री भैरव की प्रतिमा है। (बाएं)

इनकी प्रतिष्ठा 5 मार्च, 2014 को प्रतिष्ठित है।

तीन बार जीर्णोद्धार हो चुका है।

उपाश्रय है, जमीन है जिसमें मंदिर के साथ जुड़ा हुआ गुरू मंदिर, श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा. की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है। बहुत बड़ा हॉल है। दीवार पर सिद्धचक्र यंत्र पावापुरी का पट्ट लगा है।

नोट : यतिश्री नरपतचन्द्रसूरि म.सा. जी चरण पादुका श्वेत पाषाण की एक कलात्मक छतरी में उनके शिष्य श्री मणिक्यचंद्र विजय जी म.सा. ने वि.सं. 1985 में प्रतिष्ठा कराई।

मंदिर के चारों ओर पक्की दीवार बनी हुई है।

वि.सं. 2050 में पं.पू. श्री जयंत सेन सूरिश्वर जी म.सा. मूलनायक व अन्य प्रतिमाओं का उत्थापित कर पुनः विराजमान कराई जो मेरी दृष्टि से उचित नहीं था।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

उपाश्रय व भूमि है । मंदिर के कुछ दूरी पर चौक में तीन मंजिला भवन ''जयंत विहार'' बनाया हुआ है जिसे मांगलिक कार्य के उपयोग में लिया जाता है।

यहां पर साधु–साध्वी के नियमित चतुर्मास होते रहते है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री कमलेश जी कावड़िया (09413625065) व श्री चंद्रकांत जी महता 09462 33031 करते है।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर तलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय प.पू. आचार्यश्री विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.एवं जयन्तसेनसूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा से जिनालय के गर्भगृह का निर्माण वि.सं. 2053 में करवाया एवं प.पू.पं. प्रवर श्री नित्यवर्द्धनसागरजी म.सा. की प्रेरणा से दिनांक 15.2.2003 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

यह नूतन मंदिर है। मंदिर की भूमि गांधी परिवार की तीन भाईयों ने मिलकर समाज को सुपुर्द की।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। (मूलनायक)

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाए व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 19'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 2504 का लेख है।

(2) श्री अभिनंदन भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर 2041 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर

वि.सं. 2504 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र मय स्टेण्ड के 7'' ऊँचा है।

(6) श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' का गोलाकार है। इस पर वि.सं. 2504 का लेख है।

(7) अष्ट मंगल यंत्र 6'' X 3'' का है। इस पर वीर सं. 2504 का लेख है।

(8) श्री नवकार मंत्र का पतरा 2.5'' का है।

मूल मंदिर के बाहर दोनो ओर आलिओं में :

(1) श्री गरूड़ यक्ष की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री निर्वाणी यक्षिणी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

सभामण्डप में :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। देवी के 16 हाथ है।

दीवार पर शत्रुंजय व सम्मेत शिखर जी के के पट्ट है।

उक्त सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा वि.सं. 2037 में कराई गई थी

मंदिर की वार्षिक ध्वजा सूत्रों के अनुसार ज्येष्ठ सुदि 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर के साथ उपाश्रय है। इसके अतिरिक्त भोजनशाला व नोहरा है।

मंदिर की देखरेख श्री रूपलालजी गाँधी - 09928889208

श्री अनोखीलालजी गाँधी - 09461574027

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, घाटोल

यह शिखरबंद मंदिर बांसवाड़ा जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर प्रतापगढ़ सड़क मार्ग बस स्टेण्ड के पास स्थित है।

इस ओर विहार करते हुए साधु-साध्वी के ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं था और उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। इन कठिनाइयों के कारण श्री नानालाल जी सेठिया की इच्छा थी कि वे एक उपाश्रय बनावे। इसलिए 20'' x 20'' का भूखण्ड भेंट में दिया। पंचो के आग्रह व पं.पू. गुणरत्नसागर जी म.सा. की प्रेरणा से 90'' x 55'' का भूखण्ड श्री नानालाल जी सेठिया द्वारा दिया गया जिसमें मंदिर व उपाश्रय बनाया। उपाश्रय में 1 बड़ा हॉल व पांच कमरे है। यह उपाश्रय मंदिर के पीछे ही बना है।

मंदिर निर्माण के लिए श्री मोहनलालजी, कन्हैयालालजी, करणमलजी सेठिया (लाखनीवाला) द्वारा सहयोग दिया। यह कार्य श्री भभूतमल जी सिंघवी के मार्गदर्शन में हुआ। श्री

सिंघवी जी वर्तमान में श्री शोभागचन्द्र सागर जी महाराज है। इनके सहयोग व प्रेरणा से मंदिर का निर्माण वि.सं. 2057 में हुआ। इसमें विराजित प्रतिमाएं की वि.सं. 2062 में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

(1) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23" ऊँची प्रतिमा है। (मूलनायक)

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

इन प्रतिमाओं की अंजनश्लाका माण्डवगढ़ में सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा वि.सं. 2062 में श्री सूर्योदय सागर जी म.सा. द्वारा घाटोल में सम्पन्न हुआ।

उत्थापित धातु की प्रतिमाए व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 11" ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1512 फाल्गुन सुदि 12 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 8" ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

(3) श्री बीस स्थानक यंत्र 9" का है।

(4 एवं 5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4" व 4.5" वेदी का है। रेती की दीवार के बीच परसादी देवी की प्रतिमा है।

मूल मंदिर के बाहर आलिओं में :

(1) श्री धरणेन्द्र देव की श्याम पाषाण की 12" ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 12" ऊँची प्रतिमा है।

रंगमण्डप में :

(1) श्री संभवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

(2) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री माणिभद्र वीर की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

बाहर :

(1) श्री आनंद सागर जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री माणिभद्र वीर की श्वेत पाषाण की 19" ऊँची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा चैत्र सुदि 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से निम्न सदस्य करते है।

(1) श्री मोहनलाल जी सेठिया - 02961 - 2135305

(2) श्री महावीर जी सेठिया - 09928455624

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मोटा गांव

यह शिखरबंद मंदिर पूर्व में पाटबंद था । जीर्णोद्धार के पश्चात् वि. सं. 2016 में आषाढ़ सुदि 14 को आचार्यश्री प्रकाशचंद्र सूरि जी म.सा. की निश्रा में शिखरबंद बना। सूत्रों के अनुसार यह मंदिर श्री कालूसिंह जी कोठारी परिवार द्वारा वि.सं. 1656 में ठाकुर श्री केशवदास चौहान व श्री सबलसिंह के शासनकाल में निर्मित होकर 500 वर्ष प्राचीन बताया।

पूर्व में इस गांव का नाम ''मोला'' था बाद में मोटा गांव कहलाने लगा। मंदिर का नाम पूर्व में गौड़ी पार्श्वनाथ था, वर्तमान में शंखेश्वर पार्श्वनाथ का मंदिर है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची (परिकर तक) प्रतिमा है। इस पर सं. 1946 का लेख है।

(2) श्री चंद्रप्रभु भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर .... श्रावण सुद .... पढ़ने में आता है। (दाएं)

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची (दाएँ)

(4) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(5) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर श्री नेमिसूरि जी समुदाय द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है। (बाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाए व यंत्र :

(1–2) श्री जिनेश्वर भगवान की 13'', 13'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमाएं है।

(3–4) श्री जिनेश्वर भगवान 9'' व 7'8 ऊँची प्रतिमा है।

(5–6) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' व 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमाएं है।

(7) श्री बीस स्थानक यंत्र गोलाकार 11' का है।

(8) श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' गोलाकार है।

(9) श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' X 3.5'' का है।

मूल मंदिर (गम्भारा) में रजत स्वर्ण का कार्य किया हुआ है।

रंगमण्डप में :

(1) श्री माणिभद्र वीर की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 कार्तिक सुदि 3 का लेख है। (दाएं)

(2) श्री आनंदसागर जी महाराज सा. की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा सं. 02 / 10 / 1992 वि.सं. 2048 को सम्पन्न हुई (दाएं)

(3) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा 02 / 03 / 2006 को सम्पन्न हुई। (दाएं)

बाहर (सभामण्डप में) :

(1) श्री पार्श्व यक्ष की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री वृहद् शांति यंत्र 13'' X 9'' ताम्रपत्र पर बना हुआ है।

बाहर वीर सं. 2486 का शिलालेख है।

मंदिर के साथ उपाश्रय है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख वदि 7 को चढ़ाई जाती है।

बाहर आलिओं में :

(1) श्री क्षेत्रपाल जी व

(2) श्री पार्श्वयक्ष श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा 02.03.2006 को सम्पन्न हुई।

विशेषता :

मंदिर के साथ ज्ञान मंदिर (भण्डार) सन् 1992 में बना हुआ है। इसका निर्माण आचार्य देव श्री सूर्योदयसागर सूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से 18 लाख में पूर्ण हुआ जिसमें करीब 20000 पुस्तकें व हस्तलिखित ग्रंथ है। इस निर्माण कार्य में इंजीनियर श्री डी.के. जैन, उदयपुर (गिरनार कन्स्ट्रक्शन) सुभाषनगर ने निःशुल्क सेवा प्रदान की। अनुमोदना

इस ग्राम की बालिका सुश्री मीनाक्षी ने भगवती दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान में उनका नाम साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी है।

इस मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर संघ, मोटागांव की ओर से

श्री महेश जी कोठारी - 08107197236 व श्री देवेन्द्र जी कोठारी - 08890180118 करते हैं।

श्री नन्दीश्वरजी तीर्थ

संदर्भित पुस्तकों की सूची

1. डूंगरपुर राज्य का इतिहास - श्री गौरीशंकर ओझा
2. बांसवाड़ा राज्य का इतिहास - श्री गौरीशंकर ओझा
3. जैन तीर्थ - श्री जैन प्रार्थना मंदिर ट्रस्ट, चैन्नई
4. जैन तीर्थ संग्रह - सेठ आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी, अहमदाबाद (प्रकाशक)
5. श्री वागड़ वीशा पोरवाल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ पारिवारिक निर्देशिका - श्री वागड़ वीशा पोरवाल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ (प्रकाशक)
6. पधारो म्हारे देश - श्री कमलकुमार उज्जैन (प्रकाशक)
7. हमारा कर्तव्य और जिन गुण स्तवनावली - तारावत चम्पालालजी निहालचंदजी
8. श्री जयंतिलालजी महता द्वारा संकलित सामग्री

गेपसागर, डूंगरपुर

पद्मावती देवी

श्री नाकोड़ा भैरव

जो सुख चाहो जगत में, स्वर्ग मोक्ष का धाम।
जिन पूजो निज द्रव्य से, यही सयानो काम ।।

भावी चौबीसी तीर्थंकरों

क्र.सं.	भावी तीर्थंकरो के नाम	किसका जीव	जीव कहां से आया	लांछन	काया (शरीर की ऊंचाई)
1.	श्री पद्मनाभजी	श्रेणिकराजा	नरक	सिंह	7 हाथ
2	श्री सूरदेवजी	महावीरजी के काका	स्वर्ग	सर्प	9 हाथ
3.	श्री सुपार्श्वजी	कोणिक पुत्र उदय	स्वर्ग	शंख	10 धनुष
4.	श्री स्वयंप्रभजी	पोटिल राजा	स्वर्ग	नीलकमल	15 धनुष
5.	श्री सर्वानुभूतिजी	मल्ली, काका	स्वर्ग	कछुआ	20 धनुष
6.	श्री देवश्रूतजी	कार्तिक सेठ	स्वर्ग	कलश	25 धनुष
7.	श्री उदयजी	शंख श्रावक	स्वर्ग	नन्दावर्त	30 धनुष
8.	श्री पोढलजी	अगत मूनि (आ)	स्वर्ग	बकरा	35 धनुष
9.	श्री पोटिल जी	सुनन्द मुनि	स्वर्ग	मृग	40 धनुष
10.	श्री सतकिर्तिजी	शतक श्रावक	स्वर्ग	वज्र	45 धनुष
11.	श्री सुव्रतजी	कृष्णमाता देवकी	नरक	बाज	50 धनुष
12.	श्री अममजी	कृष्ण वासूदेव	नरक	सुअर	60 धनुष
13.	श्री निष्कषायजी	सत्यकी विद्याधर	नरक	महिष	70 धनुष
14.	श्री निष्पूलाकजी	बलदेव कृ. भाई	स्वर्ग	गेंडा	80 धनुष
15.	श्री निर्मल जी	सुलसा श्राविका	स्वर्ग	श्रीवत्स	90 धनुष
16.	श्री चित्रगुप्तजी	रोहिणी बलदेव की माँ	स्वर्ग	मगर	100 धनुष
17.	श्री समाधिजी	रेवती श्राविका	स्वर्ग	चन्द्रमा	150 धनुष
18.	श्री सम्वरजी	शतानिक	स्वर्ग	स्वास्तिक	200 धनुष
19.	श्री यशोधरजी	द्वैपायन	स्वर्ग	कमल	250 धनुष
20.	श्री विजयजी	कर्ण	स्वर्ग	कोंच (पक्षी)	300 धनुष
21.	श्री मल्लजी	नारद	स्वग्र	बन्दर	350 धनुष
22.	श्री श्री देवजी	अम्बड श्रावक	स्वर्ग	अश्व	400 धनुष
23.	श्री अनन्तविर्यजी	अमर	स्वर्ग	हाथी	450 धनुष
24.	श्री भद्रकृतजी	सतबुद्धि	स्वर्ग	वृषभ	500 धनुष

की संक्षिप्त जानकारी

वर्ण	आयु	च्यवन	जन्म	दीक्षा	केवल	मोक्ष
स्वर्ण	72 वर्ष	आ.शु. 6	चैत्र.शु. 13	मि.कृ. 11	वै.शु. 10	का.कृ. 30
नीला	100 वर्ष	चै. कृ. 4	पो.कृ. 10	पो.कृ. 11	चै.कृ. 4	श्रा.शु. 8
श्याम	100 वर्ष	का.कृ. 12	श्रा.शु. 5	श्रा.शु 6	आ.कृ.30	अ.शु. 8
स्वर्ण	10000वर्ष	आ.शु. 15	श्रा.कृ 8	अ.कृ 9	मि.शु. 11	वै.कृ.10
श्याम	30000 वर्ष	श्रा.शु. 15	जे.कृ. 8	का.शु. 12	फा.कृ.12	ज्ये.कृ.19
नीला	55000 वर्ष	फा.शु. 4	मि.शु. 11	मि.सुद 11	म.शु 11	फा.शु. 12
स्वर्ण	84000 वर्ष	फा.शु 2	मि.शु 10	मि.शु. 11	का.शु. 12	मि.शु. 10
स्वर्ण	95000 वर्ष	श्रा. कृ. 9	वै.कृ. 14	वै.कृ. 5	चै.शु. 3	वै.कृ.1
स्वर्ण	1 लाख वर्ष	भा.कृ. 7	जे.कृ. 13	ज्ये.कृ. 14	पो.शु. 9	जे.कृ.13
स्वर्ण	60 लाख वर्ष	वै.शु. 7	मा.शु. 3	पो.शु. 13	पो.शु.15	जे.शु. 5
स्वर्ण	30 लाख वर्ष	श्रा.कृ. 7	चै.कृ. 13	चै.कृ 13	चै.कृ. 14	चै.कृ. 5
स्वर्ण	60 लाख वर्ष	वै.शु. 12	मा.शु. 4	मा.शु. 4	पो.शु. 6	अ.कृ. 7
लाल	72 लाख वर्ष	जे.शु. 9	फा.कृ. 14	फा.कृ. 15	मा.शु. 2	आ.शु. 14
स्वर्ण	84 लाख वर्ष	जे.कृ. 6	फा.कृ. 123	फा.कृ. 13	मा.कृ. 30	वै.कृ. 3
स्वर्ण	1 लाख वर्ष	जे.कृ. 6	मा.कृ. 12	भा. कृ. 12	पो.सु.14	वै.शु. 2
श्वेत	2 लाख पूर्व	वै. कृ. 6	वै.कृ. 5	मि.कृ. 6	का.शु. 3	वै.कृ. 2
श्वेत	10 लाख पूर्व	चैत्र कृ. 5	पो. कृ. 12	पो. कृ. 13	फा.सु. 7	भा.कृ. 7
स्वर्ण	20 लाख पूर्व	आ.कृ. 8	जे.शु. 12	ज्ये.शु. 13	फा.कृ. 6	फा.कृ. 7
लाल	30 लाख पूर्व	मा.कृ. 6	का.कृ. 12	का.कृ. 13	चै.शू. 15	मि.कृ.11
स्वर्ण	40 लाख पूर्व	श्रा.कृ.2	वै.शु.8	वै.शु. 9	चै.शू.11	चै.शु. 9
स्वर्ण	50 लाख पूर्व	वै.शु. 4	मा.शू. 11	मा.शु. 12	पो.शु. 14	वै.शु. 8
स्वर्ण	60 ला.पू.	फा.शु. 8	म.शु.14	मा.शु. 5	का.कृ. 5	चै.शु. 5
स्वर्ण	72 ला.पू.	वै.शु. 13	मा.शु. 8	मा.शु. 9	पो.शु. 11	चै.शु. 5
स्वर्ण	84 ला.पू.	अ.कृ. 4	चै.कृ. 8	चै.कृ. 8	फा.कृ. 11	मा.कृ.13

केवली के वचन सौ टंच का सोना छद्मस्थ के वचन में भूल की सम्भावना छद्मस्थ में मत मतान्तर हो सकता है केवली में नहीं ।

महापुरूषों का नाम

नम्बर	चक्रवृति	वासूदेव	बलदेव	प्रतिवासुदेव
1	भरत	नंदी	जयन्त	तिलक
2	दोगेद	नंदीमित्र	विजय	लोहजंध
3	गुड़दत	सून्दरबाहू.	भद्र.	व्रजजंघ
4	सुहदाय	महा बाहू.	सुप्रभ.	केसरी
5	श्रीचन्द्र	अति बल.	सूदर्शन	प्रहरक
6	श्री भूति	महाबल.	आनन्द	अपराजित
7	सोमचन्द्र	भद्र.	नन्दन	भीम
8	पदम	द्विपृष्ठ	पद्म	महायोग
9	महापदम	त्रिपृष्ठ	संकषर्ण	सुप्रिय
10	विमल			
11	विपलवा			
12	कमल			

काल

नं.	अवसर्पिणी काल	10 कोटा कोटी सागरोपम
1.	सूषम सूषमा	4 कोटा कोटी सागरोपम
2.	सूषमा	3 कोटा कोटी सागरोपम
3.	सूषम दूषम	2 कोटा कोटी सागरोपम
4.	दूषम सूषमा	1 कोटा कोटी सागरोपम
5.	दूषमा	21000 हजार वर्ष / 42000 वर्ष से कम
6.	दूषम दूषमा	21000 हजार वर्ष का
	उत्त्सर्पिणी काल दश कोटा कोटी सागरोपम	
1.	दूषम दूषमा	21000 हजार वर्ष का
2.	दूषमा	21000 हजार वर्ष का 42000 हजार वर्ष कम
3.	दूषम सूषमा	1 कोटा कोटी सागरोपम में
4.	सूषम दूषमा	2 कोटा कोटी सागरोपम
5.	सूषमा	3 कोटा कोटी सागरोपम
6.	सूषम सूषमा	4 कोटा कोटी सागरोपम

श्री नेमीनाथ मंदिर, सागवाड़ा रोड, डूंगरपुर

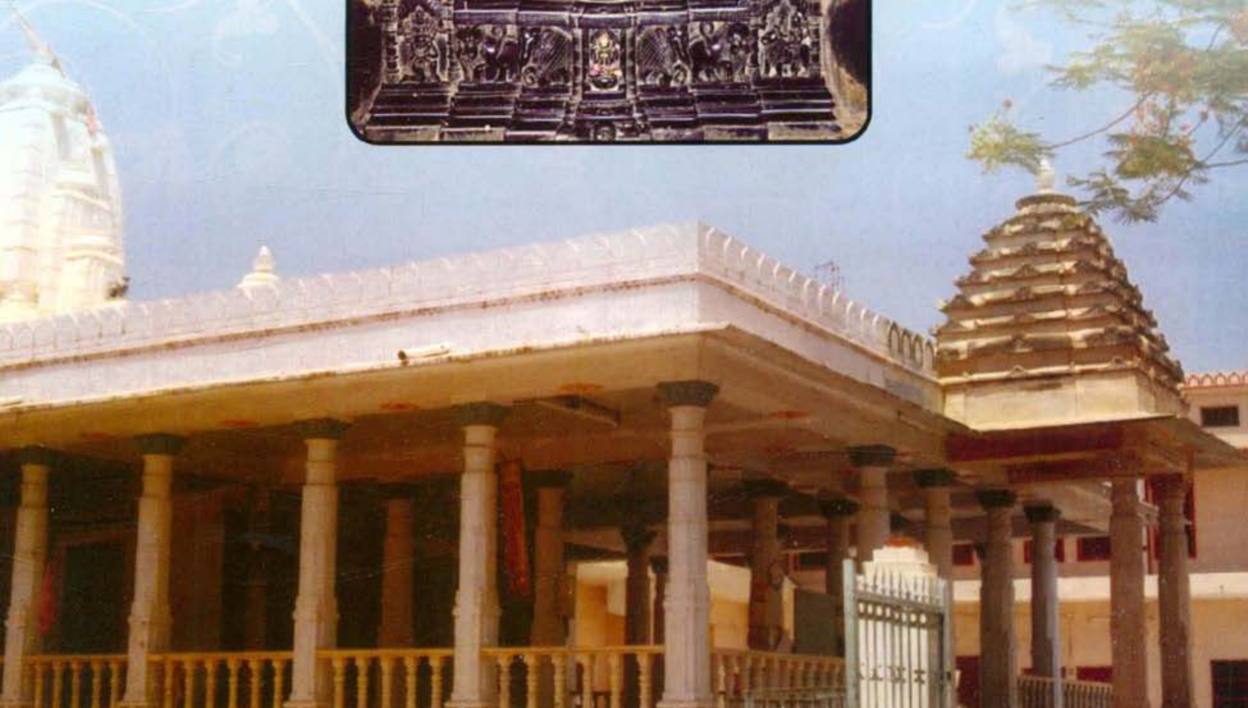

सौजन्य : श्री नेमीनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट (श्री जैन श्वेताम्बर बीसा पोरवाड़ संघ), डूंगरपुर

श्री कसोटी पार्श्वनाथ भगवान मंदिर
जगदीश रोड़, उदयपुर